फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 76 संख्याः 5 प्रभात जयपुर, मंगलवार 5 अगस्त, 2025 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

ARBiT

The Fight Between Thailand and Cambodia...

But what makes the current flare-up most bamboozling is that it pits two of Southeast Asia's most formidable and, until recently, closest aligned families against each other

"Dishom Guru" Has Left

"So You Want to Be a Writer"

'ओम बिड़ला के ओ.एस.डी. राजीव दत्ता पर लगे मानव तस्करी के आरोपों की जाँच गंभीरता और तीव्रता से करें'

राजस्थान हाई कोर्ट ने निर्देश दिया कि इस मामले में दायर एफ.आई.आर. तथा परिवादों की जाँच ए.डी.जी. (अपराध) दिनेश एम.एन. के निरीक्षण में की जाए

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

■ अदालत ने अपने आदेश में याचिकाकर्ताओं को कानूनी सुरक्षा देते हुए कहा कि इनके खिलाफ पुलिस प्रशासन बलपूर्वक या दण्डात्मक कार्यवाही नहीं कर सकता, जैसे कि उनकी गिरफ्तारी करना इत्यादि, जब तक अदालत ऐसी कार्यवाही करने की अनुमति नहीं देती या याचिकाकर्ता जाँच में सहयोग नहीं करते।

■ याचिकाकर्ताओं की ओर से अदालत में कहा गया कि अजमेर, पाली, बूंदी और कोटा में इस मामले से जुड़ी एफ.आई.आर. व परिवाद दायर किया है, परन्तु कोटा में राजनैतिक दबाव के चलते उनकी एफ.आई.आर. दर्ज नहीं की गई।

■ याचिकाकर्ता का कहना है कि कोटा से जयपुर के रास्ते में उनके साथ अंजान व्यक्ति ने मारपीट भी की, जिसकी भी पुलिस ने एफ.आई.आर. दर्ज नहीं की।

नई दिल्ली, 4, अगस्त। राजस्थान हाईकोर्ट ने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला के ओएसडी राजीव दत्ता के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने का आदेश दिया है। अदालत के निर्देशानुसार एफआईआर दर्ज कर ली गई है।

जयपुर राजस्थान उच्च न्यायालय बैंच ने कहा कि लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला के ओएसडी राजीव दत्ता, अर्चना झाला, दिनेश मुरझानी व वंदिता राणा पुलिस अधीक्षक अजमेर के विरुद्ध अजमेर मजिस्ट्रेट कोर्ट में पेंडिंग मानव तस्करी की शिकायत का अनुसंधान एडीजी क्राइम दिनेश एम.एन. करेंगे एवं याचिकाकर्ता एडवोकेट शेखर मेवाड़ा के विरुद्ध दर्ज एफआईआर का अनुसंधान भी एडीजी क्राइम दिनेश एमएन ही करेंगे।

याचिकाकर्ताओं की ओर से अदालत में कहा गया कि अजमेर, पाली, बूंदी और कोटा में इस मामले से जुड़ी एफ.आई.आर. व परिवाद दायर की है, परन्तु कोटा में राजनैतिक दबाव के चलते उनकी एफ.आई.आर. दर्ज नहीं की गई। याचिकाकर्ता का कहना है कि कोटा से जयपुर के रास्ते में उनके साथ अंजान व्यक्ति ने मारपीट भी की, जिसकी भी पुलिस ने एफ.आई.आर. दर्ज नहीं की।

अधिवक्ता शेखर मेवाड़ा पर बूंदी में हुए कातिलाना हमले की एफआईआर दर्ज करने के निर्देश दिए एवं याचिकाकर्ताओं के खिलाफ सभी प्रकार की कानूनी कार्यवाहियों पर रोक लगा दी गई। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला के ओएसडी राजीव दत्ता एवं रविंदर गौड़ (आईजी कोटा), गंगा सहाय (डिप्टी एसपी कोटा सिटी), राजेन्द्र कुमार मीणा (एसपी बूंदी), रमेश आर्य (एसएचओ सदर बूंदी), सुनील खटाना व अन्य लोगों के विरुद्ध एफआईआर दर्ज कर कार्यवाही करने का आदेश दिया।

निम्न याचिकाओं की तरफ से अधिवक्ता राजस्थान उच्च न्यायालय बार एसोसिएशन के अध्यक्ष महेन्द्र शांडिल्य ने न्यायालय को बताया कि ऊपर बताए गए व्यक्तियों के खिलाफ मानव तस्करी में परिवाद अनुसंधान में लंबित है तथा उच्च न्यायालय ने एफआईआर दर्ज करने के आदेश दिए हैं।

अदालत के आदेश के अनुसार, "पक्षकारों के अधिवक्ताओं की दलीलें सुनने के बाद, न्यायालय में उपस्थित अधिकारी (दिनेश एम.एन.) द्वारा दी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

स्कूल इमारतों की बदहाल स्थिति पर सरकार दो सप्ताह में जवाब दे

जयपुर, 4 अगस्त। राजस्थान हाईकोर्ट ने प्रदेश की स्कूलों की इमारतों की बदहाल स्थिति और उनमें संसाधनों के अभाव से जुड़े मामले में केंद्र और राज्य सरकार को जवाब पेश करने के लिए दो सप्ताह का समय दिया है। जस्टिस महेन्द्र गोयल और जस्टिस अशोक कुमार जैन की खंडपीठ ने यह आदेश प्रकरण में लिए गए स्वप्रेरित प्रसंज्ञान पर सुनवाई करते हुए दिए।

सुनवाई के दौरान केंद्र और राज्य सरकार की ओर से महाधिवक्ता सहित अन्य वकील पेश हुए। उन्होंने अदालत

■ हाई कोर्ट ने प्रकरण के स्वप्रेरित प्रसंज्ञान की सुनवाई 18 अगस्त को तय की।

से मामले में जवाब पेश करने के लिए समय मांगा। इस पर अदालत ने उन्हें दो सप्ताह का समय देते हुए प्रकरण की सुनवाई 18 अगस्त को तय की है।

गौरतलब है कि हाईकोर्ट की एकलपीठ ने गत 28 जुलाई को प्रदेश की सरकारी स्कूलों के जर्जर भवनों सहित उनमें संसाधनों की कमी को लेकर स्वप्रेरणा से प्रसंज्ञान लिया था। इसके साथ ही अदालत ने मामले में शिक्षा मंत्रालय, बाल विकास मंत्रालय, मुख्य सचिव, एसीएस शिक्षा, प्रमुख बाल कल्याण सचिव और राष्ट्रीय बाल आयोग को नोटिस जारी कर जवाब तलब किया था। वहीं दूसरी ओर हाईकोर्ट की एक अन्य एकलपीठ ने स्कूल भवनों के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कश्मीर को फिर से राज्य का दर्जा देने पर विचार कर रही है केन्द्र सरकार?

दिन भर सोशल मीडिया पर यह चर्चा आम रही

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

■ चर्चा है कि भारत सरकार अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी छवि बेहतर बनाने के लिए यह कदम उठा सकती है।

■ लेकिन, यह भी कहा जा रहा है कि केन्द्र सरकार को भाजपा कार्यकताओं व समर्थकों का इस पर समर्थन शायद ना मिले।

■ भाजपा व मोदी के कई समर्थकों ने कश्मीर का राज्य का दर्जा बहाल करने पर चिंता जताई और कहा, जल्दबाजी में कोई कदम उठाने की गलती न की जाए।

नई दिल्ली, 4 अगस्त। सोशल मीडिया पर इन दिनों इस बात को लेकर एक खास हलचल देखी जा रही है कि केन्द्र सरकार अनुच्छेद 370 हटाए जाने की छठी वर्षगांठ, यानी 5 अगस्त को जम्मू-कश्मीर को फिर से राज्य का दर्जा देने पर विचार कर रही है।

याद दिला दें कि 5 अगस्त 2019 को केन्द्र सरकार ने अनुच्छेद 370 को खत्म करके, जम्मू-कश्मीर को दो केन्द्र शासित प्रदेशों, जम्मू-कश्मीर और लद्दाख, में बांट दिया था। इसके साथ ही, राज्य की विधानसभा भंग कर दी गई थी तथा वहां की सत्ता एक उप-राज्यपाल के अधीन कर दी गई थी।

केन्द्र पर कश्मीर को फिर से राज्य का दर्जा देने का दबाव भी है, क्योंकि सुप्रीम कोर्ट ने भी 2023 में केन्द्र सरकार से राज्य का दर्जा जल्द से जल्द तथा "यथाशीघ्र" बहाल करने को कहा था। करीब दस साल के लम्बे इन्तज़ार के बाद, पिछले साल यहां विधानसभा चुनाव हुए, जिसके बाद मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला और कांग्रेस नेता लगातार राज्य का दर्जा बहाल करने की मांग कर रहे हैं।

हाल के कुछ घटनाक्रमों ने राज्य के दर्जे की लम्बित बहाली की इन अफवाहों को और बल दिया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 3 अगस्त को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात की और इसके बाद गृह मंत्री अमित शाह ने भी राष्ट्रपति से भेंट की। शाह ने जम्मू-कश्मीर के कुछ नेताओं और भाजपा के प्रदेश प्रमुख के साथ भी मीटिंग कीं। सूत्रों के अनुसार, प्रधानमंत्री ने मंगलवार को एनडीए सांसदों की भी बैठक बुलाई है।

अगर वाकई राज्य का दर्जा बहाल होता है, तो यह कदम प्रधानमंत्री मोदी को वर्तमान गम्भीर चुनौतियों से राहत दिलाने में मदद कर सकता है। ज्ञातव्य है कि हाल ही में अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप की टैरिफ नीति और राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ के इस्तीफे ने सरकार को मुश्किल में डाल दिया है। इसके अलावा, पहलगाम हत्याकांड के बाद पाकिस्तान पर की गई सैन्य कार्रवाई से भी भारत की कूटनीतिक स्थिति में कोई खास सुधार नहीं हुआ। ऐसा माना जा रहा है कि जम्मू-कश्मीर के राज्य के दर्जे की बहाली से अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय की नजरों में भारत सरकार की स्थिति सुधारने में मदद मिल सकती है।

हालांकि, यह कदम भाजपा के समर्थकों को शायद पसंद न आए। सेना के पूर्व अधिकारी और लेखक

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का मतलब यह नहीं कि आप कुछ भी कह सकते हैं'

सुप्रीम कोर्ट ने राहुल गांधी को राहत देने के साथ ही नसीहत भी दी

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

■ सुप्रीम कोर्ट ने सेना के कथित अपमान संबंधी एक केस, जो लखनऊ की एक अदालत में चल रहा था, में कार्यवाही पर स्टे लगा दिया।

■ राहुल पर आरोप था कि भारत जोड़ो यात्रा के दौरान उन्होंने सेना पर टिप्पणी की थी कि चीन के सैनिक अरुणाचल में भारतीय सैनिकों को पीट रहे थे।

■ सुप्रीम कोर्ट ने इस आधार पर राहत दी कि राहुल की टिप्पणी से शिकायतकर्ता प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित नहीं है।

■ कोर्ट ने यह भी कहा, यह मुद्दा संसद में उठाया जाना चाहिए।

नई दिल्ली, 4 अगस्त। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को राहुल गांधी के खिलाफ सेना पर दिए गए बयान को लेकर दर्ज मानहानि के मुकदमे पर रोक लगा दी, साथ ही यह सवाल भी उठाया कि उन्होंने यह मुद्दा सोशल मीडिया पर क्यों उठाया, संसद में क्यों नहीं?

न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता और न्यायमूर्ति ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की पीठ ने राहुल गांधी को सावधान करते हुए कहा कि ऐसे संवेदनशील मुद्दे सोशल मीडिया पर उठाने की बजाय संसद में उठाए जाने चाहिए।

बैंच ने नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के खिलाफ लखनऊ की अदालत में विचाराधीन उस क्रिमिनल मानहानि केस में स्टे दे दिया, जो 2022 की "भारत जोड़ो यात्रा" के दौरान भारतीय सेना के बारे में की गई उनकी टिप्पणी से सम्बंधित है।

गांधी ने कहा था कि "चीनी सैनिक अरुणाचल में भारतीय सैनिकों को पीट रहे हैं।" यह टिप्पणी "लाइन ऑफ एक्चुअल कन्ट्रोल" पर चीनी कार्यवाही को लेकर, केन्द्र सरकार को निशाना बनाते हुये की गई थी।

अदालत ने गांधी से यह भी पूछा कि क्या उनकी टिप्पणी किसी विश्वसनीय सामग्री पर आधारित थी।

बैंच ने कहा, "आपने यह टिप्पणी सोशल मीडिया पर क्यों की? संसद में क्यों नहीं? आपको कैसे पता चला कि चीन ने 2000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पर कब्जा कर लिया? आपके पास इसका

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

एसआई भर्ती पेपर लीक में याचिकाकर्ता की बहस पूरी हुई

जयपुर, 4 अगस्त। राजस्थान हाईकोर्ट में एसआई भर्ती-2021 पेपर लीक मामले में याचिकाकर्ता पक्ष से जुड़े सभी वकीलों की बहस पूरी हो गई है। अदालत ने मामले में राज्य सरकार को पक्ष रखने के लिए पांच अगस्त का समय दिया है। जस्टिस समीर जैन की एकलपीठ ने यह आदेश कैलाश चन्द व अन्य की ओर से दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए। सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ताओं की ओर से ओपी

■ अब सुनवाई 5 अगस्त को।

सोलंकी और हरेंद्र नील ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता ने भर्ती को रद्द करने की गुहार करते हुए याचिका दायर की है। याचिका में भर्ती को लेकर राज्य सरकार कोई निर्णय ले, ऐसी प्रार्थना नहीं की गई है। ऐसे में राज्य सरकार की ओर से भर्ती रद्द नहीं करने का निर्णय लेने के आधार पर ही याचिका सारहीन नहीं हो जाती है। याचिकाकर्ता की ओर से बहस पूरी करने के बाद अदालती समय पूरा होने पर अदालत ने मामले की सुनवाई 5 अगस्त को तय की है।

क्या बिहार चुनाव के बाद कोई बम फोड़ सकते हैं चंद्रबाबू नायडू?

लगातार दूसरी बार मोदी सरकार की नीतियों पर विरोध जताया

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

■ अब चंद्रबाबू नायडू ने ट्रंप द्वारा टैरिफ बढ़ाए जाने पर मोदी सरकार को कड़ा पत्र लिखा व आंध्र के मत्स्य उद्योग के लिए गंभीर चिंता जताई।

■ इससे पहले चंद्रबाबू ने बिहार में मतदाता पुनरीक्षण अभियान पर नाराज़गी जताई थी।

■ नायडू के इन कदमों को एनडीए में दरार पड़ने का पूर्व संकेत माना जा रहा है। विशेषज्ञों ने कहा, अगर बिहार चुनाव के नतीजे भाजपा के अनुकूल नहीं आए तो नायडू कोई बड़ा कदम उठा सकते हैं।

नई दिल्ली, 4 अगस्त। एक ऐसे कदम के अन्तर्गत, जो एनडीए गठबंधन में दरार को और गहरा कर सकता है, आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री और तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी) प्रमुख एन. चंद्रबाबू नायडू ने केन्द्र सरकार को कड़े शब्दों में एक पत्र लिखा है। इस पत्र में उन्होंने चिंता जताई है कि अमेरिका द्वारा हाल ही में की गई टैरिफ वृद्धि का आंध्र प्रदेश के झींगा (श्रिम्प) और मत्स्य उद्योग पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

मोदी सरकार को संबोधित इस पत्र में तटीय क्षेत्रों के उन किसानों के हितों की रक्षा के लिए तत्काल हस्तक्षेप की मांग की गई है, जो समुद्री खाद्य निर्यात पर अत्यधिक निर्भर हैं।

नायडू का यह पत्र ऐसे समय में आया है, जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अमेरिका के इस कदम पर अब तक चुप्पी साध रखी है, जबकि यह भारत के जलीय कृषि क्षेत्र, विशेष रूप से झींगा निर्यात में अग्रणी राज्य आंध्र प्रदेश, के लिए गंभीर आर्थिक नतीजों का कारण बन सकता है।

राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार, यह घटनाक्रम टीडीपी और भाजपा नेतृत्व वाले एनडीए के बीच बढ़ते असंतोष का एक और संकेत है। हाल के हफ्तों में यह दूसरा अवसर है, जब नायडू ने खुलकर असहमति जताई है।

इससे पहले, नायडू ने बिहार में केन्द्र की विवादास्पद विशेष मतदाता पुनरीक्षण पहल को लेकर नाराजगी जताई थी। विपक्ष ने भी तीखे शब्दों में विशेष मतदाता पुनरीक्षण की आलोचना की थी तथा इसे, चुनाव से ठीक पहले, एक संवेदनशील राज्य में मतदाता सूची से छेड़छाड़ का प्रयास बताया था।

पिछले एक महीने में, नायडू ने कम से कम छह प्रमुख नीतिगत मुद्दों पर चिंता जताई है, जो संकेत देता है कि एक समय मजबूत रहा एनडीए का गठबंधन अब ढीला हो रहा है। नायडू की यह सतर्क, लेकिन रणनीतिक स्थिति भाजपा एवं विपक्ष दोनों के लिये ही इस बात का संकेत मानी जा रही है कि टीडीपी भविष्य के राजनीतिक समीकरणों को लेकर नए विकल्पों पर विचार कर रही हो सकती है।

आंध्र के मुख्यमंत्री के करीबी सूत्रों का कहना है कि नायडू "राजनीतिक हालात" पर गहराई से नज़र रखे हुए हैं, खासकर नवंबर में होने वाले बिहार विधानसभा चुनावों पर। एक शीर्ष टीडीपी पदाधिकारी ने इस संवाददाता को पुष्टि की कि "नायडू, बिहार चुनाव परिणामों के बाद ही, मोदी सरकार को भविष्य में समर्थन देते रहने के बारे में स्पष्ट रुख अपनाएंगे।"

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि नायडू के हालिया कदम एनडीए के क्षेत्रीय सहयोगियों में बढ़ती स्वायत्तता की प्रवृत्ति को दर्शाते हैं। हैदराबाद के एक

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'रुस से तेल खरीदा तो आयात शुल्क और बढ़ायेंगे'

वाशिंगटन, 04 अगस्त। अमेरिका के राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने सोमवार को धमकी दी है कि यदि भारत ने रूस से तेल खरीदना बंद नहीं किया तो वह भारतीय उत्पादों पर आयात शुल्क और बढ़ा देंगे।ट्रंप ने ट्रुथ सोशल पर एक पोस्ट में लिखा कि भारत को इस बात की चिंता नहीं है कि यूक्रेन में रूस कितने लोगों को मार रहा है। इस कारण, "मैं भारत द्वारा

■ अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने फिर भारत को धमकी दी।

अमेरिका को दिये जाने वाले आयात शुल्क में बड़ी बढ़ोतरी करूँगा।"

अमेरिकी राष्ट्रपति ने आरोप लगाया कि भारत न सिर्फ रूस से बड़ी मात्रा में तेल खरीद रहा है, बल्कि उसमें से ज्यादातर तेल खुले बाजार में बेचकर भारी मुनाफा कमा रहा है।

उल्लेखनीय है कि अमेरिका ने 01 अगस्त से दुनिया के कई देशों पर अतिरिक्त आयात शुल्क लगाने की

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ट्रंप की टैरिफ धमकी के जवाब में स्वदेशी का नारा दिया प्र.मंत्री मोदी ने

प्र.मंत्री ने एक रैली में कहा, हम वो सामान खरीदेंगे, जो एक भारतीय के पसीने से बना हो

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

■ ट्रंप की टैरिफ धमकी पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कड़ा रुख अपनाया और निर्देश दिए कि रूस से कच्चे तेल की खरीद जारी रखी जाएगी।

■ यूक्रेन युद्ध रोकने पर पुतिन के इन्कार के बाद ट्रंप ने भारत पर निशाना साधा और कहा कि भारत रूस से जो तेल खरीद रहा है उसी आय से रूस युद्ध कर रहा है।

■ हालांकि, चीन भी रूस से बराबर तेल खरीद रहा है, पर, विश्व की इस दूसरी बड़ी अर्थव्यवस्था से टकराने की हिम्मत शायद अमेरिका में नहीं है। इसलिए अमेरिका व उसके समर्थक देश भारत पर निशाना साध रहे हैं।

■ चूंकि, भारत एक बहुत बड़ा कन्ज़्यूमर बेस है, इसलिए सवाल यह है कि इतने बड़े उपभोक्ता बाज़ार की अनदेखी कर अमेरिका, भारत पर टैरिफ कब तक जारी रखेगा?

नई दिल्ली, 4, अगस्त। अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप की टैरिफ धमकियों के बीच प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक चुनौतीपूर्ण रुख अपनाते हुए, देशवासियों से स्थानीय उत्पाद खरीदने की अपील की और संकेत दिया कि भारत रूसी तेल की खरीद जारी रखेगा।

जानकार सूत्रों ने ब्लूमबर्ग को बताया, भारत सरकार ने देश की तेल रिफाइनरियों को रूसी तेल की खरीद रोकने का कोई निर्देश नहीं दिया है और इस बारे में कोई अंतिम निर्णय भी नहीं लिया गया है। सूत्रों के मुताबिक, सार्वजनिक और निजी, दोनों तरह की रिफाइनरियों को अपनी प्राथमिकता के अनुसार स्रोत चुनने की अनुमति है और कच्चे तेल की खरीद एक व्यावसायिक निर्णय बना हुआ है।

सप्ताहांत में पीएम मोदी ने वैश्विक अनिश्चितता के बीच भारत के आर्थिक हितों की रक्षा करने की आवश्यकता पर बल दिया। यह बयान ऐसे समय में आया है, जब अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप की सरकार ने भारत के निर्यातों पर 25 प्रतिशत टैरिफ लगा दिया है और चेतावनी दी है कि यदि भारत रूसी तेल की खरीद जारी रखता है तो और सख्त कदम उठाए जा सकते हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने शनिवार को उत्तर प्रदेश की एक रैली में कहा था, विश्व अर्थव्यवस्था अनेक आशंकाओं से गुजर रही है, एक अस्थिरता का माहौल है, "अब जो भी हम खरीदें, एक ही कसौटी होनी चाहिए, हम वही चीज़ें खरीदेंगे, जो एक भारतीय के पसीने से बनी है।"

यूक्रेन में युद्ध समाप्त करने के लिए रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन पर दबाव बनाने की कोशिशों के तहत अमेरिका ने अब भारत को भी निशाना बनाना शुरू कर दिया है। पिछले सप्ताह राष्ट्रपति ट्रंप ने ब्रिक्स सदस्यता और रूस के साथ घनिष्ठ संबंधों को लेकर भारत की तीखी आलोचना की और कहा, "वे अपनी मरी हुई अर्थव्यवस्थाओं को साथ लेकर डूब सकते हैं।"

यह बात अमेरिका की ओर से एक बड़े रुख परिवर्तन का संकेत है। अमेरिका ने वर्षों तक भारत और रूस के ऐतिहासिक संबंधों को नजरअंदाज़ करते हुए भारत को एशिया में चीन के मुकाबले संतुलन के रूप में देखा था। अब राष्ट्रपति ट्रंप इस रणनीति को त्यागते हुए, पुतिन पर दबाव बढ़ाने की राह पर हैं, जिन्होंने युद्ध समाप्त करने की अमेरिकी कोशिशों का विरोध किया है।

वाइट हाउस के उप प्रमुख स्टीफन मिलर ने रविवार को भारत पर भारी टैरिफ लगाने, अमेरिकी इमिग्रेशन सिस्टम के साथ धोखाधड़ी करने और रूस से चीन के बराबर तेल खरीदने का आरोप लगाया।

मिलर ने कहा, "राष्ट्रपति ट्रंप भारत और प्रधानमंत्री के साथ हमेशा शानदार संबंध चाहते रहे हैं, लेकिन अब हमें युद्ध की फंडिंग के विषय में सच्चाई का सामना करना होगा।"

मिलर ने कहा, "राष्ट्रपति ट्रंप सभी विकल्पों को खुला रखे हुए हैं,

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

झारखंड के पूर्व मु.मंत्री शिबू सोरेन का निधन

नयी दिल्ली/रांची, 04 अगस्त। पृथक झारखंड आंदोलन के अग्रदूत एवं पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन का सोमवार को यहां निधन हो गया। वे 81 वर्ष के थे। सोरेन एक माह से भी अधिक समय से यहां सर गंगा राम अस्पताल में भर्ती थे। उनका किडनी तथा हृदय संबंधी बीमारियों का इलाज चल रहा था। उन्होंने आज सुबह अस्पताल में ही अंतिम सांस ली।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को यहां गंगाराम अस्पताल जाकर झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन को श्रद्धांजलि दी और उनके परिजनों से

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

कृत्रिम सुख की बजाये, हमेशा ठोस उपलब्धियों के पीछे समर्पित रहिये। –अब्दुल कलाम

एस.आई.आर. पर रार, आर या पार

आजकल बिहार की मतदाता सूचियों का एस आई आर (विशेष गहन पुनरीक्षण यानि स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन) चल रहा है। यह पूरे देश में सर्वाधिक चर्चा का विषय बना हुआ है। चुनाव आयोग के अनुसार एस आई आर सभी राज्यों के लिए भी किया जाएगा । अत: देशवासियों के लिए यह समझना आवश्यक है कि यह क्या है और इसका क्या प्रभाव होगा?

चुनाव आयोग के अनुसार एस आई आर, मतदाता सूचियों के शुद्धिकरण की प्रक्रिया है, जिससे मृत, स्थाई रूप से पलायन करने वालों और अयोग्य लोगों के नाम मतदाता सूचियों से हटाए जाते हैं। इसमें, पूरी मतदाता सूची नई बनाई जाती है और प्रत्येक व्यक्ति को नामांकन प्रपत्र भरकर बी एल ओ के पास जमा कराना होता है । बी एल ओ द्वारा इन सबको अपलोड किया जाता है। चुनाव आयोग के अनुसार हर उस व्यक्ति का नाम मतदाता सूची में होगा जो भारत का नागरिक है और 18 साल से ऊपर है। जिस तरह से धरातल पर बिहार में यह कार्य चल रहा है, उसे देखकर, सभी विपक्षी दल एस आई आर को केवल लोगों के नाम काटने की प्रक्रिया बता रहे हैं।

निर्वाचन आयोग ने प्राप्त प्रपत्रों के आधार पर प्रारूप मतदाता सूचियां का प्रकाशन 1अगस्त 2025 को कर दिया है। 24 जून 2025 को उपलब्ध मतदाता सूचियों में कुल 7.89 करोड़ नाम अंकित थे जबकि ड्राफ्ट मतदाता सूचियों में कुल 7.24 करोड़ नाम हैं। इसका मतलब यह हुआ कि कुल 65 लाख लोगों के नाम हटा दिए गए हैं। इस पूरी प्रक्रिया को दलगत राजनीति से ऊपर उठते हुए मतदाता की दृष्टि से देखने की आवश्यकता है ।

प्रश्न यह नहीं है कि जिन मतदाताओं के नाम काटे जा रहे हैं, वे किस दल के हैं, अपितु यह कि भारत के प्रत्येक वयस्क नागरिक को मतदान के माध्यम से अपनी सरकार चुनने का अधिकार है या नहीं? यदि कोई भी कार्यवाही उन्हें मताधिकार से वंचित करने का काम कर रही है तो यह बहुत गंभीर बात है । यदि वास्तव में इसके कारण लाखों लोग अपने मताधिकार से वंचित होते हैं तो इसे रोकने की आवश्यकता है।

हम एस आई आर की प्रक्रिया को थोड़ा सिलसिले वार समझने का प्रयास करते हैं । चूंकि प्रत्येक वयस्क को मताधिकार प्राप्त है, सामान्यतया किसी भी राज्य में या क्षेत्र में वयस्क लोगों की संख्या वहां के मतदाता सूचियों में अंकित संख्या के बराबर होनी चाहिए। देश के अनेक राज्यों में मतदाताओं की संख्या, उस राज्य की अनुमानित वयस्क जनसंख्या से अधिक है। उदाहरण के लिए आंध्र प्रदेश में 102%, कर्नाटका में 108%, तेलंगाना में 116%, ओडिशा में 105% और पश्चिम बंगाल में यह 101% है। इनकी तुलना में बिहार में यह 97% है।

इसके कई कारण हो सकते हैं । कई बार यह होता है कि एक व्यक्ति जिसका नाम एक स्थान पर मतदाता सूची में अंकित है, वह किसी कारणवश दूसरे स्थान पर चला जाता है, तो मतदाता सूचियां के पुनरीक्षण के समय उसका नाम वहां भी जुड़ जाता है । इस प्रकार उसका नाम दो स्थान पर हो जाता है । वह यदि पुराने स्थान से नाम कटवाने का प्रार्थना पत्र देता है तो भी उसका नाम नहीं कटता है। मेरा स्वयं का जब 1995 में जयपुर से डूंगरपुर स्थानांतरण हुआ तो जयपुर में अपना नाम कटवाने के लिए, जिम्मेदार नागरिक की तरह आवेदन किया, किंतु इसकी कोई पुख्ता सूचना मुझे नहीं मिली। उसके बाद डूंगरपुर में कलेक्टर के पद का भार ग्रहण करने के बाद मैंने वहां की मतदाता सूची में अपना नाम अंकित करने हेतु प्रार्थना पत्र दिया और वहां अंकित भी हो गया । वहां मैंने मतदान भी किया। इसके बाद जब मैं जयपुर वापस आया और यहां नाम जुड़वाने का प्रयास किया तो यह जानकर आश्चर्य हुआ कि मेरा नाम तो यहां की मतदाता सूची में से काटा ही नहीं गया था। इस प्रकार लगभग एक वर्ष तक मेरा नाम दो स्थानों पर अंकित रहा। जब यह स्थिति एक आईएएस अधिकारी के साथ हो सकती है तो पता नहीं कितने अनगिनत व्यक्ति ऐसे होंगे जिनका नाम एक से अधिक स्थानों पर दर्ज होगा । तेजस्वी यादव को इसी बात पर तो नोटिस दिया जा रहा है।

अब हम जरा बिहार की ही बात कर लें । 24 जून 2025 को उपलब्ध मतदाता सूची में यह संख्या 7.89 करोड़ थी जबकि अनुमानित वयस्क जनसंख्या बिहार में 8.16 करोड़ थी। जब इस समय प्रारूप का प्रकाशन एक अगस्त 2025 को हुआ है तो अनुमानित वयस्क जनसंख्या 8.18 करोड़ की तुलना में निर्वाचकों की संख्या 7.24 करोड़ है जो कि कुल वयस्क जनसंख्या का 88% है। स्पष्ट है कि बिहार की वयस्क जनसंख्या की तुलना में मतदाताओं की संख्या 94 लाख कम हो गई है।

यह प्रकरण माननीय उच्चतम न्यायालय में लंबित है । वहां पर उसकी सुनवाई भी चल रही है । न्यायालय ने कहा है कि एस आई आर की प्रक्रिया, सभी योग्य मतदाताओं के नाम जोड़ने के लिए होनी चाहिए न कि लोगों के नाम काटने के लिए । जिस प्रकार से निर्वाचन आयोग धरातल पर काम कर रहा है, और इसके कई सबूत वीडियो और रिपोर्ट के द्वारा मीडिया में आए हैं, उससे तो यह लगता है कि निर्वाचन आयोग केवल मतदाताओं के नाम काटने के लिए यह काम कर रहा है। 24 जून, 2025 की मतदाता सूचियां में से, ड्राफ्ट मतदाता सूचियों में 65 लाख लोगों के नाम कम हुए हैं। आश्चर्य की बात है कि इसमें एक भी नया नाम नहीं जोड़ा गया। किसी मतदाता का नाम विदेशी नागरिक होने के आधार भी पर नहीं काटा गया है।

निर्वाचन आयोग के अनुसार जिन 65 लाख लोगों के नाम काटे गए हैं उनमें से 22 लाख मृतक हैं, 36 लाख ऐसे हैं जो स्थाई रूप से दूसरे स्थान पर चले गए या जिनकी कोई जानकारी नहीं है एवं 7 लाख ऐसे हैं जिनके नाम एक से अधिक स्थान में अंकित हैं। यह उल्लेखनीय है कि किसी भी व्यक्ति का नाम मतदाता सूची से हटाने से पूर्व उसकी सुनवाई करना आवश्यक है। ऐसा कुछ भी काम इस बार नहीं किया गया है। निर्वाचन आयोग यह कह रहा है कि जिन लोगों के नाम अंकित नहीं है, वे अपनी आपत्ति 31 अगस्त तक दे सकते हैं। यह समझना आवश्यक है कि जिन 7.24 करोड़ लोगों के नाम मतदाता सूची में उपलब्ध हैं, उनमें से भी अनेक ऐसे हैं जो निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित दस्तावेजों में से कोई भी एक देने में समर्थ नहीं हो पाएंगे एवं इसके कारण उनके भी नाम कट जाएंगे। ऐसे व्यक्तियों की संभावित संख्या कुछ भी हो सकती है। एक अनुमान के अनुसार सभी को जोड़कर लगभग डेढ़ करोड़ व्यक्तियों के नाम बिहार की मतदाता सूचियां से काट दिए जाने की संभावना है। ऐसा करना सर्वोच्च न्यायालय के उस आदेश के ठीक विपरीत है जिसके अनुसार लक्ष्य समावेश का होना चाहिए न कि अधिकाधिक निष्कासन का।

> **यदि इसी प्रकार की प्रक्रिया देश के सभी राज्यों में अपनाई जाएगी, जैसा कि निर्वाचन आयोग द्वारा कहा जा रहा है, तो संभावना है कि देश के 100 करोड़ मतदाताओं में से लगभग 10 करोड़ से अधिक मतदाता, मताधिकार से वंचित हो जाएंगे। इसका तो यही अर्थ होगा कि वयस्क होने के बाद भी वे भारत के किसी भी स्थान पर मत देने के योग्य नहीं माने जाएंगे । इतनी बड़ी संख्या किसी भी चुनाव में जीत हार के लिए निर्णायक सिद्ध होगी।**

जिन लोगों के नाम प्रारूप मतदाता सूची में शामिल हैं, उनमें से भी लाखों लोगों के नाम कटने की संभावना है । एक-एक विधानसभा क्षेत्र में 40 से पचास हजार मतदाताओं के नाम के आगे ''not recommended'' लिखा है।

प्रश्न यह भी है कि जिन व्यक्तियों के नाम प्रारंभ से मतदाता सूचियों में रहे हैं, वे सभी मताधिकार का उपयोग करते रहे हैं। यदि ये सब अवैध थे तो क्या इनके आधार पर चुनी गईं केंद्र और राज्य सरकारें अवैध और असंवैधानिक घोषित की जाएंगी? अब, एस आई आर के नाम पर नागरिकों से अपनी नागरिकता सिद्ध करने के लिए कहना अथवा उसकी आड़ में दस्तावेज मांगना किसी भी रूप में औचित्य पूर्ण नहीं लगता है। वैसे भी जिन दस्तावेजों को निर्वाचन आयोग ने नागरिकता के प्रमाण के रूप में मान्यता दी है, उनसे कैसे नागरिकता सिद्ध होती है, यह चुनाव आयोग द्वारा स्पष्ट नहीं किया जा रहा है। उदाहरण के लिए यदि किसी के पास भारतीय पासपोर्ट है, उसे भारतीय नागरिक मान लिया जाता है । मजे की बात यह है कि पासपोर्ट बनवाने के लिए नागरिकता का कोई प्रमाण पत्र नहीं मांगा जाता । इसी प्रकार लाखों, करोड़ों लोग जो सरकार के विभिन्न विभागों में नौकरी में थे या हैं उनसे भी नागरिकता का कोई प्रमाण नहीं मांगा गया। सबके द्वारा केवल इस बारे में स्व-घोषणा की गई कि वे भारतीय हैं, और उसी आधार पर उन्हें भारतीय मान लिया गया।

'आधार' को भी 11 दस्तावेजों में शामिल नहीं किया गया है जबकि अब लगभग सभी सरकारी कार्यों के लिए 'आधार' को अनिवार्य कर दिया गया है। इसका कारण निर्वाचन आयोग द्वारा यह बताया जा रहा है कि कई लोगों ने फर्जी आधार कार्ड बनवा रखे हैं । चुनाव आयोग ने यह किस प्रकार मान लिया कि अब जो 11 दस्तावेज चुनाव आयोग द्वारा चाहे जा रहे हैं, वे उसी तरह फर्जी नहीं बनवाए जा सकते हैं? जिस देश में डिग्रियां तक विश्वविद्यालय द्वारा फर्जी बनाई जा रही हों, वहां जन्म प्रमाण पत्र (स्वयम का या माता-पिता का) फर्जी बनाने में क्या बड़ी बात है? यदि ऐसा हुआ तो निर्वाचन आयोग की सारी प्रक्रिया का अर्थ ही क्या रह जाएगा?

निर्वाचन आयोग यह तर्क दे सकता है कि किसी को आपत्ति होने पर वह प्रमाण सहित अपील, निर्वाचन अधिकारी के समक्ष प्रस्तुत कर सकता है । सामाजिक संगठनों को यह कार्य करने में सबसे बड़ी समस्या यह है कि निर्वाचन आयोग ने जिन व्यक्तियों के नाम काट दिए हैं, उनकी श्रेणी वार सूची सार्वजनिक नहीं की गई है। अत: उनका भौतिक सत्यापन नहीं किया जा सकता है । पुरानी और नई सूचियों का मिलान करके भी ऐसी जानकारी निकालना लगभग असंभव है, क्योंकि बिहार में बूथों की संख्या 73000 से बढ़ा कर कर 92000 कर दी गई है।

यदि वास्तव में निर्वाचन आयोग निष्पक्ष है और किसी वर्ग विशेष को मतदान अधिकार से वंचित करने का उद्देश्य नहीं है, तो फिर निर्वाचन आयोग को उन सभी लोगों की सूची जारी करनी चाहिए जिनके नाम जून, 2025 की मतदाता सूची में से हटा दिए गए हैं। ऐसा न करके, निर्वाचन आयोग ने अनावश्यक आशंकाओं को जन्म दिया है।

यदि इसी प्रकार की प्रक्रिया देश के सभी राज्यों में अपनाई जाएगी, जैसा कि निर्वाचन आयोग द्वारा कहा जा रहा है, तो संभावना है कि देश के 100 करोड़ मतदाताओं में से लगभग 10 करोड़ से अधिक मतदाता, मताधिकार से वंचित हो जाएंगे। इसका तो यही अर्थ होगा कि वयस्क होने के बाद भी वे भारत के किसी भी स्थान पर मत देने के योग्य नहीं माने जाएंगे । इतनी बड़ी संख्या किसी भी चुनाव में जीत हार के लिए निर्णायक सिद्ध होगी। सामान्यतया, हार-जीत में अंतर 2-3% का होता है। 10% से अधिक मतदाताओं के नाम कम होने से चुनाव का फैसला पूरी तरह उलट सकता है।

इतनी सारी आशंकाओं को देखते हुए सभी विपक्षी दलों ने संसद में इस पर चर्चा करने के लिए एवं सड़क पर आंदोलन करने की तैयारी कर ली है। इस बारे में चुनाव आयोग ने यदि स्वयं ने निर्णय नहीं लिया एवं सर्वोच्च न्यायालय ने भी एस आई आर की इस प्रक्रिया को नहीं रोका, तो देश में लोकतंत्र के समक्ष एक गंभीर संकट उत्पन्न होने की आशंका हो जाएगी। देश को इस समय निर्वाचन आयोग द्वारा ऐसे मोड़ पर खड़ा कर दिया गया है, जहां एस आई आर पर लड़ाई आर पार की होने वाली है। फिलहाल, सबकी निगाहें सर्वोच्च न्यायालय में 12-13 अगस्त, 2025 को होने वाली सुनवाई पर टिकी हैं।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

पाकिस्तान की जुबान बोलती कांग्रेस

मदन राठौड़, भाजपा, प्रदेश अध्यक्ष

भारत ने बीते दो दशकों में आतंकवाद के खिलाफ एक लंबी और कठिन लड़ाई लड़ी है, लेकिन फर्क इस बात से पड़ा कि सत्ता में कौन था। 2004 से 2014 तक यूपीए सरकार की नरम, ढुलमुल और तुष्टिकरण की नीति ने देश को बार-बार लहूलुहान किया। मुंबई का 26/11 हमला जिसमें 166 निर्दोष नागरिक मारे गए, 2005 के दिल्ली धमाकों में 62 लोग मारे गए, 2008 में जयपुर में 63 और अहमदाबाद में 56 लोगों की जान चली गई। ये सिर्फ आंकड़े नहीं, उन मासूमों की कुर्बानी की कहानियाँ हैं जिनका कसूर सिर्फ इतना था कि वे उस वक्त उस जगह पर थे। और सबसे चिंताजनक बात यह थी कि ऐसी कितनी ही अनगिनत आतंकी घटनाएँ आए दिन देश के किसी न किसी हिस्से को लहूलुहान करती रहती थीं, जिनसे हर भारतीय के मन में डर और असुरक्षा का भाव गहराता चला गया। यूपीए के दौर में पूरे देश के नागरिकों के मन में हर वक्त यह डर बैठा रहता था कि न जाने कब और कहां धमाका हो जाए, कितने निर्दोष मर जाएँ।

सबसे शर्मनाक और दुखद पहलू यह था कि उस समय बाटला हाउस एनकाउंटर में मारे गए आतंकवादियों के लिए तो कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने आंसू बहाए, लेकिन क्या उन्होंने कभी दिल्ली, मुंबई, जयपुर या अहमदाबाद की सड़कों पर मारे गए निर्दोष नागरिकों के लिए आंसू बहाए? क्या कभी उन सैकड़ों घरों के उजड़ने का दर्द महसूस किया? यही यूपीए की नीति का असली चेहरा था - आतंकवादियों के लिए सहानुभूति और आम भारतीयों के जीवन के प्रति बेरुखी, जिसने पूरे देश का मनोबल गिराया और पाकिस्तान जैसे आतंक के प्रायोजक देश का हौसला बढ़ाया।

आज सोचिए, अगर मुंबई, जयपुर और अहमदाबाद के उन भीषण हमलों के बाद उसी वक्त ऑपरेशन सिंदूर जैसी निर्णायक कार्यवाही की गई होती, तो शायद पाकिस्तान को उसी समय सबक मिल गया होता और आतंकवाद की कमर टूट जाती। लेकिन सत्ता में रही कांग्रेस की नीति हमेशा आतंकवादियों के प्रति नरम रही, पाकिस्तान प्रेम इनके भीतर गहराई तक बैठा रहा, और इसी कारण देश बार-बार लहूलुहान हुआ।

2014 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सरकार बनने के बाद आतंकवाद के खिलाफ भारत की नीति ही बदल दी गई। पहले हमला, फिर जवाब की बजाय घर में घुसकर जवाब देने की नीति आई। उरी हमले के बाद 2016 में सर्जिकल स्ट्राइक कर पाकिस्तान के आतंकी ठिकानों को तबाह किया गया, पुलवामा हमले के बाद 2019 में बालाकोट एयरस्ट्राइक कर पाकिस्तान की धरती पर जैश-ए-मोहम्मद के अड्डों को नष्ट किया गया, और हाल ही में 2025 में पहलगाम आतंकी हमले के बाद ऑपरेशन सिंदूर चलाकर पाकिस्तान और पीओके में लश्कर-ए-तैयबा, जैश-ए-मोहम्मद और हिजबुल मुजाहिदीन के नौ कैंपों को मिट्टी में मिला दिया गया और पाकिस्तान को घुटनों पर ला दिया गया। आज पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय मंचों पर रो रहा है कि हमें मारा गया, लेकिन इधर भारत में कुछ लोग, कांग्रेस के नेता, ऑपरेशन सिंदूर की बारीकियां पूछ रहे हैं, हमारे कितने विमान गिरे? कितना नुकसान हुआ?

इस तरह हमारे देश के ऊपर ही सवाल उठा रहे हैं और हमारी सेना का मनोबल गिरा रहे हैं। क्या 1962, 1965 या 1971 की लड़ाइयों में किसी ने ऐसा बेहूदा सवाल पूछा था?

सबसे दुखद बात यह है कि अभी हाल ही में हुए पहलगाम आतंकी हमले में जब भारत ने पाकिस्तान को मुंहतोड़ जवाब दिया, तब कांग्रेस के वरिष्ठ नेता चिदंबरम जैसे लोग यह बयान देने लगे कि कैसे पता चला कि आतंकवादी पाकिस्तानी थे? इस तरह के बयान सीधे-सीधे पाकिस्तान के पक्ष को मज़बूत करते हैं, क्योंकि पाकिस्तान तो यही दावा कर रहा है कि हमले में मारे गए आतंकी हमारे थे ही नहीं।

और जब भी भारत मजबूती से जवाब देता है, तभी कांग्रेस के नेता राष्ट्रविरोधी बयानों की झड़ी लगाकर देश की आवाज़ को कमजोर करने की कोशिश करते हैं, सेना के साहस पर प्रश्नचिह्न लगाते हैं और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की स्थिति को कमजोर करने की साज़िश रचते हैं। यही कांग्रेस का चाल, चलन और चरित्र हमेशा से रहा है आतंकवादियों के लिए नरम दिल, पाकिस्तान के लिए सहानुभूति और भारत के सुरक्षा बलों पर सवाल। यूपीए के समय गृह मंत्रालय जैसे महत्वपूर्ण पद जिनके हाथ में थे, उनकी नीति कैसी रही होगी, यह उनके हाल के बयानों से ही साफ दिखता है।

मोदी सरकार ने साफ कर दिया है कि अब भारत सिर्फ सहन नहीं करेगा, बल्कि हर हमले का जवाब पाकिस्तान की धरती पर जाकर देगा। स्टेट और नॉन-स्टेट एक्टर्स का फर्क खत्म कर दिया गया चाहे हमला कोई संगठन करे, अगर वह पाकिस्तान की शह पर होगा तो उसे पाकिस्तान प्रायोजित हमला माना जाएगा और जवाब भी उसी अंदाज में दिया जाएगा। नतीजा सबके सामने है - 2014 से 2024 के बीच आतंकी घटनाओं में 70 प्रतिशत से ज्यादा कमी आई, नागरिक हताहतों में 80 प्रतिशत तक की गिरावट आई और देश के बड़े शहरों में होने वाले हमलों में भी भारी कमी आई।

यही है नया भारत, जो दुश्मन के घर में घुसकर जवाब देता है। कांग्रेस को यह समझना होगा कि सेना पर सवाल उठाना, पाकिस्तान का बचाव करना और आतंकवादियों पर सहानुभूति दिखाना राष्ट्र को कमजोर करता है। हमें गर्व है कि मोदी सरकार की जीरो टॉलरेंस नीति ने भारत को आत्मविश्वासी, निर्णायक और शक्तिशाली बनाया है और यही नये भारत की सबसे बड़ी ताकत है।

–मदन राठौड़,
प्रदेश अध्यक्ष, भारतीय जनता पार्टी, राजस्थान

मेड़ता सिटी में मीरा जयंती महोत्सव परवान पर

- **संत प्रकाशदासजी ने अपने उद्बोधन से गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करने की मांग की**
- **महोत्सव में विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित**

मेड़ता सिटी में मीरा जयंती महोत्सव में संतप्रकाशदास ने भजनों की प्रस्तुति दी।

मेड़ता सिटी, (निसं)। मीरा नगरी मेड़ता सिटी में मीरा जयंती महोत्सव परवान पर है। मीरा जयंती महोत्सव समिति अध्यक्ष जितेंद्र गहलोत, सचिव रवि प्रकाश कमेडिया, कोषाध्यक्ष सुरेंद्र बिड़ला सहित पदाधिकारी व कार्यकर्ता व्यवस्थाओं में जुटे हुए हैं। इस दौरान विभिन्न धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं।

मंदिर में मीरा बाई और ठाकुरजी की रजत रेवाड़ी के समक्ष विभिन्न समाज भजन मंडलियों द्वारा लगातार भजन कीर्तन किया जा रहा है। मीरा स्मारक राव दुदागढ़ में भी अनेक कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं। इसी क्रम में रविवार रात्रि में श्रीकिशन देव छतरी महंत हरिनारायण दादू पंथी के सानिध्य में मीरा स्मारक में भक्ति संध्या का आयोजन किया गया, जिसमें अंतर्राष्ट्रीय गौ ऋषि संत प्रकाशदास महाराज ने भजनों का गायन किया। मीडिया प्रभारी सुनील पुरी ने बताया कि इस दौरान मेड़ता विधायक लक्ष्मणराम कलरू, संतोष देवी कलरू, पालिकाध्यक्ष शोभा लाहोटी, संत धीरजराम पुष्कर रामस्नेही, साध्वी विनोद बाई सा आदि मौजूद रहे। इस दौरान संत प्रकाशदासजी ने गुरु भजनों के साथ भजन संध्या शुरू की जिसमें मीरा बाई, भगवान शिवजी, कृष्ण-राधा सहित अनेक देवी-देवताओं के भजनों का गायन किया। अनेक भक्ति मय, हास्य, व्यंग्य भजनों के माध्यम उपस्थित जन समुदाय को नाचने को मजबूर कर दिया। संत प्रकाशदासजी ने अपने उद्बोधन से गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करने की मांग की। उन्होंने देश की सेना द्वारा ऑपरेशन सिंदूर द्वारा किए गए वीरतापूर्वक कार्य को आमजन को अवगत करवाया। देश में नारी शक्ति द्वारा किए वीरता पूर्वज कार्यों को बताया।

महोत्सव अध्यक्ष जितेंद्र गहलोत, सचिव रविप्रकाश कमेडिया, कोषा अध्यक्ष सुरेंद्र बिड़ला, वरिष्ठ उपाध्यक्ष लखाराम मेहला, संरक्षक विक्रम शर्मा, हेमंत सामरिया, पुखराज गहलोत, रामेश्वर जांगिड़, विनोद टेलर, भजनदास नगर, दशरत सारस्वत, कैलाश गौड़, शेखर सांखला, रविंद्र गहलोत, ऋषि भाटी आदि समिति के पदाधिकारी कार्यकर्ता कार्यक्रमों की व्यवस्थाओं में जुट हुए हैं।

जैसलमेर में गिद्ध पक्षी पर जी.पी.एस. ट्रांसमीटर लगाने का काम हुआ

- **''रेप्टर इकोलॉजी इन द थार डेजर्ट'' नाम से शुरू हुआ शिकारी पक्षियों पर रिसर्च प्रोजेक्ट जैसलमेर में जारी है**
- **हाल ही में एक इजिप्शियन वल्चर और एक टॉनी ईगल पर ट्रांसमीटर लगाने का काम हुआ है**

जैसलमेर, (निसं)। वाइल्ड लाइफ इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया और राजस्थान वन विभाग ने संयुक्त रूप से थार के रैप्टर इकोलॉजी (शिकारी पक्षियों का परिस्थितिकी तंत्र) पर एक प्रोजेक्ट शुरू किया है। ''रेप्टर इकोलॉजी इन द थार डेजर्ट'' नाम से शुरू हुआ शिकारी पक्षियों पर रिसर्च प्रोजेक्ट जैसलमेर में जारी है और हाल ही में एक इजिप्शियन वल्चर और एक टॉनी ईगल पर ट्रांसमीटर लगाने का काम हुआ है।

वाइल्ड लाइफ इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया देहरादून के वैज्ञानिक वरुण खेर ने बताया कि इस प्रोजेक्ट का उद्देश्य थार क्षेत्र में पाए जाने वाले शिकारी पक्षियों जैसे बाज, मृत पशुओं को खाने वाले गिद्धों (स्कैवेंजर वल्चर-मृत भक्षी गिद्ध) की पारिस्थितिकी को समझना है। इस रिसर्च के तहत पहली बार थार क्षेत्र में रैप्टर प्रजातियों पर जीपीएस ट्रांसमीटर आधारित टेलीमेट्री अध्ययन शुरू किया गया है। उन्होंने बताया कि जैसलमेर का डेजर्ट नेशनल पार्क रैप्टर पक्षियों के लिए देश का बहुत ही महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जहां इनकी संख्या देश के अन्य हिस्सों की तुलना में बहुत अधिक है। यह अध्ययन इन प्रजातियों की आवाजाही, निवास स्थान, प्रजनन व्यवहार और खतरों को समझने में मदद करेगा।

जैसलमेर में स्थित राष्ट्रीय मरु उद्यान (डेजर्ट नेशनल पार्क) गिद्ध और अन्य शिकारी पक्षियों के लिए काफी खास है। यहां भारत में पाए जाने वाले नौ गिद्धों की प्रजाति में आठ प्रजातियां पाई जाती हैं। इसी पर नजर रखते हुए भारतीय वन्यजीव संस्थान देहरादून ने राजस्थान वन विभाग की सहायता से इन शिकारी पक्षियों पर अध्ययन के लिए एक प्रोजेक्ट शुरू किया है। जिसका नाम ''रेप्टर इकोलॉजी इन द थार डेजर्ट'' रखा गया है।

गणेश महोत्सव के लिये इको फ्रेंडली प्रतिमाएं बनाई

भीलवाड़ा, (निसं)। धर्म एवं समाज सेवा के लिए समर्पित श्रीगणेश उत्सव प्रबंध एवं सेवा समिति भीलवाड़ा के तत्वावधान आगामी 10 दिवसीय गणेश महोत्सव की समरसता 27 अगस्त से शुरू होगी। समिति द्वारा इंदौर के मूर्तिकारों ने भगवान गणपति की आकर्षक मल्टी कलर प्रतिमाएं स्थानीय स्तर पर तैयार करने का कार्य पूरा कर लिया है।

समिति के मीडिया प्रभारी महावीर समदानी के अनुसार गत 30 वर्षों से गणेश महोत्सव मना रही समिति के द्वारा हर वर्ष भगवान गणपति की मूर्ति स्थानीय मांग के अनुसार तैयार कराई जाती है। इस बार 10 दिवसीय आयोजन 27 अगस्त गणेश चतुर्थी बुधवार से छह सितंबर शनिवार अनंत चतुर्दशी के दिन विसर्जन के साथ संपन्न होगा 1893 में बाल गंगाधर तिलक ने गणेश चतुर्थी को एक सार्वजनिक उत्सव के रूप में मनाने की शुरुआत की जिसका उद्देश्य लोगों को एकजुट करना और ब्रिटिश शासन के खिलाफ राष्ट्रीय भावना को बढ़ावा देना था। उन्होंने गणेश उत्सव को एक मंच के रूप में इस्तेमाल किया जहां देश भक्ति के गीत गाए जाते थे। राष्ट्रवादी विचारों का प्रचार किया जाता था। गणेश महोत्सव के तहत सभी जातियों, धर्मों और समुदाय के लोगों को एक मंच पर लाना है। ऐसे उत्सवों से राष्ट्रीय एकता एवं राष्ट्रवादी भावनाओं को बढ़ावा मिलता है।

10 दिवसीय गणेश महोत्सव के माध्यम से ये भारतीय संस्कृति और परंपराओं को पुनर्जीवित करने का मंच बनता जा रहा है। इस त्यौहार को एक ऐसे मंच के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। जहां लोग अपनी संस्कृति और हेरिटेज को मना सके।

राशिफल मंगलवार 5 अगस्त, 2025

पंडित अनिल शर्मा

सावन मास, शुक्ल पक्ष, एकादशी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2082, ज्येष्ठा नक्षत्र दिन 11:23 तक, ऐन्द्रयन योग प्रात: 7:24 तक, विष्टि करण दिन 1:13 तक, चन्द्रमा आज दिन 11:23 से धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-कन्या, बुध-कर्क, गुरू-मिथुन, शुक्र-मिथुन, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज रवियोग दिन 11:23 तक है। कुमार योग दिन 11:23 से दिन 1:13 तक है। आज पवित्र एकादशी व्रत, मंगला गौरी पूजन है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:15 से 10:54 तक, लाभ-अमृत 10:54 से 2:12 तक, शुभ 3:51 से 5:29 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 5:57, सूर्यास्त 7:08

मेष
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। पारिवारिक परेशानियों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित समस्या हो सकती है। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

वृष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। व्यावसायिक आय में वृद्धि हो सकती है। दिन के मध्यान्ह पश्चात अष्टम चन्द्र शुभ नहीं है।

मिथुन
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। दिनचर्या में सुधार होगा। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कर्क
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कन्या
आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

तुला
आर्थिक कारणों से अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

धनु
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

मकर
आर्थिक/वित्तीय मामलों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

मीन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

अतिरिक्त मुख्य सचिव ने सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के संबंध में ली बैठक

बैठक के दौरान राजस्थान में सतत विकास लक्ष्यों पर राज्य की प्रगति के सबंध में विस्तृत चर्चा की

जयपुर। अतिरिक्त मुख्य सचिव जनजातीय क्षेत्रीय विकास कुंजीलाल मीणा ने सोमवार को नीति आयोग द्वारा निर्धारित सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के संबंध में संबंधित विभाग के अधिकारियों की बैठक ली।

■ **मीना ने ग्रुप 5 से संबंधित समूह सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल (एस.डी.जी.) 5 व 10 के विभिन्न संकेताक जैसे कमजोर शिशु लिंगानुपात, घरेलु हिंसा, अनुसूचित जाति, जनजाति उत्पीड़न आदि में सुधार हेतु आवश्यक निर्देश प्रदान किये**

मुख्यालय अम्बेडकर भवन के सभागार में हुई बैठक के दौरान राजस्थान में सतत विकास लक्ष्यों पर राज्य की प्रगति के सबंध में विस्तृत चर्चा की गयी

मीना ने ग्रुप 5 से संबंधित समूह सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल (एसडीजी) 5 व 10 के विभिन्न संकेताक जैसे कमजोर शिशु लिंगानुपात, घरेलु हिंसा, अनुसूचित जाति, जनजाति उत्पीड़न आदि में सुधार हेतु आवश्यक निर्देश प्रदान किये ताकि गोल 5 व 10 में राजस्थान राज्य स्तर पर सुधार हो सके और राजस्थान राज्य सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल रैंकिंग में राष्ट्रीय स्तर पर ऊँचे पायदान पर पहुँच सके।

अतिरिक्त मुख्य सचिव ने बैठक के दौरान संबंधित विभागों को संकेतकों के प्रदर्शन में सुधार के लिए आवश्यक कदम उठाने हेतु निर्देशित किया। साथ ही सतत विकास और उनके लक्ष्यों के अनुसार अपनी योजनाओं और रणनीतियों को बनाने एवं जाँच करने, सतत विकास और उनके लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए संबंधित विभागों को अपने से संबंधित संकेतकों के प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए अन्य राज्यों की सर्वोत्तम कार्यप्रणाली का अध्ययन करने हेतु निर्देशित किया।

मीना ने निर्देशित किया कि समाज में महिलाओं का स्थान मजबूत करने एवं जो सामाजिक परम्पराएँ है सिर्फ लडको द्वारा की जाती है जैसे पगड़ी की रस्म कन्यादान की रस्म, बिदीली की रस्म इत्यादि में महिला प्राथमिकता को बढ़ावा देने का प्रयास करना चाहिए, इस हेतु जिला कलक्टर ब्लॉक स्तर आंगनबाडी वर्कस स्तर पर कार्य किया जाना चाहिए।

मीना ने उद्योग विभाग को निर्देशित किया कि किसी कम्पनी में उच्च पदस्थ जैसे डायरेक्टर, मैनेजर आदि पद हेतु महिला को प्राथमिकता दी जायें, जिससे असमानता का स्तर कम हो सकें। इस हेतु एसएलबीसी, सीआईआई. फिक्की आदि को पत्र लिखें। साथ ही चिकित्सा विभाग को निर्देशित किया कि वह जो महिला एवं पुरुष असमानता है इस हेतु महिला संबंधी मोडर्न मेटर है, उन पर ध्यान दें। उन्होंने निर्देशित किया कि टेलीकॉम कम्पनीया जैसे एयरटेल, जियो, वोडाफोन आदि को पत्र लिखकर कितने महिला और पुरुषों के पास मोबाईल फोन है, का डाटा मंगवा कर आगामी बैठक में अपडेट लेकर आएं व साथ ही सभी अधिकारीयों को निर्देश प्रदान किये की सभी 5-5 ऐसे नवाचार व उपाय साझा करें जिससे ग्रुप 5 से सबंधित दोनों गोल 5 व 10 में अपेक्षित व आवश्यक सुधार किये जा सके।

बैठक में निदेशक एवं संयुक्त शासन सचिव आशीष मोदी, अतिरिक्त निदेशक केसर लाल मीना सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

राज्य स्तरीय अंगदान जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

जयपुर। स्टेट ऑर्गन टिशू ट्रांसप्लांट ऑर्गनाइजेशन के तत्वावधान में आज एसएमएस मेडिकल कॉलेज के नए एकेडमिक ब्लॉक में राज्य स्तरीय अंगदान जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य अंगदान के प्रति जन जागरूकता बढ़ाना और इस क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वालों को सम्मानित करना था, कार्यक्रम में मोहन फाउंडेशन जयपुर सिटीजन फोरम की संरक्षक भावना जगवानी और कोर ग्रुप सदस्य ठाकुरदास जी, एम.डी. गोयल, अजय गुप्ता, कमला चौधरी, गोविंद गुर्जर, रवि कामरा, प्रजेश तंवर और साक्षरता तंवर जी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम की शुरुआत रवि कामरा, अजय गुप्ता और एम.डी. गोयल द्वारा मधुर संगीत के माध्यम से अंगदान का संदेश फैलाकर की गई, जिसे उपस्थित जनसमूह ने सराहा।

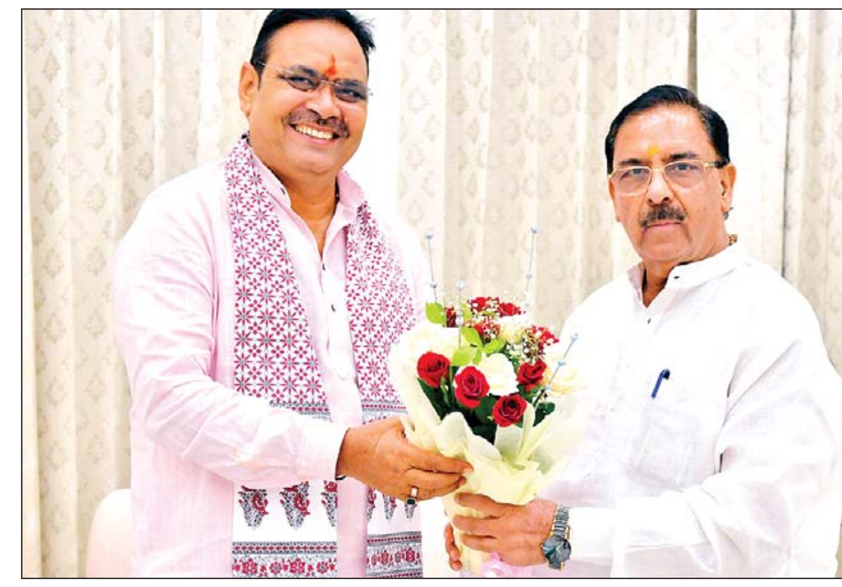

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से सोमवार को मुख्यमंत्री निवास पर 7वें राज्य वित्त आयोग के नवनियुक्त अध्यक्ष अरूण चतुर्वेदी ने मुलाकात की। मुलाकात के दौरान उन्होंने राज्य की पंचायतीराज संस्थाओं एवं नगरीय निकायों के वित्तीय सुदृढ़ीकरण के उपायों सहित आयोग के कार्यक्षेत्र से जुड़े विभिन्न विषयों पर चर्चा की। नियुक्ति के उपरांत मुख्यमंत्री से उनकी यह पहली शिष्टाचार भेंट थी।

झूठ पर राजनीति करने वाले राहुल गांधी को सुप्रीम कोर्ट ने दिखाया आईना : सीपी जोशी

जयपुर। भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष एवं चित्तौड़गढ सांसद सीपी जोशी ने आज दिल्ली में सुप्रीम कोर्ट द्वारा राहुल गांधी को चीन द्वारा भारत की भूमि पर कब्जे के मुद्दे पर लगाई गई फटकार पर कड़ी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि इससे यह स्पष्ट हो गया है कि राहुल गांधी बिना तथ्यों के गंभीर राष्ट्रीय सुरक्षा और सीमाओं से जुड़े मुद्दों पर भी गलत बयानबाजी करते है जो बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। चीन जैसे संवेदनशील विषय पर राजनीति करना और झूठ फैलाना न कैवल गैर जिम्मेदाराना है, बल्कि देश की एकता और सुरक्षा के लिए भी खतरा है। राहुल गांधी ने बार-बार यह आरोप लगाया कि चीन ने भारत की जमीन हड़प ली है और सरकार कुछ नहीं कर रही। सुप्रीम कोर्ट ने राहुल गांधी की इन टिप्पणियों को गंभीर, तथ्यहीन और गैर जिम्मेदाराना बताया है, जिससे उनकी साख और मंशा दोनों पर सवाल खड़े हो गए हैं।सांसद सीपी जोशी ने कहा कि

■ **राहुल गांधी हमेशा झूठ, भ्रम और भड़काऊ राजनीति का सहारा लेकर देश की जनता को गुमराह करने की कोशिश करते है - सीपी जोशी**

अक्साई चीन का मुद्दा कांग्रेस के कमजोर नेतृत्व का प्रतीक है। क्योंकि उस समय नेहरू प्रधानमंत्री थे, और संसद में महावीर त्यागी जी द्वारा जब पूछा गया कि यह जमीन क्यों दी गई है, तो नेहरू ने जवाब दिया कि यह जमीन तो बंजर है। इसपर महावीर त्यागी जी ने कहा था कि आपके सिर पर बाल नहीं है तो क्या यह भी उन्हें काटकर दे दोगे क्या? आज राहुल गांधी भी लगातार चीन और पाकिस्तान की भाषा बोलते नजर आते है। जब भारत-चीन सीमा पर तनाव चरम पर था तब ये चीनी राजदूत के साथ मुलाकात करते पाए गए थे। इस प्रकार की घटनाएं कांग्रेस की सोच को दर्शाती है।सांसद सीपी जोशी ने कहा कि जब देश के जवान चीन के सामने सीना तानकर खड़े हैं, तब राहुल गांधी जैसे नेता चीन के नैरेटिव को मजबूती देने का काम कर रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट की फटकार ने यह साबित कर दिया है कि विपक्ष की राजनीति सिर्फ अफवाह और नकारात्मकता पर आधारित है। अब समय आ गया है जब देश की जनता ऐसे नेताओं से सवाल करे जो देश की गरिमा को ठेस पहुंचाने वाले बयानों से विदेशी ताकतों को राजनीतिक लाभ पहुंचाने की कोशिश कर रहे हैं।

सांसद सीपी जोशी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार न केवल सीमाओं की रक्षा के लिए लगातार महत्वपूर्ण निर्णय ले रही है, बल्कि इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत कर, चीन को जवाब देने की भी पूरी तैयारी की है।

नशीला पेय पिलाकर युवती से गैंगरेप

जयपुर। मुहाना थाना इलाके में एक युवती से गैंगरेप का मामला सामने आया है। पुलिस ने पीड़िता के बयानों के आधार पर आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर उनकी तलाश शुरु कर दी है। पुलिस इस संबंध में आरोपियों के खिलाफ आईटी एक्ट के तहत मामला दर्ज किया है।

मामले की जांच कर रहे एसीपी मानसरोवर आदित्य कांकड़ ने बताया मुहाना इलाके में रहने वाली 23 वर्षीय युवती का आरोप है कि चारों आरोपी उसके पुराने परिचित थे। जिसके कारण उनकी आपस में बातचीत होती रहती थी। कुछ दिन पहले चारो आरोपी उससे मिलने के लिए आए और धोखे से नशीला पेय पिलाया। जिसके बाद चारों बदमाशों ने बेहोशी की हालत में उसके साथ दुष्कर्म किया और उसका अश्लील वीड़ियों बना लिया। वीड़ियो वायरल करने की धमकी देकर चारो बदमाश उसके ब्लैकमेंल करने लग गए। रोज -रोज की धमकियों से परेशान होकर पीड़िता ने थाने पहुंच मामले की जानकारी पुलिस को दी।

एनीमिया जांच शिविर का आयोजन

जयपुर। भारत विकास परिषद महेश नगर शाखा जयपुर एवं रामकृष्ण हॉस्पिटल लाल कोठी के संयुक्त तत्वाधान में एनिमिया जाँच शिविर का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम त्रिवेणी नगर चौराहे पर स्थित शहीद अशोक यादव उच्च माध्यमिक विद्यालय में हुआ। राजस्थान उत्तर पूर्व प्रांत की नवीन शाखा महेश नगर का यह पहला कार्यक्रम था। शाखा के पदाधिकारीयों एवं सदस्यों ने इसमें उत्साह के साथ सहभागिता की। इस अवसर पर विद्यालय की छात्राओं एवं महिला अध्यापिकाओं की एनीमिया की जाँच की गई।

उपमुख्यमंत्री ने सुनी आमजन की समस्याएं

जयपुर। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने आज सिविल लाइंस स्थित अपने कार्यालय पर जनसुनवाई आयोजित की। जनसुनवाई में प्रदेश के विभिन्न जिलों से आए लोगों ने व्यक्तिगत और सार्वजनिक समस्याएं उनके समक्ष रखीं।

■ **जनसुनवाई में प्रदेश के विभिन्न जिलों से आए लोगों ने व्यक्तिगत और सार्वजनिक समस्याएं उनके समक्ष रखकर समाधान करवाया**

उपमुख्यमंत्री ने संवेदनशीलता के साथ प्रत्येक आवेदक की बात सुनी और संबंधित विभागों के अधिकारियों को त्वरित कार्यवाही के निर्देश दिए। उन्होंने स्पष्ट किया कि जनसुनवाई का उद्देश्य सिर्फ सुनना नहीं, बल्कि लोगों की समस्याओं का अंतिम समाधान सुनिश्चित करना है।

इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री ने कहा, ''जनसुनवाई के माध्यम से आमजन से सीधा संवाद स्थापित होता है और उनके मन में सरकार के प्रति विश्वास भी बढ़ता है। हमारा प्रयास है कि हर समस्या का यथासंभव त्वरित निस्तारण हो, ताकि जनता को राहत मिले और एक सकारात्मक संदेश जाए।''

उल्लेखनीय है कि उपमुख्यमंत्री प्रत्येक सप्ताह सोमवार और मंगलवार को दो दिवसीय जनसुनवाई कार्यक्रम आयोजित करती हैं, जिसमें प्रदेशभर से आने वाले नागरिकों की समस्याओं को गंभीरता से सुनकर, समाधान हेतु आवश्यक निर्देश दिए जाते हैं।

इस जनसुनवाई में विभिन्न विभागों के अधिकारी भी उपस्थित रहे और मौके पर ही अनेक मामलों में प्राथमिक कार्यवाही की गई।

अहिल्याबाई उद्यान और मोक्षधाम में लगाए 108 पौधे

जयपुर। पर्यावरण संरक्षण को समर्पित ''एक पेड़ मां के नाम'' पहल के अंतर्गत सोमवार को सिविल लाइंस के हरिपुरा स्थित अहिल्याबाई होल्कर उद्यान और रामेश्वरम मोक्षधाम में पौधारोपण किया गया। यह कार्यक्रम श्रावण के चौथे एवं

■ **विधायक गोपाल शर्मा ने रामेश्वर मोक्षधाम मंदिर में रुद्राभिषेक से की शुरुआत**

अंतिम सोमवार को रामेश्वरम मोक्षधाम मंदिर में रुद्राभिषेक के साथ मुख्य अतिथि सिविल लाइंस विधायक गोपाल शर्मा के सान्निध्य और प्लांटेशन बोर्ड के चेयरमैन सर्वेश्वर शर्मा के नेतृत्व में शुरू हुआ। कार्यक्रम में सभी अतिथियों तथा नागरिकों ने भगवान शिव को साक्षी मानकर सामूहिक रूप से पर्यावरण संरक्षण की शपथ ली और भविष्य में अधिकाधिक पौधारोपण तथा देखभाल का संकल्प लिया।

विधायक गोपाल शर्मा ने कहा कि हर पेड़ में मां का आशीर्वाद है। जब हम

रामेश्वरम मोक्षधाम में 'एक पेड़ मां के नाम' के तहत पौधारोपण किया।

एक पौधा रोपते हैं, तो जैसे अपने भविष्य की जड़ें मजबूत कर रहे होते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पहल पर शुरू हुआ यह अभियान सिर्फ एक पौधा नहीं, एक संस्कार रोपण है। शर्मा ने कहा कि पौधारोपण सिविल लाइंस में श्रावण उत्सव के रूप मनाया जा रहा है। यह न केवल हरियाली बढ़ाने के लिए बल्कि समाज में पर्यावरण संरक्षण की चेतना जागृत करने का श्रेष्ठ माध्यम है।

प्लांटेशन बोर्ड के उपनिदेशक प्रवीण शर्मा, जिला प्रमुख अधिकारी विजेंद्र सिंह शेखावत, उप जिला प्रमुख अधिकारी सुनील बोहरा, कलेक्ट्रेट कर्मचारी संघ के अध्यक्ष राकेश शर्मा पाराशर, डॉ. तरुण माथुर, सामाजिक कार्यकर्ता अभिषेक शर्मा, भाजपा मंडल अध्यक्ष पवन सैनी, पूर्व भाजपा मंडल अध्यक्ष राकेश गुर्जर, वार्ड अध्यक्ष हरवीर सिंह चौधरी, चेयरमैन रवि प्रकाश सैनी, पार्षद राजेश कुमावत, पूर्व पार्षद अखिलेश दुबे, पूर्व पार्षद चंचल सैनी, प्रमोद शर्मा, अशोक सिंह शेखावत, अजय शर्मा, दशरथ सिंह, शेर सिंह, सीमा चौहान, मेघना कुमावत, लाली देवी, चंद्रकांता सैनी, मुन्नी मीणा, हिमांशु राजौरिया, राम सिंह राठौड़ समेत बड़ी संख्या में नागरिकों ने उत्साह से भाग लिया।

युवती से दुष्कर्म करने वाले आरोपित गिरफ्तार

जयपुर। श्याम नगर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए युवती से दुष्कर्म करने वाले आरोपित आर एस कसाना को गिरफ्तार किया है। बताया जा रहा है कि गिरफ्तार आरोपित ने युवती की फोटो वायरल करने की कहकर गहने भी ले लिये थे। फिलहाल आरोपित से पूछताछ की जा रही है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर दक्षिण राजर्षि राज ने बताया कि श्याम नगर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए युवती से दुष्कर्म करने वाले आरोपित आर एस कसाना निवासी वैर जिला भरतपुर को गिरफ्तार किया गया। इस संबंध में एक युवती ने मामला दर्ज करवाया था कि सुरक्षा गार्ड का काम करते हुए उसकी जानकारी आरएस कसाना नाम के व्यक्ति से हुई जो इस कंपनी का मालिक था। धीरे-धीरे आरएस कसाना उससे बात करने लगा और सैलरी बढ़ाने का झांसा भी दिया। जून माह 2024 में आरोपित आरएस कसाना उसे कम्पनी के काम के बहाने से एक होटल में लगा और उसके कॉल ड्रिंक में नशीला पदार्थ पिलाकर बेहोशी के हालत में उसके साथ दुष्कर्म किया। साथ ही आरोपित ने उसकी अश्लील फोटो बना ली।

देवस्थान मंत्री जोराराम कुमावत ने किया रूद्राभिषेक

मंत्री जोराराम कुमावत (बांये) ने मंत्रोच्चारण के साथ पूजा की।

जयपुर। सावन के चौथे और आखिरी सोमवार को राजस्थान सरकार देवस्थान विभाग की ओर से प्रदेशभर के शिव मंदिरों में रुद्राभिषेक कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसी कड़ी में देवस्थान मंत्री जोराराम कुमावत ने जयपुर के बड़ी चौपड़ स्थित राजकीय प्रत्यक्ष प्रभार श्रेणी के मंदिर चंद्रेश्वर जी सिरहड्योढ़ी बाजार में प्रदेश की सुख, शांति, समृद्धि, खुशहाली एवं अनुकूल वर्षा की मंगल कामना के लिए श्रद्धा और विधि विधान के साथ रुद्राभिषेक किया। इस दौरान देवस्थान विभाग के पुजारियों ने मंत्रोच्चारण के साथ पूजा अर्चना करवाई। मंत्री कुमावत ने बताया कि देवस्थान विभाग के राजकीय प्रत्यक्ष प्रभार श्रेणी के प्रदेशभर के 80 मंदिरों में रुद्राभिषेक के कार्यक्रम आयोजित किए गए।

रुद्राभिषेक में मुख्य रूप से भाजपा ओबीसी मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष चंपालाल गेदर, देवस्थान विभाग के सहायक आयुक्त महेंद्र कुमार देवतवाल, निरीक्षक सुरेंद्र पूनिया, भाजपा प्रदेश प्रवक्ता मदन प्रजापत आदि ने देवाधिदेव महादेव की पूजा अर्चना कर भगवान भोलेनाथ का आशीर्वाद प्राप्त किया। इससे पहले मंत्री जोराराम कुमावत के मंदिर पहुंचने पर देवस्थान विभाग के अधिकारियों ने उनका भव्य अभिनंदन किया।

सार-समाचार

साइकिल चुराने वाला शातिर साइकिल चोर गिरफ्तार

जयपुर। विद्याधर नगर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए घरों के अंदर घुसकर साइकिल चुराने वाले एक शातिर साइकिल चोर को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपित के पास से उनीस ब्रांडेड साइकिल बरामद की है। पुलिस पूछताछ में सामने आया कि नशे के शौक के लिए साइकिल चोर जयपुर शहर में 50 से अधिक ब्रांडेड साइकिल चोरी कर चुका है। पुलिस फिलहाल आरोपी से पूछताछ कर रही है। पुलिस उपायुक्त जयपुर (उत्तर) करण शर्मा ने बताया कि विद्याधर नगर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए घरों के अंदर घुसकर साइकिल चुराने वाले एक शातिर साइकिल राहुल स्वामी उर्फ कब्बू (19) निवासी पुराना विद्याधर नगर को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपित के कब्जे से जयपुर शहर से चुराई 19 ब्रांडेड साइकिल बरामद की है। वह घरों के अंदर घुसकर भी साइकिल चोरी की वारदात को अंजाम देता था। पूछताछ में आरोपी ने नशे के शौक के लिए साइकिल चोरी करना स्वीकार किया है। जयपुर शहर में ब्रांडेड साइकिल चोरी की 50 से अधिक वारदात करना बताया है। उसके खिलाफ जयपुर शहर के विभिन्न थानों में 8 प्रकरण दर्ज है। पुलिस पूछताछ में और भी कई वारदातें खुलने की आशंका जताई जा रही है।

लायंस क्लब हवामहल का प्रतिनिधिमंडल करेगा राष्ट्रपति भवन का भ्रमण

जयपुर। देश के प्रतिष्ठित और सक्रिय सामाजिक संगठनों में से एक लायंस क्लब जयपुर हवामहल के प्रतिनिधिमंडल द्वारा आगामी 6 और 7 अगस्त में नई दिल्ली स्थित राष्ट्रपति भवन और नई संसद भवन का भ्रमण किया जाएगा। यह ऐतिहासिक यात्रा लायंस इंटरनेशनल के 108 गौरवशाली वर्षों के पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित की जा रही है। इस अवसर पर क्लब के सदस्य भारतीय लोकतंत्र की कार्यप्रणाली, विशेष रूप से संसद की कार्यवाही, को प्रत्यक्ष रूप से देखने और समझने का अवसर प्राप्त करेंगे। साथ ही लोकसभा अध्यक्ष माननीय ओम बिरला जी को क्लब की ओर से उनके अद्वितीय सामाजिक योगदान और जनसेवा के लिए 'लाइफ़टाइम अचीवमेंट अवार्ड' से सम्मानित किया जाना प्रस्तावित है। कार्यक्रम संयोजक लायन अनूप खंडेलवाल और लायन धर्मेश सक्सेना ने बताया कि यह दो दिवसीय विशेष यात्रा सदस्यों के लिए एक अविस्मरणीय अनुभव होगी, जिसमें वे न केवल राष्ट्रपति भवन और संसद भवन की भव्यता को देखेंगे, बल्कि उनकी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक महत्ता से भी परिचित होंगे।

एनीमिया जांच शिविर आयोजित

जयपुर।भारत विकास परिषद महेश नगर शाखा जयपुर एवं रामकृष्ण हॉस्पिटल लाल कोठी के संयुक्त तत्वाधान में एनिमिया जाँच शिविर का आयोजन किया गया। शाखा संरक्षक महेंद्र सिंघल ने बताया यह कार्यक्रम त्रिवेणी नगर चौराहे पर स्थित शहीद अशोक यादव उच्च माध्यमिक विद्यालय में हुआ। राजस्थान उत्तर पूर्व प्रांत की नवीन शाखा महेश नगर का यह पहला कार्यक्रम था। शाखा के पदाधिकारीयों एवं सदस्यों ने इसमें उत्साह के साथ सहभागिता की। इस अवसर पर विद्यालय की छात्राओं एवं महिला अध्यापिकाओं की एनीमिया की जाँच की गई। लगभग 125 एनीमिया जाँच की गई। कार्यक्रम में भारत विकास परिषद के प्रांतीय अध्यक्ष रणवीर सिंह त्यागी, शाखा संरक्षक महेंद्र सिंघल,अध्यक्ष सीताराम गुप्ता,सचिव लोकेंद्र गर्ग, कोषाध्यक्ष सीए अखिल जैन एवं अन्य सदस्य उपस्थित रहे। इस अवसर पर एनीमिया के लक्षण, रोकथाम एवं उपचार पर रामकृष्ण हॉस्पिटल की स्त्री रोग विशेषज्ञ डा. नीलम जैन का विद्यालय की छात्रों के साथ वार्तालाप भी रहा।

पतंजलि योगपीठ में जड़ी-बूटी दिवस के रूप में मनाया आचार्य बालकृष्ण जी का जन्मदिवस

जयपुर/ हरिद्वार। पतंजलि योगपीठ के महामंत्री आचार्य बालकृष्ण जी का जन्मदिवस पतंजलि वैलनेस,पतंजलि योगपीठ-2 के योगभवन सभागार में जड़ी-बूटी दिवस के रूप में मनाया गया। जड़ी-बूटी दिवस के अवसर पर स्वामी रामदेव जी व आचार्य बालकृष्ण

■ **जड़ी-बूटियाँ मात्र उपचार के लिए नहीं अपितु आत्म साक्षात्कार के लिए भी हेतु हैं : स्वामी रामदेव**

जी ने उपस्थित जनसमूह को स्वस्थ व्यक्ति,स्वस्थ परिवार,स्वस्थ समाज, स्वस्थ राष्ट्र व स्वस्थ विश्व के लिए वृक्षारोपण हेतु संकल्पित कराया। स्वामी जी व आचार्य जी ने स्वयं रक्तदान व वृक्षारोपण कर जनसामान्य को प्रेरित किया।

कार्यक्रम में स्वामी रामदेव जी महाराज ने आचार्य जी को जन्मदिवस की शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि आचार्य जी का जन्मदिवस मनाना तो मात्र एक बहाना है,इसका मुख्य उद्देश्य

स्वामी रामदेव जी महाराज (बीच में) ने आचार्य बालकृष्ण जी को तिलक लगाकर जन्मदिवस मनाया।

भारत माता के प्रत्येक घर में ही नहीं सम्पूर्ण धरती माता के आँगन में जड़ी-बूटियाँ शोभायमान हों और सम्पूर्ण मानवता उनसे स्वास्थ्य व सुख पाएँ। उन्होंने कहा कि जड़ी-बूटियाँ प्रकृति-परमेश्वर के अनुग्रह को अनुभव करने का एक माध्यम हैं। उन्होंने कहा कि जड़ी-बूटियाँ मात्र उपचार के लिए ही नहीं अपितु आत्म साक्षात्कार के लिए भी हेतु हैं।

स्वामी जी ने कहा कि अपने ऋषियों की विरासत को गौरव के साथ प्रतिष्ठापित करने वाले आचार्य जी इस अखंड-प्रचंड पुरुषार्थ के जीवंत प्रतिमान हैं। पतंजलि आयुर्वेद हॉस्पिटल,योगग्राम,पतंजलि वेलनेस आदि पतंजलि के विभिन्न सेवा परिसरों में आचार्य जी का बहुत बड़ा तप निहित है। पूज्य आचार्य जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन लोकहित में समर्पित कर दिया है। इनका जीवन एक प्रेरणा है कि हमें अखंड-प्रचंड पुरुषार्थ करते हुए अपने पूर्ण ज्ञान,भक्ति व पुरुषार्थ से प्रत्येक कार्य को भगवान का अराधन मानकर अपने जीवन की आहुति भारत माता, मानवता, प्रकृति, संस्कृति की सेवा के लिए समर्पित करनी है। इसके जीवंत प्रतिमान तथा साक्षात विग्रहवानरूप श्रद्धेय आचार्य जी हैं।

कार्यक्रम में आचार्य बालकृष्ण जी महाराज ने कहा कि जड़ी-बूटियां हमसे नहीं हैं अपितु जड़ी-बूटियों से हम हैं। हमें अपने जीवन की रक्षा करनी है तो जड़ी बूटियों को बचाना जरूरी है। इसलिए पतंजलि का जड़ी-बूटी दिवस सम्पूर्ण मानवता के जीवन को बचाने का एक उपक्रम है,जड़ी बूटियां नही होंगी,पेड़ पौधे नहीं होंगे,तो मानव का जीवन का अस्तित्व भी नहीं रह सकता।

आचार्य जी ने कहा कि जन्मदिन तो मात्र बहाना है,जब हम रात्रि विश्राम करके प्रातःकाल उठते हैं तो नूतन ऊर्जा के साथ,नूतन सूर्योदय के साथ,नवजीवन के साथ हम प्रतिदिन अवतरित होते हैं। इस अवसर पर पतंजलि योगपीठ से जुड़े हमारे लाखों-लाखों परिवार के साथ देश व दुनिया में लाखों करोड़ों लोग जड़ी बूटियां लगाकर इस उत्सव को मनाते हैं।

विधायक गोपाल शर्मा कांवड़ यात्रा में हुए शामिल

जयपुर। श्रावण मास के अंतिम सोमवार से पूर्व शहर में कांवड़ यात्राओं की श्रृंखला अनवरत जारी है। रविवार को सिविल लाइंस विधानसभा क्षेत्र में विभिन्न स्थानों पर कांवड़ यात्राएं निकलीं। विधायक गोपाल शर्मा भी राधा विहार कॉलोनी में कांवड़ यात्रा में शामिल हुए। उन्होंने कांवड़ियों पर पुष्पवर्षा की और स्वयं भी कांवड़ उठाकर साथ चले।

श्रद्धा, उत्सव और अध्यात्म के माहौल में आयोजित हुई कांवड़ यात्रा के दौरान ''हर हर महादेव ! बोल बम ! जय जय शिव शंकर ! के नारों से पूरा क्षेत्र गूंज उठा। केसरिया वस्त्रधारी शिवभक्तों की टोली, ढोल-नगाड़ों, मुखोटों व धार्मिक ध्वजों के साथ जैसे ही आगे बढ़ी, वातावरण दिव्यता और भक्ति की ऊर्जा से सघन हो उठा। भोले बाबा की भव्य झांकी, भक्ति भाव में झूमती प्रसन्निचत्त मातृशक्ति, श्रद्धालुओं की सेवा में जुटे नागरिव, ऐसे दृश्यों के साथ हर पल यह यात्रा एक चलती-फिरती काव्यगाथा बन गई।विधायक शर्मा ने आयोजकों को इस सुंदर समरस आयोजन के लिए साधुवाद दिया और युवाओं से आग्रह किया कि इस वातावरण की सच्चाई को आत्मसात करके सामूहिक संस्कृति में भागीदारी निभाएं।

लालसोट में ईसरदा-दौसा पेयजल परियोजना का सीएम भजनलाल ने किया शिलान्यास

हर गांव-ढाणी तक सुविधाएं पहुंचाकर लोगों का जीवन बेहतर बनाना हमारा संकल्प : भजनलाल

सीएम भजनलाल शर्मा ने बटन दबाकर ईसरदा-दौसा पेयजल परियोजना का शिलान्यास किया।

दौसा/जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रदेश के हर गांव, हर ढाणी और हर व्यक्ति तक सुविधाएं पहुंचाकर लोगों का जीवन बेहतर बनाना हमारा संकल्प है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश को सशक्त एवं समृद्ध बनाने का लक्ष्य लेकर कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा सोमवार को दौसा जिले के लालसोट विधानसभा क्षेत्र स्थित डूंगरपुर गांव में आयोजित समारोह में रिमोट का बटन दबाकर ईसरदा-दौसा पेयजल परियोजना का शिलान्यास किया।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि महादेव की कृपा से प्रदेश में भरपूर बारिश से जलाशय लबालब हो गए हैं और ईरसदा बांध में भी खूब पानी आया है। उन्होंने कहा कि ईसरदा-दौसा पेयजल परियोजना के तहत लालसोट में लगभग 350 करोड़ रुपये की लागत से 8 स्वच्छ जलाशयों, 5 पंप हाउस, 47 उच्च जलाशयों का निर्माण किया जाएगा। इसमें 280 किलोमीटर राइजिंग मुख्य पाइप लाइन, 200 किलोमीटर से अधिक मुख्य पाइप लाइन एवं 1360 किलोमीटर वीडीएस पाइप लाइन बिछाई जाएगी। उन्होंने कहा कि वर्ष 2027 तक पूर्ण किए जाने वाले इन कार्यों से 302 गांवों की लगभग 5 लाख 58 हजार आबादी और लालसोट की करीब 69 हजार आबादी को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध हो सकेगा। शर्मा ने कहा कि लालसोट विधानसभा में 120 करोड़ रुपये से अधिक के अन्य विकास कार्यों की भी स्वीकृति दी गई है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि लालसोट विधानसभा के लिए 116 करोड़ रुपए का प्रावधान कर संबंधित कार्यों को तेजी से पूरा किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि एसएच-24 से एनएच-11ऐई वाया नांगल मोड, देवली रोड-लालसोट बाईपास के नवीनीकरण एवं चौड़ाईकरण हेतु कार्यादेश जारी किए जा चुके हैं। एनएच 148 डूंगरपुर मोड से डोब वाया हरिपुरा एवं लालसोट से खटवा तक सड़क नवीनीकरण एवं चौड़ाईकरण कार्य करवाया जा रहा है। लालसोट नगर पालिका को नगर परिषद् में क्रमोन्नत किया गया है। साथ ही श्यामपुरा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में एवं कन्या महाविद्यालय, लालसोट को पीजी में क्रमोन्नत किया गया है।

समारोह में कृषि एवं ग्रामीण विकास मंत्री डॉ. किरोड़ी लाल मीणा ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

- **'ईसरदा-दौसा पेयजल परियोजना से लगभग 6.27 लाख लोगों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध हो सकेगा'**

के नेतृत्व में राज्य की डबल इंजन सरकार किसानों का जीवन स्तर बेहतर बनाने के लिए लगातार कार्य कर रही है। उनकी पैदावार बढ़ाने के लिए उच्च किस्म के खाद-बीज और कीटनाशक उपलब्ध कराए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि अतिवृष्टि प्रभावित लोगों को नियमानुसार मुआवजा दिया जाएगा। कृषि मंत्री ने दौसा क्षेत्र में ईसरदा बांध का पानी उपलब्ध कराने के लिए मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया। जलदाय मंत्री कन्हैयालाल ने कहा कि गत सरकार के कार्यकाल में जल जीवन मिशन में व्यापक भ्रष्टाचार हुआ जिससे इसके कार्य समय पर पूरे नहीं हुए। अब हमारी सरकार द्वारा जल जीवन मिशन के अंतर्गत गुणवत्तापूर्ण कार्य तेजी से पूरे किए जा रहे हैं। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने सिंदूर का पौधा भी लगाया।

रिश्वत लेते हेड कांस्टेबल गिरफ्तार

उदयपुर, (निसं)। पति की मदद के लिए परिवादिया के सहयोगी से एक हजार रूपये रिश्वत लेते गोवर्धन विलास पुलिस थाने के हेड कांस्टेबल को भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो टीम ने गिरफ्तार किया है।

भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो उदयपुर टीम के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अनन्त कुमार ने बताया कि 4 अगस्त को परिवादिया लक्ष्मीबाई निवासी काया ने सहपरिवादी भगवान निवासी काया के साथ ब्यूरो कार्यालय उदयपुर में एक

- **थाने में मारपीट नहीं करने एवं जमानत में मदद करने के एवज में दो हजार रूपये रिश्वत मांगी**

रिपोर्ट दी।

उसने बताया कि गोवर्धन विलास पुलिस थाने के हेड कांस्टेबल संजय कुमार मीणा जो एक्साईए एक्ट मामले में बंदी मेरे पति होमा के साथ थाने में मारपीट नहीं करने एवं जमानत में मदद करने के एवज में 2 हजार रूपये रिश्वत की मांग कर रहा है। जिसका सत्यापन कराया तो हेडकांस्टेबल संजय कुमार ने 1500 रूपये की रिश्वत उसी समय ले ली। शेष नकदी कोर्ट में परिवारजन से उपलब्ध करवाने के लिए कहा। सत्यापन होने पर एसीबी के पुलिस निरीक्षण नरपतसिंह मय टीम ने संजय मीणा को कोर्ट परिसर में परिवादी से 1000 हजार रूपये रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया। ब्यूरो की टीम आरोपी के मकान की तलाश कर रही है।

बीस हजार की रिश्वत लेते हेड कांस्टेबल गिरफ्तार

उदयपुर, (निसं)। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो इन्टेलिजेंस उदयपुर की टीम ने लूट के मामले में आरोपी नहीं बनाने तथा जब्त कार छोड़ने के एवज में पीड़ित से राजसमंद जिले के खमनोर थाना पुलिस के हेडकांस्टेबल को बीस हजार रूपये रिश्वत लेते गिरफ्तार किया।

प्राप्त जानकारी के अनुसर एक अगस्त को पीड़ित यशपालसिंह चौहान निवासी कल्ला, खेड़ी विरान पोस्ट गुंजोल नाथद्वारा राजसमंद ने भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो इंटेलीजेंस यूनिट उदयपुर को रिपोर्ट दी। जिसमें उसने बताया कि मुझे खमनोर पुलिस थाने में दर्ज प्रकरण में लूट के मामले में आरोपी नहीं बनाने एवं जब्तशुदा कार को छोड़ने के एवज में थानाधिकारी खमनोर शैतानसिंह नाथावत के रीडर कृष्णकुमार पुत्र सरदाराराम निवासी मोठूका तहसील नीमकाथाना पाटन सीकर हॉल हेडकांस्टेबल पुलिस थाना खमनोर 26 हजार रूपये रिश्वत की मांग कर रहा है। पूर्व में मुझसे डरा धमकाकर 35 हजार रूपये वसूल कर चुका है।

जिस पर एक अगस्त को शिकायत

- **लूट के मामले में आरोपी नहीं बनाने तथा जब्त कार छोड़ने के एवज में रिश्वत ली**

का सत्यापन किया तो रीडर हेडकांस्टेबल द्वारा थानेदार के नाम से रिश्वत मांगने की पुष्टि की गई। इस पर भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो उदयपुर रेंज के उप महानिरीक्षक पुलिस प्रहलादसिंह कृष्णियां के सुपरविजन में ब्यूरो टीम की प्रभारी निरीक्षक डॉ. सोनू शेखावत के नेतृत्व में एएसआई मुनीर मोहम्मद, सहायक प्रशासनिक अधिकारी दलपतसिंह, कांस्टेबलन अजय कुमार, भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो इंटेलीजेंस यूनिट कनिष्ट सहायक लक्ष्मणसिंह टीम ने सोमवार को थानाधिकारी के नाम पर हेड कांस्टेबल कृष्णा कुमार को 20 हजार रूपये रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया। ब्यूरो की टीम मामले में खमनोर थानाधिकारी की संदग्धि भूमिका के मामले में जांच कर रही है।

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर

ई-निविदा 04/2025-26

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा कृषि महाविद्यालय, सुमेरपुर तथा कृषि अनुसंधान उपकेन्द्र, सुमेरपुर में श्रमिकों की आपूर्ति करने हेतु ऑनलाईन ई-निविदा आमंत्रित की जाती है। निविदा संबंधी विस्तृत विवरण एवं जानकारी **www.sppp.rajasthan.gov.in** एवं **https://eproc.rajasthan.gov.in** पर उपलब्ध है। **UBN No. : JAU2526SLRC00071**

Eproc ID: 2025_AGUJD_492103_1

राज.संवाद/सी/25/7470 **नियंत्रक (वित्त)**

Government of Rajsthan
Water Resources Department
Office of the Executive Engineer
Water Resources Division Dholpur
Tel & Fax No. 05642-220880 E-mail- eewrddholpur1@gmail.com
E-NIT NO. 06 YEAR 2025-26

No. 1597 Date-25.07.2025

On behalf of government of Rajasthan NIT No. 06 Year 2025-26 is invited from eligible contractor for 04 Nos. works cost of works is Rs. 66.41 Lacs. The detail of works is available on following websites.

UBN NO. (1) WRD2526GLOB00768, (2) WRD2526GLOB00769, (3) WRD2526GLOB00770, (4) WRD2526GLOB00771

1. www.diprrajasthan.gov.in 2. www.sppp.rajasthan.gov.in

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER
WATER RESOURCES DIVISION, JHALAWAR

NO. E.E./WRJHA.//NIT-05/2025-26/1426-54 Date- 25.07.2025

E-NIT NO. 05/2025-26

On Behalf of The Governor of Rajasthan, e-tender is invited from interested bidders for the work for 1. Plantation work (ERCP) Mission Hariyalo Rajasthan water resources Division Jhalawar Tehsil Jhalarapatan, Bakani, Pachphar. (Est. Cost Rs. 39.25 Lac) 2. Plantation work (ERCP) Mission Hariyalo Rajasthan water resources Division Jhalawar Tehsil Khanpur.,(Est. Cost Rs. 39.25 Lac) for Completion period of 03 Months (Including Rainy Season) from 26.07.2025 (9.30 AM) to 05.08.2025 (06.00 PM). Other particulars, terms & conditions may be seen on the procurement portal www.eproc.rajasthan.gov.in, www.dipr.rajasthan.gov.in, http://sppp.rajasthan.gov.in & www.waterresources.rajasthan.gov.in

NIB CODE- WRD2526A0302, UBN For Item No. 01-WRD2526WSOB00796,
UBN For Item No. 02-WRD2526WSOB00797

(Pankaj Singh)
Executive Engineer
DIPR/C/10883/2025 Water Resources Division, Jhalawar

2.16 करोड़ का डोडा-पोस्त जब्त, आरोपी गिरफ्तार

नागौर, (निसं)। नागौर पुलिस ने जिला स्तरीय अभियान ऑपरेशन नीलकंठ के तहत एक खेत में दबिश देकर 1441 किलोग्राम अवैध डोडा-पोस्त जब्त किया है। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बरामद डोडा पोस्त की अनुमानित कीमत करीब 2 करोड़ 16 लाख रुपए है। सयुक्त कार्रवाई में पांचौड़ी थाना, सदर और नागौर डीएसटी टीम शामिल रही।

नागौर एसपी मृदुल कच्छावा ने बताया कि नशे व मादक पदार्थों के खिलाफ नागौर जिला स्तर पर ऑपरेशन नीलकंठ चलाया जा रहा है। सूचना मिली कि भेड़ गांव का श्रवणराम विश्नोई (40) खेत में अवैध डोडा-पोस्त छिपा रखा है सूचना की पुष्टि होते ही स्थानीय पांचौड़ी थाना टीम को अवगत कराया गया। टीम ने आरोपी श्रवणराम के खेत पर छापा मारा। पुलिस ने वहां से 50 कट्टों में भरा 1441 किलो डोडा-पोस्त बरामद किया और मौके से ही आरोपी श्रवण राम विश्नोई को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस अब इस तस्करी नेटवर्क से जुड़े अन्य आरोपियों की तलाश में जुट गई है।

सातवीं मंजिल से नीचे गिरा बालक, मौत

कोटा, (निसं)। बोरखेड़ा थाना इलाके में खेलते समय पैर फिसलने से सातवीं मंजिल की सीढ़ियों से नीचे गिरने से बालक की मौत हो गई। 12 वर्षीय बालक हर्ष प्रधान अपार्टमेंट की छत पर खेलते समय पैर फिसलने से सीढ़ियों पर आ गया और सीधे नीचे फ्लोर पर गिर गया। जिसे अस्पताल लाया गया। जहां डॉक्टरों ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। बोरखेड़ा थानाधिकारी देवेश भारद्वाज ने बताया कि मृतक बालक हर्ष प्रधान उड़ीसा का निवासी है जो परिवार वालों के साथ कोटा में कुछ ही महीने पहले आया था। थानाधिकारी ने बताया कि मृतक बालक हर्ष की मां इलाके के कोरल पार्क स्थित श्याम अपार्टमेंट में वार्डन का काम करती है। बालक अपार्टमेंट की छत पर खेल रहा था, पैर फिसलन से बालक सीढ़ियों से गिरता हुआ नीचे आ गया।

तेज रफ्तार डंपर ने बाइक सवार महिला को कुचला, मौत

पावटा, (निसं)। तेज रफ्तार डंपर ने एक महिला को कुचला दिया। हादसे में महिला की मौके पर ही मौत हो गई। आक्रोशित परिजनों व ग्रामीणों ने शव को सड़क पर रखकर प्रदर्शन किया और सड़क मार्ग जाम कर दिया।

- **आक्रोशित परिजनों व ग्रामीणों ने शव को सड़क पर रखकर प्रदर्शन किया**
- **मुवावजा देने के आश्वासन के बाद चार घंटे बाद धरना समाप्त हुआ**

प्रागपुरा थाना क्षेत्र के बुचारा निवासी लक्ष्मी देवी (48) पत्नी प्रहलाद सोमवार की सुबह घर से अपने भाई के लड़के अजय के साथ बाइक पर पावटा डॉक्टर को दिखाकर दवाई लेकर वापस बुचारा आ रही थी। उसी समय समय ग्राम बुचारा पहुंचने पर कालीबाय के पास क्रशर के डंपर ने

हादसे के बाद मौके पर लोगों की भीड़ जमा हो गई।

महिला को रौंद दिया, जिससे मौके पर ही महिला की मौत हो गई। सुबह करीब 12 बजे हुई इस दुर्घटना के बाद क्षेत्र में हड़कंप मच गया।

आसपास के ग्रामीण और परिजन दौड़कर मौके पर पहुंच गए। घटना की जानकारी लगते ही डंपर चालक तो मौके से भाग गया। आसपास के लोगों से सूचना गांव पहुंची, तो देखते ही देखते लोगों की भीड़ मौके पर पहुंच गई और जाम जैसी स्थिति निर्मित हो गई। महिला के मौत की खबर सुनते ही परिजन व ग्रामीण आक्रोशित हो गए और मार्ग को जाम कर मृत महिला के शव को लेकर धरने पर बैठ गए व क्रेशर व डंपर मालिक को मौके पर बुलाने व क्षेत्र में इन वाहनों की वजह से घटित हो रही दुर्घटनाओं पर अंकुश लगाने एवं मृतक के परिजनों को मुवावजे व कोटपूतली विधायक हंसराज पटेल को भी मौके पर बुलाने की मांग पर अड़े रहे। सूचना पर पावटा तहसीलदार संजय खेदड व प्रागपुरा थाना प्रभारी किरण सिंह मय जाप्ता मौके पर पहुंचे व मृतक महिला के परिजनों ग्रामीणों से समझाइश करते हुए मामला शांत कर धरना समाप्त कर शव का पोस्टमार्टम करवाने का प्रयास किया, लेकिन परिजन व ग्रामीण अपनी मांग पर अड़े रहे।

प्रागपुरा थाना प्रभारी किरण सिंह ने बताया कि महिला की मौत के मामले में दुर्घटना करने वाले डंपर को कब्जे में ले लिया गया है, डंपर चालक को पकड़ने के लिये नकाबन्दी भी करवाई गई है। आगे की कारवाई की जा रही है। पावटा तहसीलदार संजय खेदड व प्रागपुरा थाना प्रभारी किरण सिंह ने बताया कि डंपर चालक पर कठोर कार्रवाई व क्रशर व डंपर मालिक द्वारा मुआवजा देने के आश्वासन के बाद चार घंटे चल रहे धरने को समाप्त कर परिजन व ग्रामीण शव का पोस्टमार्टम करवाने को राजी हुए।

राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर
विज्ञप्ति

दिनांक-28.07.2025

आयोग के वि.सं. 09/2024-25 दिनांक 05.08.2024 द्वारा आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग के लिए सहायक सांख्यिकी अधिकारी (ASSISTANT STATISTICAL OFFICER) के कुल 43 (गैर अनुसूचित क्षेत्र-31 एवं अनुसूचित क्षेत्र-12) पदों पर भर्ती हेतु ऑनलाईन आवेदन पत्र आमंत्रित किये गये थे। विभाग द्वारा गैर अनुसूचित क्षेत्र के पदों की संख्या में 50 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि किये जाने के फलस्वरूप उक्त पदों हेतु दिनांक 30.07.2025 से दिनांक 13.08.2025 को रात्रि 12.00 बजे तक ऑनलाईन आवेदन पत्र पुनः आमंत्रित किये जाते है। इसके पश्चात लिंक निष्क्रिय हो जाएगा। ऑनलाईन आवेदन करने के लिए अभ्यर्थियों को आयोग के ऑनलाईन पोर्टल https://rpsc.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध Apply online link को Click कर अथवा एस.एस.ओ.(SSO) पोर्टल https://sso.rajasthan.gov.in से Login कर Citizen Apps (G2C) में उपलब्ध Recruitment Portal का चयन कर One Time Registration (OTR) करना होगा। विभाग से प्राप्त संशोधित वर्गवार वर्गीकरण एवं अन्य सूचना के संबंध में आयोग की वेब-साईट पर जारी शुद्धि पत्र संख्या 6/2025-26 का अभ्यर्थी अवलोकन कर सकते हैं।

DIPR/C/10916/2025 (रामनिवास मेहता) सचिव

राज्य सरकार ने 103 शिक्षा अधिकारियों के तबादले किये

बीकानेर, (निसं)। राज्य सरकार ने 24 घंटे में 612 शिक्षा अधिकारियों के ट्रांसफर कर दिए। इनमें प्रिंसिपल के साथ ही ब्लॉक लेवल से स्टेट के अधिकारी भी शामिल हैं। पहली लिस्ट रविवार को 509 प्रिंसिपल की जारी हुई थी। इसके बाद सोमवार सुबह पहले 35 और फिर 68 शिक्षा अधिकारियों के ट्रांसफर किए गए। जून 2023 के बाद से शिक्षा विभाग में ट्रांसफर नहीं हुए थे। इनमें कई ऐसे भी थे, जो कांग्रेस सरकार में लगे हुए थे। इधर, इससे पहले शिक्षा विभाग की ओर से ट्रांसफर से रोक हटाने और 10 हजार टीचर के ट्रांसफर का प्रस्ताव बनाकर भेजा था। हालांकि सरकार ने इसे खारिज कर पूरा प्रशासनिक फेरबदल कर दिया है।

प्रिंसिपल ट्रांसफर की एक और लिस्ट सोमवार सुबह जारी की गई। इस लिस्ट पर माध्यमिक शिक्षा निदेशक के ई-साइन देर रात तीन बजे हुए हैं। ये लिस्ट सोमवार अल सुबह सार्वजनिक हुई। इसमें 35 प्रिंसिपल को पोस्टिंग दी गई है। इसमें 23 प्रिंसिपल वे हैं, जिन्हें अलग-अलग कारणों से एपीओ किया गया था। वहीं चार प्रिंसिपल का ट्रांसफर संशोधित किया गया है। इन्हें स्कूल से स्कूल में ही लगाया गया है। इसमें बीकानेर के महारानी स्कूल की प्रिंसिपल शारदा पहाड़िया भी शामिल हैं। जिन्हें पहले देशनोक लगाया गया था, लेकिन अब बीकानेर शहर में ही उस्तों की बारी स्कूल में प्रिंसिपल लगाया गया है। इसके बाद तीसरी लिस्ट सुबह साढ़े छह बजे जारी हुई है। इसमें बीकानेर और अजमेर के राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षण संस्थान (टीटी कॉलेज) में जिला शिक्षा अधिकारी, प्रिंसिपल और लेक्चरर लगाए गए हैं।

बिजली का पोल गिरने से बुजुर्ग की मौत

टोंक, (निसं)। कोतवाली थाना क्षेत्र के बड़ा कुआं, पीली हवेली के पास रविवार को पेड़ काटते समय पेड बिजली के तारों पर गिरने से बिजली पोल टूट कर नीचे किराना दुकान पर खड़े बुजुर्ग के सिर पर गिर गया, जिससे बुजुर्ग का सिर फटने से उसकी मौत हो गई।

थाना कोतवाली प्रभारी भंवरलाल वैष्णव ने बताया कि पीली हवेली निवासी अबरार अहमद (72) जो किराने की दुकान पर घरेलू सामान लेने गया था, तभी दुकान के पास काटा जा पेड़ बिजली की लाइन के तार जर्जर पड़े बिजली के पोल आ गिरा तभी पोल टूटकर अबरार अहमद के सिर पर गिर पड़ा, जिससे उसका सिर फट गया। जिसे परिजनों और मोहल्लेवासियों ने अस्पताल पहुंचाया, लेकिन जयपुर ले जाते समय रास्ते में उसकी मौत हो गई। वहीं मृतक के परिजनों ने मामले की रिपोर्ट दर्ज कराकर घटना में बिजली निगम की लापरवाही का आरोप लगाया है, जहां परिजनों ने मुआवजा देने और लापरवाही करने वाले अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

पर्यावरणीय स्वीकृति हेतु लोक सुनवाई के लिए आम सूचना

विषयः- मैसर्स गीतांजलि स्टील प्राइवेट लिमिटेड, निकट ग्राम गढ़ तकनेट, तहसील श्रीमाधोपुर, जिला सीकर में प्रस्तावित धातुकर्म उद्योग (लौह और अलौह), खनिज लाभकारीकरण, ताप विद्युत संयंत्र परियोजना हेतु पर्यावरण स्वीकृति के लिए लोक सुनवाई।

1. **सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक मैसर्स गीतांजलि स्टील प्राइवेट लिमिटेड द्वारा प्रस्तावित धातुकर्म उद्योग (लौह और अलौह), खनिज लाभकारीकरण, ताप विद्युत संयंत्र परियोजना जोकि, निकट ग्राम गढ़ तकनेट, तहमील श्रीमाधोपुर, जिला सीकर** में स्थित है से संबंधित प्रार्थना पत्र मय दस्तावेज पर्यावरणीय स्वीकृति से पूर्व आवश्यक लोक सुनवाई हेतु प्रस्ताव राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मण्डल (यहाँ तथा बाद में मण्डल के नाम से अभिलिखित) को प्रस्तुत किया गया है।
2. और चूंकि **मैसर्स गीतांजलि स्टील प्राइवेट लिमिटेड,** ने राजस्थान राज्य प्रदूपण नियंत्रण मण्डल को उक्त परियोजना की पर्यावरणीय स्वीकृति से पूर्व आवश्यक परियोजना की लोक सुनवाई हेतु मण्डल को आवेदन प्रस्तुत किया है। उक्त परियोजना हेतु वन एव पर्यावरण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा जारी अधिसूचना संख्या एस. ओ. 1533 दिनांक 14.09.2006 ओर एस.ओ. 141 ई दिनांक 15.01.2016 के प्रावधानों के अनुसरण में जन सुनवाई हेतु **इस आशय की सूचना जारी कर 30 दिवस का नोटिस दिया जाना आवश्यक है।**
3. **उक्त परियोजना से सम्बंधित मंक्षिप्त अभिलेख (कार्यकारी मारांश) एवं संस्तिप कार्यपालक मार अभिलेख निम्न कार्यालयों में अवलोकनार्थ उपलब्ध हैः-**
   - i. **जिला कलक्टर, सीकर।**
   - ii. **अतिरिक्त जिला कलेक्टर, नीमकाथाना, जिला सीकर।**
   - iii. **राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मण्डल मुख्यालय 4, संस्थानिक क्षेत्र झालाना डूंगरी, जयपुर।**
   - iv. **क्षेत्रीय कार्यालय, वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार, ए-218, अरण्यभवन झालाना संस्थानिक क्षेत्र जयपुर।**
   - v. **महा प्रबन्धक, जिला उद्योग केंद्र, सीकर।**
   - vi. **उपखण्ड अधिकारी श्रीमाधोपुर, जिला सीकर।**
   - vii. **क्षेत्रीय प्रबंधक रीको, सीकर।**
   - viii. **ग्राम पंचायत, गढ़ तकनेट, तहसील श्रीमाधोपुर, जिला सीकर।**
   - ix. **राजीव गाँधी मेसेवा केंद्र, ग्राम गढ़ तकनेट, तहसील श्रीमाधोपुर, जिला सीकर।**
   - x. **निदेशक, पर्यावरण विभाग, कमरा मंख्या 8240 द्वितीय तल, 3-प (एमएमओ) भवन, सचिवालय, जयपुर।**
   - xi. **क्षेत्रीय अधिकारी, राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मण्डल मीकर जिला सीकर।**

अतः सर्वसाधारण को कार्यालय जिला कलक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट, सीकर के पत्र क्रमांक 2461 दिनांक 25.07.2025 के क्रम में इस आम सूचना के माध्यम से एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि उक्त परियोजना की पर्यावरणीय स्वीकृति से संबंधित जन सुनवाई हेतु **दिनांक 10.09.2025 (बुधवार) को प्रातः 11:30 बजे, स्थान-राजीव गांधी सेवा केन्द्र, ग्राम गढ़ तकनेट, तहसील श्रीमाधोपुर एवं जिला सीकर** में उपस्थित होकर अपने लिखित / मौखिक आक्षेप / सुझाव प्रस्तुत कर सकते है।

साथ ही इस सम्बन्ध में लिखित सुझाव/आपत्ति इस सूचना के प्रकाशन की तिथि से 30 दिवस के अन्दर क्षेत्रीय कार्यालय राजस्थान राज्य प्रदूषण मण्डल, सीकर जिला सीकर में दिये जा सकते है। यह आम सूचना वैशिक महामारी कोविड-19 से सम्बंधित केंद्रीय/राज्य सरकार द्वारा समय-समय पर पारित निर्देशों के अनुरूप एवं अधीन रहेगी तथा सभी प्रावधानो/सावधानियो की पालना सुनिश्चित करनी होगी।

क्षेत्रीय अधिकारी
राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मंडल, सीकर

तीस हजार की रिश्वत लेते झालावाड़ नगर परिषद का बाबू व दलाल गिरफ्तार

झालावाड़, (निसं)। झालावाड़ नगर परिषद में भ्रष्टाचार का सनसनीखेज मामला सामने आया है। मामले में भ्रष्टाचार निरोधक विरुद्ध द्वारा नगर परिषद के सभापति संजय शुक्ला भी आरोपी बनाए गए हैं। वहीं नगर परिषद के बाबू आकाश कलोसिया एवं दलाल अजय को रंगे हाथों गिरफ्तार किया है।

एसीबी झालावाड़ की एडिशनल एसपी प्रेरणा शेखावत ने बताया कि एसीबी मुख्यालय के निर्देश पर एसीबी की झालावाड़ चौकी द्वारा कार्रवाई करते हुये संजय शुक्ला सभापति नगर परिषद झालावाड़ के कहने पर आकाश कलोसिया कनिष्ठ सहायक एवं अजय कुमार प्राइवेट व्यक्ति को परिवादी से 30 हजार रूपये रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार किया है।

मामले में आरोपी झालावाड़ नगर परिषद का सभापति संजय शुक्ला फिलहाल फरार है। एसीबी एडिशनल एसपी ने बताया कि शुक्ला के पीछे उनकी टीम में लगी हुई है तथा लोकेशन ट्रेस करके शीघ्र गिरफ्तार किया जाएगा। एडिशनल एसपी ने बताया कि परिवादी द्वारा गत 21 जुलाई को शिकायत दी गई कि, प्रार्थी की गांव मुण्डेरी में भूमि स्थित है, जिसका खसरा नम्बर 380 है। जमीन को पर्यटन ईकाई भवन (मोटेल) में कन्वर्जन हेतु पट्टे की फाईल नगर परिषद झालावाड़ में गत 4 वर्षों से पेंडिंग पड़ी है। जिसकी पॉवर ऑफ अटर्नी मेरे नाम है, जिसकी 90ए की कार्यवाही सहित आयुक्त के हस्ताक्षर होकर समस्त राशि जमा करवा रखी है। जिस पर पट्टा जारी

एसीबी टीम ने नगर परिषद झालावाड़ का बाबू व दलाल को रिश्वत लेते हुए गिरफ्तार किया।

- **मामले में आरोपी परिषद सभापति संजय शुक्ला फरार, एसीबी टीम तलाश में लगी हुई है**
- **पट्टा जारी करने की फाइल पर हस्ताक्षर करने के लिये 50 हजार रूपये की मांग की**

करने के लिये सभापति संजय शुक्ला के हस्ताक्षर होना शेष है। उक्त फाईल पर हस्ताक्षर के लिये परिवादी सभापति संजय शुक्ला से मिला तो उन्होंने हस्ताक्षर करने के लिये 50 हजार रूपये की मांग की। शिकायत पर रिश्वत मांग का सत्यापन करवाने पर परिवादी के अनुग्रह पर आरोपी संजय शुक्ला सभापति द्वारा 40 हजार रूपये कागज पर लिखकर परिवादी को बताया, परन्तु परिवादी ने सभापति से कहा कि मैं 30 हजार रूपये ही दूंगा। इस पर सभापति ने आकाश कनिष्ट सहायक से मिलने के लिये कहा। परिवादी आरोपी आकाश कलोसिया से मिला तो उसने कहा कि मेरे पास सभापति का कॉल आया था, उन्होंने 40 हजार रूपये की कहा है, मैं सभापति संजय शुक्ला से पूछकर उनके बताये अनुसार व्यक्ति को रूपये दिलवाऊंगा। रिश्वत की मांग का सत्यापन होने के पश्चात एसीबी झालावाड़ द्वारा सोमवार को ट्रेप कार्यवाही कर संजय शुक्ला सभापति नगर परिषद झालावाड़ के बताये अनुसार आकाश कलोसिया कनिष्ठ सहायक ने अजय कुमार मारवाड़ा टैन्ट हाउस को 30 तीस हजार रूपये रिश्वत राशि दिलवाई, जिस पर अजय कुमार प्राईवेट व्यक्ति को रंगे हाथों पकड़ा गया। आरोपी के घर की तलाशी जारी है। एसीबी द्वारा मामले में भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के अन्तर्गत प्रकरण दर्ज कर अनुसंधान किया जायेगा।

बिच्चून क्षेत्र में पकड़ी बिजली चोरी

जयपुर। अधीक्षण अभियंता (सतर्कता) बी.एल.शर्मा एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (सतर्कता) महेंद्र कुमार शर्मा के निर्देशन में जयपुर डिस्कॉम, जयपुर की सहायक अभियंता (सर्तकता) निशी कुमारी मय तकनीकी कर्मचारी मुकेश वर्मा व राकेश कुमार एवं ए.पी.टी.पी.एस. थाना स्टाफ द्वारा सोमवार को बिच्चून उपखंड क्षेत्र में सतर्कता जांच के दौरान बोराज में परिसरों की जाँच की गयी ।

एक अघरेलु श्रेणी व तीन घरेलु श्रेणी उपभोक्ता विद्युत के एलटी पोल से अवैध के द्वारा सीधे लोड लाइन में जोड़कर विद्युत की चोरी करते पाये गये तथा एक अघरेलु श्रेणी का उपभोक्ता विद्युत का अनाधिकृत उपभोग करता पाया गया, जिनकी मौके पर वीसीआर भरी गई एवं कनेक्शन काटकर अवैध तार व विद्युत मीटर जब्त किये गये।

अधीक्षण अभियंता (सतर्कता) ने बताया कि इन कुल पांच मामलो में रू 7.81 लाख का जुर्माना लगाया गया है व मौके पर विद्युत कनेक्शन काटकर राजस्व वसूली की कार्यवाही जारी है, यदि उपभोक्ता द्वारा जुर्माना राशि निर्धारित समयावधि में जमा नही करवायी जाती है तो उनके विरुद्थ विद्युत् चोरी निरोधक पुलिस थाने में मुकदमा दर्ज करवाया जावेगा।

स्वायत्त शासन विभाग के शासन सचिव ने क्षेत्रों का किया निरीक्षण

जयपुर। स्वायत्त शासन विभाग के शासन सचिव रवि जैन ने सोमवार को जयपुर नगर निगम हैरिटेज एवं ग्रेटर क्षेत्र के विभिन्न मार्गों, बाजारों और सार्वजनिक स्थलों का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने नालों की सफाई, सार्वजनिक स्थानों पर स्वच्छता की स्थिति तथा जर्जर भवनों की पहचान एवं चिन्हांकन कार्यों की गहन समीक्षा की।

निरीक्षण के दौरान जैन सचिवालय से प्रस्थान कर स्टेच्यू सर्किल, गवर्नमेंट हॉस्टल, एम.आई. रोड, रेलवे स्टेशन क्षेत्र, हसनपुरा पुलिया, खातीपुरा, झोटवाड़ा रोड होते हुए ग्रेटर नगर निगम क्षेत्र में ग्रेनेड मार्ग, वैशाली नगर स्कीम, गौतम मार्ग ,विजय द्वार और गांधी पथ वेस्ट तक पहुंचे। उन्होंने इन क्षेत्रों में सफाई व्यवस्था, नालों की स्थिति, सड़क किनारे कचरा निस्तारण, अतिक्रमण की स्थिति और सार्वजनिक उपयोग के स्थलों की सफाई व्यवस्था का गहन अवलोकन किया। जैन ने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि सभी नालों की समुचित सफाई तत्काल सुनिश्चित की जाए ताकि जलभराव की स्थिति न बने। उन्होंने कहा कि प्रत्येक दुकान के सामने डस्टबिन

शासन सचिव रवि जैन (बीच में) ने सार्वजनिक स्थानों पर स्वच्छता की स्थिति तथा जर्जर भवनों की पहचान एवं चिन्हांकन कार्यों की।

रखना अनिवार्य किया जाए और इसका पालन न करने वालों के विरुद्ध कार्रवाई की जाए। निरीक्षण के दौरान कई स्थानों पर चिन्हित जर्जर भवनों को देखा गया, जिनके संबंध में उन्होंने निर्देश दिए कि इन भवनों का त्वरित अतिक्रमण हटाकर विधिसम्मत ढंग से ध्वस्तीकरण कराया जाए। साथ ही उन्होंने यह भी निर्देशित किया कि जिन दुकानों एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों द्वारा स्वच्छता नियमों का पालन नहीं किया जा रहा है, उनके विरुद्ध तत्काल चालान जारी किए जाएं।

इस निरीक्षण के दौरान सफाई में लापरवाही बरतने पर कुछ ढाबा संचालकों एवं दुकानदारों पर मौके पर ही जुर्माना भी लगाया गया। जैन ने नगर निगम के अधिकारियों को निर्देशित किया कि राज्य सरकार की मंशा के अनुरूप स्वच्छता के प्रति गंभीरता को समझते हुए ज़मीनी स्तर पर प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए और किसी भी स्तर पर लापरवाही

- स्वच्छता सुनिश्चित करने और अतिक्रमण हटाने के दिए सख्त निर्देश
- जैन ने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि सभी नालों की समुचित सफाई तत्काल सुनिश्चित की जाए ताकि जलभराव की स्थिति न बने

को बर्दाश्त न किया जाए। जैन ने आमजन से भी अपील की कि वे शहर की स्वच्छता और सुंदरता बनाए रखने में सक्रिय भागीदारी निभाएं और एक जिम्मेदार एवं जागरूक नागरिक की भूमिका निभाएं।

इस दौरान स्वायत्त शासन विभाग के निदेशक प्रतीक जुईकर, नगर निगम हेरिटेज आयुक्त डॉ निधि पटेल, ग्रेटर आयुक्त डॉ गौरव सैनी सहित संबंधित क्षेत्र के उपायुक्त व अभियंता उपस्थित रहे ।

सावन के अंतिम सोमवार को किया विशेष रुद्राभिषेक

जयपुर। श्रावण मास के अंतिम सोमवार को जयपुर के भवानी सिंह रोड स्थित वेद पणिग्रह में एक विशेष रुद्राभिषेक साधना का आयोजन किया गया। इस पावन अवसर पर प्रसिद्ध मेडिटेशन एक्सपर्ट निर्मला सेवानी ने साधकों के साथ मिलकर यह आध्यात्मिक साधना संपन्न कराई। यह रुद्राभिषेक केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं था, बल्कि एक ऐसी आंतरिक यात्रा थी जिसमें साधकों ने ध्यान और मंत्रों के माध्यम से अपने भीतर के अंधकार को हटाकर शिव की ऊर्जा और प्रकाश का अनुभव किया।

साधना के दौरान जल, दूध, मधु और पुष्प के साथ शिव का अभिषेक किया गया, लेकिन इसके साथ-साथ साधकों ने अपने अहंकार, भ्रम और नकारात्मकता को भी छोड़ने का प्रयास किया।

मंत्रों की गूंज और ध्यान की गहराई ने साधकों को उनके भीतर के चक्रों (ऊर्जा केंद्रों) से जोड़कर एक अद्भुत आत्मिक अनुभव प्रदान किया। निर्मला सेवानी ने बताया कि श्रावण मास शिव को समर्पित है और इस समय भगवान

- प्रसिद्ध मेडिटेशन एक्सपर्ट निर्मला सेवानी ने साधकों के साथ मिलकर यह आध्यात्मिक साधना संपन्न कराई

शिव अपने भक्तों की हर मनोकामना पूर्ण करने वाले कुबेर स्वरूप में माने जाते हैं।

माँ पार्वती की कृपा से शिव इस समय जल्दी प्रसन्न होते हैं और अपने भक्तों को सुख, शांति और समृद्धि प्रदान करते हैं।

साधना स्थल को विशेष रूप से धूप, दीप, नाद (ध्वनि), गंध और शुद्ध वातावरण से तैयार किया गया था, जिससे साधकों को शांति और ऊर्जा का गहरा अनुभव हुआ। इस आयोजन का उद्देश्य केवल पूजा करना नहीं था, बल्कि भीतर के अज्ञान और अंधकार को दूर कर आत्मप्रकाश की ओर बढ़ना था। महामारी के बाद इस तरह की साधनाएँ लोगों को आंतरिक स्थिरता और शांति देने का काम कर रही हैं।

चोरी करने वाली शातिर गैंग का बदमाश गिरफ्तार

जयपुर। जवाहर नगर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए रैकी कर वाहन व नगदी लूटने व चोरी करने वाली शातिर गैंग के एक बदमाश को धर-दबोचा है। वहीं शेष तीन बदमाशों की तलाश की जा रही है। पुलिस जांच में सामने आया कि आरोपित काम मांगने व्यवसायी के पास जाकर जानकारी कर रेकी व पीछा कर लूटपाट और चोरी करते है। फिलहाल आरोपित से पूछताछ की जा रही है।

पुलिस उपायुक्त जिला जयपुर पूर्व संजीव नैन ने बताया कि जवाहर नगर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए रैकी कर वाहन व नगदी लूटने व चोरी करने वाली शातिर गैंग के शातिर बदमाश मोहम्मद अमन इस्लाम उर्फ अमन निवासी शास्त्री नगर को गिरफ्तार किया है। पुलिस जांच में सामने आया कि आरोपित मोहम्मद अमन इस्लाम उर्फ अमन ने कपड़ों का काम किया था उसके बाद काम छोड़ दिया और दूसरी जगह काम करने लग गया। अमन व उसके दोस्त रईस, तौहीद व अनस को घूमने फिरने और रात्रि में क्लब में जाकर मौज मस्ती करने का शौक था ।

राष्ट्रीय अंगदान दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

जयपुर। राष्ट्रीय अंगदान दिवस के उपलक्ष्य में मोहन फाउंडेशन जयपुर सिटीजन फ़ोरम द्वारा अंगदान के प्रति जागरूकता फैलाने और अंगदाताओं को श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत प्रातः गणेश पूजन के साथ हुई, जिसमें एमएफजेसीएफ की संयोजिका भावना जगवानी, संस्था के कर्मचारीगण एवं कोर ग्रुप के सदस्यगण उपस्थित रहे। इस पावन अवसर पर सभी ने मिलकर अंगदान जैसे पुण्य कार्य की सफलता हेतु प्रार्थना की।

गणेश पूजन के पश्चात सभी सदस्य अंगदाता स्मारक, सेंट्रल पार्क के निकट पहुंचे, जहां अंगदान करने वाले महापुरुषों को पुष्पांजलि अर्पित की गई। इस भावुक क्षण में उनके परिजनों को सम्मानित भी किया गया। सम्मान स्वरूप उन्हें एक विशेष दुपट्टा पहनाया गया और "हमें अंगदाता परिवार होने पर गर्व है" अंकित एक पट्टिका भेंट की गई। यह पट्टिका वे अपने घर के बाहर मुख्य द्वार पर लगाएंगे, जिससे आने-जाने वाले लोग इसे देखकर अंगदान के

- कार्यक्रम में एमएफजेसीएफ की संयोजिका भावना जगवानी, संस्था के कर्मचारीगण एवं कोर ग्रुप के सदस्यगण उपस्थित रहे
- गणेश पूजन के पश्चात सभी सदस्य अंगदाता स्मारक पर महापुरुषों को पुष्पांजलि अर्पित की

प्रति प्रेरित हो सकें। इस अभिनव पहल का उद्देश्य समाज में अंगदान को लेकर सकारात्मक दृष्टिकोण बनाना, लोगों को इसके प्रति जागरूक करना तथा अंगदाताओं और उनके परिवारों के त्याग को जन-जन तक पहुँचाना है।

एमएफजेसीएफ का यह सतत प्रयास है कि हर नागरिक अंगदान को जीवनदान समझे और इस पुनीत कार्य में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करे।

विवाहिता से दुष्कर्म

जयपुर। करधनी थाना इलाके में पड़ोसी युवक ने विवाहिता से दुष्कर्म किया और अपने ही दोस्त को मकान के बाहर निगरानी में खड़ा कर दिया। विरोध करने पर आरोपी गाली-गलौच करता हुआ बाहर निकल गया। जिसके बाद निगरानी कर रहे दोस्त ने भी विवाहिता के साथ जोर- जबरदस्ती की। आरोपियों चुगंल से मुक्त होने के बाद पीड़िता थाने पहुंची और मामले की जानकारी पुलिस को दी। पुलिस ने बयानों के आधार पर दोनो बदमाशों के खिलाफ दुष्कर्म का मामला दर्ज कर उनकी तलाश शुरु कर दी है।

पुलिस ने बताया कि थाना इलाके में रहने वाली 21 वर्षीय विवाहिता का आरोप है कि पड़ोसी होने के कारण आरोपी से बातचीत होती रहती थी। 31 जुलाई को परिवार के सभी लोग काम पर गए हुए थे। तभी आरोपी उसे अकेला पाकर दोपहर डेढ़ बजे अपने दोस्त के साथ आया और दोस्त को मकान के बाहर निगरानी में खड़ा कर दिया। आरोपी ने घर के अंदर आकर उसके साथ जबरन दुष्कर्म किया। विरोध करने पर आरोपी ने गाली-गलौच करते हुए उसे जान से मारने की धमकी दी और बाहर चला गया। तभी निगरानी कर रहा दूसरा युवक भी अंदर आया और उसके साथ जबरदस्ती की। पुलिस ने बयानों के आधार पर दोनो आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर तलाश शुरु कर दी है।

बीस हजार के इनामी अपराधी समेत ग्यारह बदमाश गिरफ्तार

जयपुर । राजस्थान पुलिस की एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स (एजीटीएफ) ने हनुमानगढ़ पुलिस के साथ मिलकर संयुक्त ऑपरेशन में ग्यारह आरोपितों को गिरफ्तार किया गया है, जिनमें बी हजार रुपये का इनामी अपराधी भी शामिल है। पुलिस ने इन बदमाशों के पास से छह अवैध देसी पिस्टल और तीन कारतूस भी बरामद किए हैं।

गौरतलब है कि एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स टीम द्वारा गत दिनों जिला पुलिस प्रतापगढ के साथ मिलकर पुलिस थाना छोटी सादडी मे 14 अवैध हथियार व 1860 कारतूस सहित अवैध हथियार व कारतूस सप्लायरो की चैन को तोडते हुये कुल 11 आरोपितों को गिरफ्तार करवाया था। गिरफ्तार किए गए आरोपियों में पवन कुमार पर लूट, धमकी, मारपीट के मामले में हनुमानगढ़ पुलिस ने 20 हजार रुपये का इनाम घोषित किया था। पवन कुमार पुत्र साहब राम नायक मोहनमगरिया का निवासी है। उसके खिलाफ डकैती, हत्या के

पुलिस ने संयुक्त ऑपरेशन में ग्यारह आरोपितों को गिरफ्तार किया ।

प्रयास, दंगा, अवैध हथियार, चोरी, लूट और आपराधिक धमकी जैसे गंभीर अपराधों में 18 से अधिक मामले दर्ज हैं। वह कई सालों से फरार चल रहा था। गिरफ्तार किए गए अन्य आरोपी मूसे खांन पुत्र रशीद खांन निवासी वार्ड नंबर 4 पीरकामडिया थाना टिब्बी, सतवीर पुत्र गुरमेल सिंह निवासी वार्ड नंबर 1 सिलवाला कलां थाना तलवाड़ा, अमनदीप सिंह उर्फ राजा पुत्र सुखचैन सिंह बराड़ निवासी वार्ड नंबर 5 शाहपीनी थाना संगरिया, असलम पुत्र अल्लादिया निवासी पीरकामडिया थाना टिब्बी, सुरेन्द्र उर्फ टोनी पुत्र रामकुंवर जाट निवासी चोहिलावाली, जगतार उर्फ काला सिंह पुत्र सोहन सिंह बाजीगर निवासी वार्ड नंबर 11 गुरूसर, वेदप्रकाश उर्फ वेदू जाट पुत्र जगदीश निवासी वार्ड 14 चक 10 एसएसडब्लू गुरूसर को गिरफ्तार किया।

267 यूनिट रक्तदान कर जलदाय कर्मचारियों ने दी श्रृद्धांजलि

जयपुर। राजापार्क स्थित भाटिया भवन पर जलदाय विभाग के पहले लोकप्रिय कर्मचारी नेता स्व. मांगीलाल शर्मा जी की 32वीं पुण्यतिथि के अवसर पर एक भव्य रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। इस आयोजन में सैकड़ों की संख्या में जलदाय विभाग के कर्मचारियों, अधिकारियों, खिलाड़ियों एवं आम नागरिकों ने भाग लिया और 267 यूनिट रक्तदान कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

यह आयोजन पीएचईडी स्पोर्ट्स क्लब एवं जलदाय विभाग कर्मचारी यूनियन द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया। कार्यक्रम के आयोजन में प्रमुख भूमिका निभाने वाले यूनियन संरक्षक जे.पी. शर्मा, प्रदेशाध्यक्ष संजय सिंह शेखावत, प्रदेश कोषाध्यक्ष एवं जिला अध्यक्ष ताराचंद सैनी टैक्सी यूनियन अध्यक्ष फूलचंद गुर्जर, सलाहकर रामाशंकर गुर्जर ने बताया कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्रद्धांजलि स्वरूप यह आयोजन किया गया।

जबरन जमीन अवाप्ति के विरोध में चल रहे अनिश्चितकालीन धरना जारी

जयपुर। हरमाड़ा स्थित ग्राम नींदड़ में जेडीए व सरकार की जबरन जमीन अवाप्ति के विरोध में चल रहे अनिश्चितकालीन धरने के 256 वे दिन सोमवार सुबह 7 बजे धरनास्थल पर डॉ. नगेन्द्र सिंह शेखावत के नेतृत्व में किसानों व कॉलोनीवासियों की मीटिंग हुई, जिसमें सैकड़ो की संख्या में किसान महिलाएं व पुरुष एकत्र हुए।

मीटिंग में सर्व सम्मति से निर्णय किया गया कि नगरीय विकास मंत्री झाबर सिंह खर्रा ने नींदड़ बचाओ युवा किसान संघर्ष समिति के पांच सदस्यों को सोमवार 4 अगस्त 2025 को वार्ता के लिए बुलाया था। समिति सदस्यों व किसानों ने कहा कि हम सभी मंत्री के आवास पर जाएंगे एवं मंत्री के साथ वार्ता हमारे पांच सदस्य कर लेंगे लेकिन हम सब मंत्री के यहां साथ जाएंगे इस निर्णय के पश्चात सभी किसान व कॉलोनीवासी तकरीबन 10 बसों में बैठकर मंत्री से मिलने के लिए रवाना हो गए समिति के इस निर्णय से पुलिस प्रशासन के हाथ-पांव फूल गए एवं पुलिस प्रशासन ने सभी मिनी बसों को खासा कोठी सर्किल के पास ही रुकवा लिया एवं किसानों को जबरदस्ती बसों से उतर कर बसों को रवाना करवा दिया, किसानों ने खासा कोठी सर्किल पर ही धरना देकर सरकार व मंत्री के खिलाफ नारेबाजी एवं प्रदर्शन शुरू कर दिया। किसानों के उग्र प्रदर्शन को देखकर पुलिस के उच्च अधिकारियों ने संघर्ष समिति के संयोजक डॉ. नगेन्द्र सिंह शेखावत से समझाइस की इसके पश्चात सभी किसान डॉ नगेन्द्र सिंह शेखावत के नेतृत्व में पैदल ही नारे लगाते हुए शहीद स्मारक के लिए रवाना हुए एवं शहीद स्मारक पर पहुंचकर धरना प्रदर्शन शुरू कर दिया। शहीद स्मारक पर धरने को संबोधित करते हुए संघर्ष समिति के संयोजक डॉ. नगेन्द्र सिंह शेखावत ने कहा कि आज देश लोकतंत्र से चल रहा है।

सावन उत्सव-लहरिया थीम में रंगेगा राजस्थान का रंग

जयपुर। राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और परंपरा को समर्पित सावन उत्सव का आयोजन छह अगस्त (बुधवार)को हीरा वैली रिसोर्ट स्वेज फार्म सोडाला में किया जाएगा। इस विशेष आयोजन की थीम राजस्थान का पारंपरिक लहरिया होगी, जो सावन के मौसम में खास महत्व रखता है।

नृत्यम फाउंडेशन की अध्यक्ष एवं प्रसिद्ध समाज सेविका और कार्यक्रम आयोजिका काजल सैनी ने बताया कि इस कार्यक्रम में रंग-बिरंगे लहरिये, पारंपरिक परिधानों, लोक-संगीत और लोकनृत्य प्रस्तुतियों के माध्यम से सावन के मौसम और राजस्थान की लोक संस्कृति की झलक पेश की जाएगी। सावन के गीतों और नृत्य के साथ यह उत्सव माहौल को पूरी तरह पारंपरिक रंग में रंग देगा। यह उत्सव न केवल मनोरंजन का माध्यम होगा बल्कि पारंपरिक कला और संस्कृति को बढ़ावा देने का प्रयास भी करेगा।

सांस्कृतिक विरासत और परंपरा को समर्पित सावन उत्सव के पोस्टर का विमोचन किया।

सैनी ने बताया कि लहरिया राजस्थान की पहचान मानी जाने वाली एक पारंपरिक बंधेज कला है, जो बारिश के मौसम में रिमझिम फुहारों के साथ लोकजीवन में खास रंग भरती है। इस बार का आयोजन इसी थीम को केंद्र में रखकर तैयार किया गया है, ताकि शहरवासी राजस्थान की परंपरा और संस्कृति से रूबरू हो सकें।

इस कार्यक्रम से पूर्व सभी प्रतिभागियों को डांस ट्रेनिंग दी गई है, जिसके माध्यम से वे अपनी प्रस्तुति को और भी प्रभावशाली बना सकेंगी। यह प्रशिक्षण छह अगस्त को मंचित होने वाली

- रंग-बिरंगे लहरिये, पारंपरिक पोशाकें, लोक-संगीत और लोक नृत्य से सजेगा उत्सव
- छह अगस्त को हीरा वैली रिसोर्ट स्वेज फार्म सोडाला पर होगा यह आयोजन

प्रस्तुतियों का हिस्सा होगा। काजल सैनी ने बताया कि सावन उत्सव सिर्फ एक मनोरंजन कार्यक्रम नहीं, बल्कि राजस्थान की पारंपरिक कला और संस्कृति को संरक्षित एवं बढ़ावा देने का एक प्रयास है। इसमें स्थानीय कलाकारों और शिल्पकारों को मंच देने के साथ-साथ सांस्कृतिक धरोहर को नई पीढ़ी तक पहुँचाने का उद्देश्य भी निहित है। सावन का महीना राजस्थान में उमंग और मेल-मिलाप का प्रतीक है।

इस तरह के आयोजन न केवल सामाजिक जुड़ाव को बढ़ाते हैं बल्कि लोककला, पारंपरिक परिधान और संगीत के संरक्षण में भी अहम भूमिका निभाते हैं।प्रवासी संघ राजस्थान प्रदेश संयोजक और कार्यक्रम संयोजक भीम सिंह कासनिया छह अगस्त (बुधवार) आयोजित होने वाले राजस्थान की पारंपरिक लहरिया थीम आधारित सावन उत्सव की तैयारियों के तहत पोस्टर विमोचन किया गया। इस अवसर पर प्रदेश और शहर की कई जानी-मानी हस्तियां एवं कई जनप्रतिनिधि सहित डॉ. अर्चना भार्गव, सत्यनारायण सैनी, संजय कुमार योगी,मधुर सैनी, डॉ.मनीषा सोलंकी,मनोज कुमार योगी, जेपी चौधरी,शुभम शर्मा, सुमित कुमार टांक, नवीता महरवाल और मालाबार सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी से भागवत ब्रह्मचारी की भेंट

जयपुर। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी से आज गीता ज्ञान के बाल प्रणेता भागवत ब्रह्मचारी जी ने सुसंवाद किया। मात्र 5 वर्ष की आयु में आध्यात्मिक चेतना के वाहक बने भागवत ब्रह्मचारी ने इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री को श्रीमद्भगवद्गीता के कई श्लोक मधुर स्वर में सुनाए।

ब्रह्मचारी ने अर्जुन और भगवान श्रीकृष्ण के मध्य हुए महाभारतकालीन संवादों के माध्यम से गीता के गूढ़ तत्वों की व्याख्या की और सनातन संस्कृति के महत्व पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने श्रीमद्भगवद्गीता के शाश्वत संदेश, जैसे कर्तव्य, भक्ति, ज्ञान और आत्मा की अमरता जैसे विषयों पर अपने विचार साझा किए।

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने बाल संत की आध्यात्मिक गहराई, संस्कृत शुद्धता और वेदांत बोध से प्रभावित होकर उनकी सराहना की और कहा कि ऐसे बच्चे भारत की आध्यात्मिक परंपरा के सच्चे संवाहक हैं।

सार-समाचार

वार्ड 48 के पार्क में लगेगा टीन शेड

जयपुर। ग्रेटर नगर निगम के वार्ड 48 स्थित जनक विहार भोमिया जी मंदिर पार्क में टीनशेड के कार्य का शुभारंभ हुआ।कैबिनेट मंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ के द्वारा 24 लाख की सौग़ात मंदिर पार्क के विकास के लिए दी गई थी। इसके तहत रविवार को पार्षद कुमकुम शक्तिसिंह मानपुरा ने जनक विहार पार्क में श्रद्धालुओं के लिए धूप और बारिश से बचाव के लिए टीनशेड के कार्य का शुभारंभ किया। इस मौक़े पर जनक विहार विकास समिति के अध्यक्ष नंद सिंह राणावत, महामंत्री नितेश शर्मा, बाबू सिंह राठौड़, प्रताप सिंह राजावत, बलवंत सिंह भाटी,अजय अग्रवाल, मुकेश कुमावत, तेजवीर सिंह, किशन लाल महला, मनीष शर्मा, अनिल योगी और सैकड़ों की संख्या में मातृ शक्ति उपस्थित रही।

बच्चों ने किया अंतरिक्ष अन्वेषण

जयपुर। रेनबो स्कूल जयपुर ने बच्चों के जिज्ञासु मन को अंतरिक्ष के चमत्कारों की ओर प्रेरित करने के लिए 01 अगस्त 2025 को एक आकर्षक मोबाइल तारामंडल शो का आयोजन किया। इस शो में सौर मंडल, नक्षत्रों और विभिन्न अंतरिक्ष संगठनों द्वारा हाल ही में किए गए अभियानों सहित ब्रह्मांड की विभिन्न आकर्षक विशेषताओं पर एक गतिशील प्रस्तुति दी गई। तारामंडल के गुंबद ने ब्रह्मांड का एक यथार्थवादी प्रस्तुतीकरण प्रस्तुत किया, जिससे यह सत्र शिक्षाप्रद और रोमांचक दोनों बन गया। यह एक बड़ी सफलता रही, जिसने युवा मन में विज्ञान के प्रति जिज्ञासा और जुनून जगाया।

राष्ट्रीय सरसों दिवस पर गाँवों को समृद्ध बनाने वाली फसल को सलाम

जयपुर। अगस्त 2025: हर वर्ष अगस्त माह के पहले शनिवार को राष्ट्रीय सरसों दिवस मनाया जाता है। ऐसे में, यह समय है उस फसल को सलाम करने का, जो हमारी थाली का स्वाद भी है और गांव की तरक़्क़ी का अहम हिस्सा भी। खासतौर पर हाइब्रिड सरसों, जो आज किसानों की मेहनत, उत्पादन क्षमता और आत्मगौरव की पहचान बन चुकी है। राजस्थान, मध्यप्रदेश और हरियाणा की सरसों की खेती से लेकर देश के हर रसोईघर तक, हाइब्रिड सरसों ने तेलहन खेती का रूप ही बदल दिया है। पारंपरिक किस्मों की तुलना में यह 16-20 प्रतिशत तक अधिक पैदावार देती है, तेल की मात्रा भी 2 से 2.5 प्रतिशत तक अधिक होती है, और किसानों की सालाना शुद्ध आय में उल्लेखनीय बढ़ोतरी होती है -ऐसे समय में, जब कई राज्यों में दामों की अनिश्चितता और फसल रोग बड़ी चुनौती बने हुए हैं, हाइब्रिड सरसों किसानों को स्थिरता और नई उम्मीद दे रही है। हाइब्रिड सरसों के लिए 5 से 25 अक्टूबर के बीच में बुवाई सबसे उपयुक्त मानी जाती है, जब खेत में नमी और तापमान अनुकूल होते हैं। इस अवधि में बोई गई हाइब्रिड सरसों ने किसानों को लगातार बेहतर लाभ दिया है। रिपोर्ट्स बताती हैं कि राजस्थान, हरियाणा और मध्यप्रदेश के वे किसान, जो समय पर बुवाई करते हैं और समुचित कृषि पद्धितयाँ अपनाते हैं, उन्हें न सिर्फ ज्यादा उपज मिल रही है, बल्कि बाजार में बेहतर दाम भी मिल रहे हैं।

रचना जिंदल सीआईआई उत्तरी क्षेत्र की क्षेत्रीय निदेशक नियुक्त

रचना जिंदल

जयपुर। भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) ने सुरचना जिंदल को अपने उत्तरी क्षेत्र का नया क्षेत्रीय निदेशक नियुक्त करने की घोषणा की है। वह चंडीगढ़ स्थित सीआईआई उत्तरी क्षेत्र मुख्यालय में कार्यरत रहेंगी और दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश और केंद्र शासित प्रदेश चंडीगढ़, जम्मू और कश्मीर तथा लद्दाख सहित प्रमुख राज्यों में सीआईआई के संचालन की देखरेख करेंगी। सुजिंदल ने 2006 में सीआईआई जोईन की थी और अपने साथ लगभग दो दशकों का व्यापक अनुभव लेकर आई हैं। पिछले कुछ वर्षों में, उन्होंने सेन्ट्रल ट्रेड फेयरस् डिविजन से अपने करियर की शुरुआत करते हुए, प्रमुख रणनीतिक पहलों को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वहाँ, उन्होंने ऑटो एक्सपो, आईएमएमई और आईआरईई सहित भारत की कुछ सबसे प्रमुख व्यापार प्रदर्शनियों के साथ-साथ एंटरप्राइज इंडिया जैसे अंतर्राष्ट्रीय शोकेस के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसका उद्देश्य भारत की वैश्विक व्यापार भागीदारी को बढ़ावा देना था अपनी वर्तमान भूमिका से पहले, वह नीति आयोग के साथ एक स्ट्रेटेजिक पार्टनरषिप का नेतृत्व कर रही थीं, जिसका फोकस देश भर में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) को डिजिटल रूप से सक्षम बनाने पर केंद्रित था - जो इस क्षेत्र में प्रतिस्पर्धात्मकता और उत्पादकता बढ़ाने के लिए एक प्रमुख पहल थी।

आर्ट ऑफ लिविंग ने मनाया फ्रेंडशिपडे

जयपुर। वैशाली नगर स्थित कैफ में 3 अगस्त को फ्रेंडशिप डे के उपलक्ष्य में आर्ट ऑफ लिविंग स्वयंसेवकों द्वारा एक मधुर कैफ़े सत्संग का आयोजन किया गया। इस सुंदर आयोजन में 200 से अधिक जयपुरवासियों ने भाग लिया और आध्यात्मिक संगीत की सुरम्य शाम का आनंद लिया।संगीत में आर्ट ऑफ लिविंग वरिष्ठ प्रशिक्षक और राष्ट्रीय गायक डॉ सौरभ शेखावत, सह-गायक अंशुल व निमिष, ड्रमिस्ट विनय और गिटारिस्ट शुभम ने अपने शानदार प्रदर्शन से सभी के मन को छू लिया। सभी प्रतिभागियों ने मिलकर दोस्ती के इस उत्सव को ध्यान, भक्ति और संगीत से खास बना दिया। इस अनोखे आयोजन के बाद अब 8 अगस्त को भी वैशाली नगर में जन्माष्टमी विशेष कैफे ग्रैंड सत्संग की तैयारियाँ ज़ोरों पर हैं। ग़ौरतलब है कि जयपुर में आर्ट ऑफ लिविंग के सत्संगों की लोकप्रियता दिन-ब-दिन बढ़ रही है। शहर के अनेक कैफ़े अब इन संगीत और ज्ञान से भरी संध्याओं की मेज़बानी कर रहे हैं, जहाँ संगीत के साथ जीवन का सार भी साझा किया जा रहा है।

ग्रेच्युटी एवं पेंशन देने की मांग

जयपुर। राजस्थान विश्वविद्यालय से सेवानिवृत हुए कर्मचारियों ने राजस्थान विश्वविद्यालय के लेखा एवं वित्त विभाग पर ग्रेच्युटी एवं पेंशन देने की मांग को लेकर कार्मिक भूख हड़ताल और धरना दे रहे हैं आज धरना सातवें दिन भी जारी रहा राजस्थान विश्वविद्यालय सेवानिवृत कर्मचारी एसोसिएशन के उपाध्यक्ष मोहम्मद मुस्तफा को बुखार हो गया, फिर भी घर जाने के लिए तैयार नहीं है उन्होंने कहा जब तक से पेंशन ग्रेच्युटी एवं अन्य परीलाभ देने का आदेश नहीं होगा तब तक आंदोलन जारी रहेगा।

सड़क की खुदाई कर मलवा वहीं छोड़ा

जयपुर। डेहर के बालाजी रेलवे स्टेशन के सामने, विवेकानन्द कालोनी जो शराब फेक्ट्री के पीछे स्थित है, वहां पर सीसी रोड बनवाने के लिए सड़क की खुदाई कर मलवा वही छोड दिया गया है जिससे गदंगी भी फेल रही है व वातावरण दूषित हो रहा है। सडक निर्माण कार्य को को शुभारंभ पार्षद सुरेश सागवन द्वारा एक माह पूर्व आयोजित समारोह में किया गया था, लेकिन लगता है ठेकेदार ने काम छोड कर स्थानीय निवासियो के भगवान भरोसे कर दिया है।

शपथ ग्रहण समारोह आयोजित

जयपुर। महिलाओं के नेतृत्व, आत्मबल और सामाजिक भागीदारी को समर्पित कार्यक्रम "शक्ति 2025" के अंतर्गत लायंस क्लब जयपुर डायमंड का शपथ ग्रहण समारोह गरिमापूर्ण ढंग से आयोजित किया गया। इस अवसर पर ममता पंचोली को क्लब की प्रेसिडेंट, प्रीती सक्सेना को सेक्रेटरी, और अनूप्रा शर्मा को कोषाध्यक्ष जैसे महत्वपूर्ण पदों की जिम्मेदारी सौंपी गई। यह नियुक्तियाँ महिला नेतृत्व की सशक्त उपस्थिति का प्रतीक बनीं। इस समारोह में महिला सशक्तिकरण की वैश्विक सोच को भी बल मिला, जब 20 देशों से आए युवा प्रतिनिधियों ने "युवा आदान-प्रदान कैंप" के माध्यम से भागीदारी की।

Digital Storytellers Who Make a Difference

Bloggers Day, celebrated annually on August 5th, honours the creativity, influence, and hard work of bloggers around the world. These digital storytellers share knowledge, opinions, and personal experiences across diverse topics, from fashion and food to technology and travel. Bloggers play a powerful role in shaping public opinion, building communities, and spreading awareness on important issues. As independent voices in the digital space, they bridge the gap between brands and audiences, often turning passions into careers. Bloggers Day is a moment to appreciate their contributions to the online world and recognize the value of authentic content in today's media landscape.

#OBITUARY

"Dishom Guru" Has Left

Shibu Soren, Tribal Leader and Former Jharkhand Chief Minister, also the rare innocent man in politics, passes away at 81

Shibu Soren, a towering figure in Indian politics and a champion of tribal rights, passed away on Monday at the age of 81. Known for his unwavering dedication to the tribal communities of eastern India, Soren was undergoing treatment for a kidney ailment in Delhi. His condition worsened after he suffered a stroke last month, and he had been on life support prior to his death.

Over a political career spanning more than four decades, Shibu Soren played a pivotal role in shaping the destiny of Jharkhand, India's tribal-dominated eastern state. As the co-founder of the Jharkhand Mukti Morcha (JMM) in 1973, Soren was at the forefront of the movement demanding the creation of a separate state for the tribal people who inhabited the southern districts of Bihar, a struggle that culminated in Jharkhand gaining statehood in 2000.

Soren's influence extended well beyond grassroots activism. He served as the Chief Minister of Jharkhand three times, although political instability prevented him from completing any of his terms. Despite this, his leadership remained a defining force in the state's political landscape. His legacy continues through his son, Hemant Soren, who is the current Chief Minister of Jharkhand and announced his father's passing. On social media, Hemant referred to his father by his revered title 'Dishom Guru,' meaning 'great leader' in Santhali, the language of the Santhal tribe, one of India's largest indigenous communities. "Our respected Dishom Guru has left us, I have nothing left," he wrote.

Prime Minister Narendra Modi paid tribute to Soren, describing him as "a grassroots leader who rose through the ranks of public life with unwavering dedication to the people." Other political leaders across party lines also expressed their condolences and acknowledged his contribution to the tribal cause and Indian politics.

Born in 1944 in a small village, in what was then Bihar (now Jharkhand), Soren's political journey began with a mission to uplift tribal populations and secure their rights. His vision was embodied in the formation of the JMM, which advocated for the cultural and political identity of the tribespeople.

Soren's political career was not without controversy. In 2004, he was appointed as India's federal Coal Minister under the Congress-led government but resigned after a conviction in a murder case. Although he was later granted bail and returned to the cabinet, he stepped down again in 2005 after another conviction related to the 1994 kidnapping and murder of his personal secretary. These charges were eventually dismissed in 2018, clearing his name.

As news of his death spread, tributes poured in. Senior Congress leader Jairam Ramesh described Soren as "the pivotal figure who led the movement for the creation of Jharkhand" and called him "a legend whose passion for social and economic justice was inspirational." Shiv Sena (UBT) member Sanjay Raut said, "For the people of Jharkhand, he was no less than a god." Former Bihar Chief Minister Lalu Prasad Yadav, who initially opposed Jharkhand's creation but later allied with Soren, expressed 'deep sorrow' at his passing, praising him as a tireless fighter for the rights of tribal and Dalit communities.

Shibu Soren's life and work remain deeply interwoven with the history and identity of Jharkhand. His death marks the end of an era for the state and the tribal movement he so passionately championed.

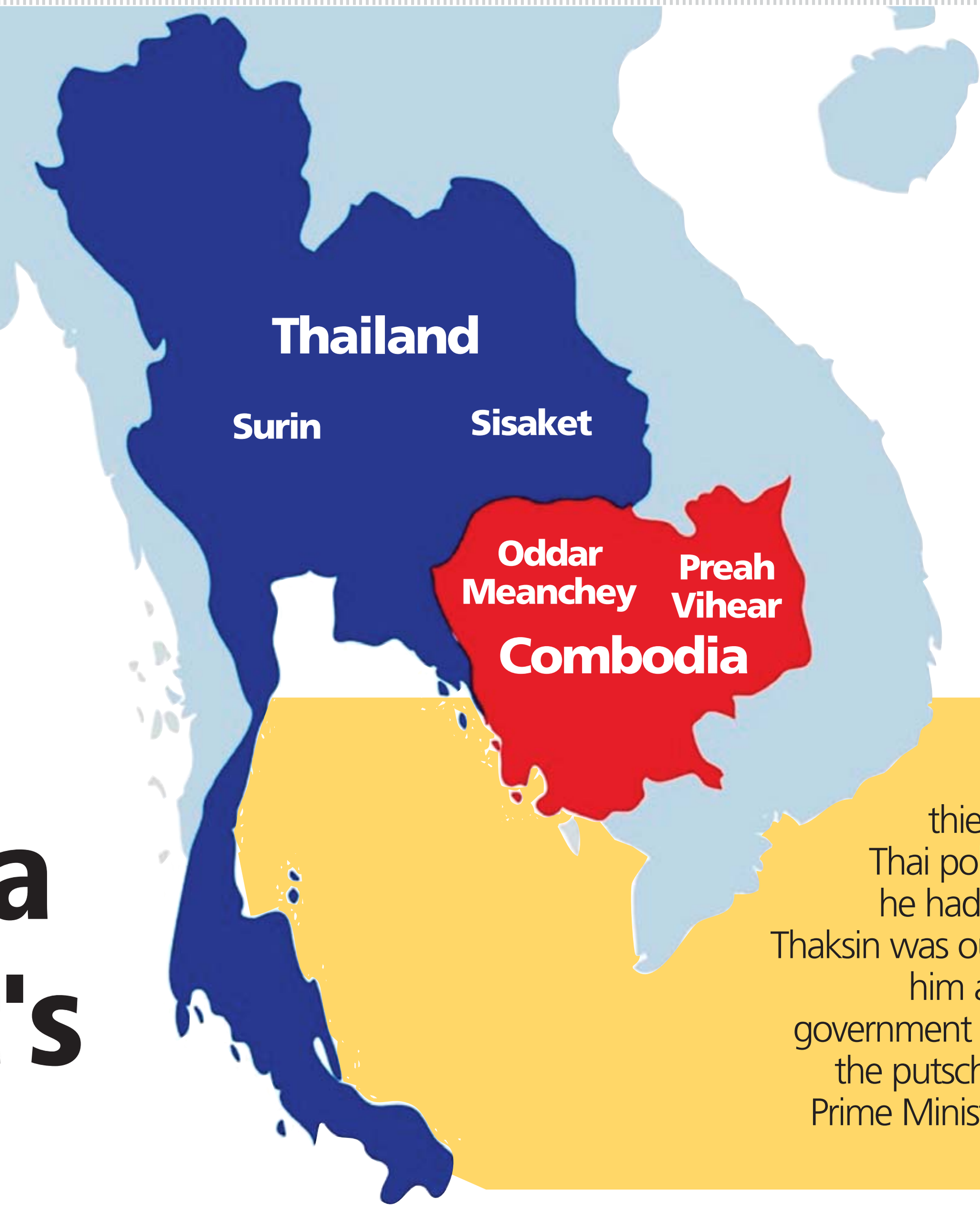

The Fight Between Thailand and Cambodia Isn't About Territory, It's Much More Serious

It was a Shakespearean betrayal, given Hun Sen had for decades been thick as thieves with Paetongtarn's 75-year-old father, Thai political patriarch Thaksin Shinawatra, whom he had once described as his 'god brother.' After Thaksin was ousted in a 2006 coup, Hun Sen appointed him as an economic advisor to the Cambodian government and they often golfed together. Following the putsch that removed Thaksin's sister Yingluck as Prime Minister in 2014, routed Shinawatra supporters were granted sanctuary in Cambodia.

Anjali Sharma
Senior Journalist & Wildlife Enthusiast

Look around the world and there are remarkably few countries without a territorial dispute. Without wanting to trivialize egregious breaches of sovereignty like the invasion of Ukraine, most are undeniably petty.

China's standoff with Japan over the Senkaku (or Diaoyu) Islands, for instance, regularly sparks diplomatic, military, and economic stresses costing billions of dollars over a far-flung islet measuring 2.7 sq mi. Then, there is Canada and Greenland's stareoff over the uninhabited Hans Island, a barren spit in the Kennedy Channel. Or even Uganda and Kenya's spat over Lake Victoria's Migingo Island, which is smaller than a football field.

Clearly, a significant number of territorial squabbles exist simply to provide a political distraction, an excuse to rally around the flag or challenge the patriotism of a political rival. And while they can flare up organically, prolonged skirmishes are typically stoked with a clear purpose. Which is why policy analysts are scratching their heads about what exactly lies behind the escalating border clashes between Thailand and Cambodia. On Thursday, last week, fighting erupted again near the disputed Ta Moan Thom Temple, located in a border area in northwestern Cambodia's Oddar Meanchey province, resulting in the deaths of at least 13 civilians and a soldier in Thailand, which dispatched an F-16 to bomb Cambodian targets in response.

As fighting spread to at least six areas along the arcane frontier, Thailand's military closed crossings between the countries. The fighting spurred at least 40,000 civilians from more than 80 villages near the border to flee to makeshift bomb shelters of sandbags and car tires. Both countries have issued statements accusing the other of instigating the violence. Cambodian Prime Minister Hun Manet had requested an urgent meeting of the U.N. Security Council in response, saying the clashes 'gravely threatened peace in the region.' Acting Thai Prime Minister Phumtham Wechayachai warned that the conflict 'could develop into war.'

Of course, trouble at the 508-mile (817 kms) shared border is nothing new. For over a century, Thailand and Cambodia have contested sovereignty at various undemarcated points in the thick jungle punctuated with culturally-significant temples, albeit with scant strategic or economic value.

But what makes the current flare-up most bamboozling is that it pits two of Southeast Asia's most formidable and, until recently, closest aligned families against each other. When border tensions first flared up last month, Thailand's then-Prime Minister, Paetongtarn Shinawatra, called up Cambodia's 72-year-old former strongman Hun Sen, Hun Manet's father, to soothe tensions.

Cambodian Prime Minister, Hun Manet.

#WORLD CONFLICT

Ta Moan Thom Temple.

However, Hun Sen leaked their June 15 phone call, during which Paetongtarn adopted a subservient tone and criticized one of her own generals, leading to her suspension by Thailand's constitutional court pending an ethics investigation, after 10,000 people took to the street demanding her resignation.

"The Thai government and the Shinawatras were shocked when Hun Sen leaked that very damaging phone recording," says Phil Robertson, the Bangkok-based director of the Asia Human Rights and Labour Advocates. "He really threw down the gauntlet."

It was a Shakespearean betrayal, given Hun Sen had for decades been thick as thieves with Paetongtarn's 75-year-old father, Thai political patriarch Thaksin Shinawatra, whom he had once described as his 'god brother.' After Thaksin was ousted in a 2006 coup, Hun Sen appointed him as an economic advisor to the Cambodian government and they often golfed together. Following the putsch that removed Thaksin's sister Yingluck as Prime Minister in 2014, routed Shinawatra supporters were granted sanctuary in Cambodia.

Thaksin and Yingluck both stayed at Hun Sen's house for his 72nd birthday party in August 2023. When Thaksin returned to Thailand from exile last year, Hun Sen was the first foreign leader to visit him. Before Paetongtarn became Prime Minister, she led a delegation to Phnom Penh in March last year to meet Hun Sen, who still serves as leader of the Cambodian People's Party.

But beginning last month, Hun Sen began posting messages accusing Thaksin of 'betraying' him and threatening to expose his treasonous actions, including undermining Thailand's sacrosanct monarchy.

"Since Thaksin became involved in Thai politics, Thailand has been in great turmoil, starting before the 2006 coup," Hun Sen posted on Facebook on July 20. "I also do not want to bring up the severe insults you directed at the Thai monarchy, those words were too vile for me to repeat, as they would only tarnish dignity."

Thailand has some of the world's harshest royal defamation laws, known as lese-majeste, or Article 112, and so accusing Thaksin of insulting the monarch is the local equivalent of Elon Musk tweeting that Donald Trump is in the Epstein files. "It got personal," says Thitinan Pongsudhirak, professor of Political Science at Chulalongkorn University in Bangkok. "He really went off the boil."

> Some analysts have even suggested that Hun Sen has been enlisted by Thailand's elites to finally topple the Shinawatra family, which remains reviled by royalists for its populist adulation amongst rural voters. However, Thitinan is unconvinced about any grand conspiracy. "They don't need help to get rid of the Shinawatras," he says. "Paetongtarn was already in big trouble."

What sparked everything off is now indisputable. On May 28, some Cambodian soldiers were carousing by Ta Moan Thom Temple when they encountered some of their Thai peers. Although things occasionally get testy along the shared border, relations had been for the most part cordial, with both sides camping side-by-side, sharing singalongs and games of Takraw, a form of foot volleyball. However, when the Cambodians began boisterously belting out the Khmer national anthem, the Thai soldiers objected. Shots were exchanged, and one Cambodian was killed.

Paetongtarn specifically referenced this incident in her leaked phone call, and you'd imagine it would be easy for two friendly leaders to smooth things over. But a few factors clearly incentivized Hun Sen to drag out the spat.

For one, the Cambodian economy is not doing well, and Hun Sen may spy an opportunity for his unpopular son to demonstrate his leadership chops. Additionally, Hun Sen may want a diversion from recent scrutiny on Cambodia's illicit businesses, including casinos, human trafficking, and scam centers, which according to some estimates account for up to 40% of GDP. Hun Manet's failure to deal with the 'scamdemic,' as the U.N. has dubbed it, has even led to calls for Cambodia to be added to a U.S. visa blacklist.

Compounding matters, Paetongtarn's government was making moves towards legalizing gambling in Thailand, which would undercut a key revenue stream for the Hun family and Cambodia more broadly. (Though, such moves have been mooted for many years and never caused friction previously.)

Some analysts have even suggested that Hun Sen has been enlisted by Thailand's elites to finally topple the Shinawatra family, which remains reviled by royalists for its populist adulation amongst rural voters. However, Thitinan is unconvinced about any grand conspiracy. "They don't need help to get rid of the Shinawatras," he says. "Paetongtarn was already in big trouble."

In the meantime, Paetongtarn's suspension leaves a perilous power vacuum in Thailand. The country only has an acting Prime Minister and acting defense minister, meaning authority over border matters has effectively been handed to an aggrieved and wounded armed forces. "This is a dangerous recipe," says Thitinan. "On one hand, you have the Thai Army in charge. On the other hand, you have Hun Sen, who is going to keep provoking things." It's uncertain what an off-ramp might look like. On Thursday, Malaysian Prime Minister Anwar Abrahim spoke to both sides in his capacity as current chair of the Association of Southeast Asian Nations (ASEAN) and praised "positive signals and willingness" to halt the bloodshed. However, since Anwar is also known as being close to Thaksin, whom he previously appointed as an adviser on Myanmar, it's unclear whether Hun Sen will trust his impartiality. And with the U.S. completely checked out from regional diplomacy under Trump, it may fall to China, which holds huge sway in Cambodia and is close to the Thai military, to broker an accord.

But aside from boosting Beijing's regional clout (which has not taken off), the spat will undoubtedly be damaging for both sides. For one, Thailand looks weaker and riven, inspite of being a direct protégé of U S. Previously war-torn Cambodia, meanwhile, has long served as a poster child for the scourge of landmines and has received over half-a-billion dollars from foreign donors towards purging over 6 million that once littered its emerald landscape, including $208 million from the U.S. alone since 1993. But revelations that five members of a Thai military patrol were wounded by newly laid Cambodian landmines on Wednesday afternoon has outraged the international community.

"That's very, very damaging for Cambodia," says Robertson. "They want to fight it out, but at the end of the day, both sides are going to end up with a tarnished reputation." Even the petty can have a high price.

rajeshsharma1049@gmail.com

Paetongtarn Shinawatra.

#CHARLES BUKOWSKI

"So You Want to Be a Writer"

"If you're doing it for money or fame, don't do it."

In an era where creative careers are often glamorized, Charles Bukowski's poem "So You Want to Be a Writer" delivers an unflinching message: if the urge to write isn't burning through you with an almost violent need, don't even try.

Bukowski, the icon of raw, working-class poetry, opens the poem with a line that sets the tone for the entire piece:

"if it doesn't come bursting out of you
in spite of everything,
don't do it."

Unlike many poetic odes to the writer's life, Bukowski's work is devoid of sentimentality. He positions writing not as a noble pursuit but as a biological necessity, something that should erupt from within, involuntarily. To him, writing is not a craft for the curious or the ambitious. It's for those who simply cannot not write.

He offers no encouragement for those waiting for the perfect moment or setting.

"if you're doing it for money or fame,
don't do it."
"if you have to sit for hours
staring at your computer screen
or hunched over your typewriter
searching for words,
don't do it."

Bukowski's disdain for forced creativity is palpable. He mocks the idea of inspiration that must be hunted or waited for. In his view, the act of writing should be instinctual, even feral. If you're not driven by something innate and unstoppable, the poem suggests, you're better off doing anything else.

His criteria are harsh, even intimidating:

"unless it comes unasked out of your
heart and your mind and your mouth
and your gut,
don't do it."

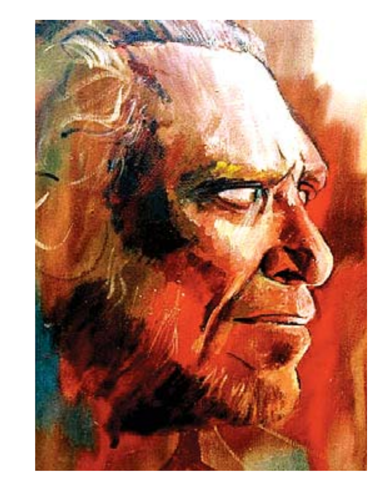

Charles Bukowski.

Yet, there's something strangely liberating about his message. By stripping away the illusion that writing is something anyone can do with enough discipline or training, he elevates it to a form of spiritual possession. Bukowski isn't trying to gatekeep, he's trying to protect the purity of the craft.

In the poem's closing, he offers a final stark warning:

"if you have to wait for it to roar out of you,
then wait patiently.
if it never does roar out of you,
do something else."

To Bukowski, writing isn't about success or acclaim, it's about survival. His poem reminds readers that real writers write not because they want to, but because they have no other choice.

"when it is truly time,
and if you have been chosen,
it will do it by itself
and it will keep on doing it
until you die
or it dies in you."

Bukowski's "So You Want to Be a Writer" is more than a poem, it's a manifesto for artistic authenticity. It cuts through the noise of modern hustle culture with a brutal elegance, reminding us that true creative work cannot be faked, forced, or finessed. Either it owns you, or it doesn't.

THE WALL

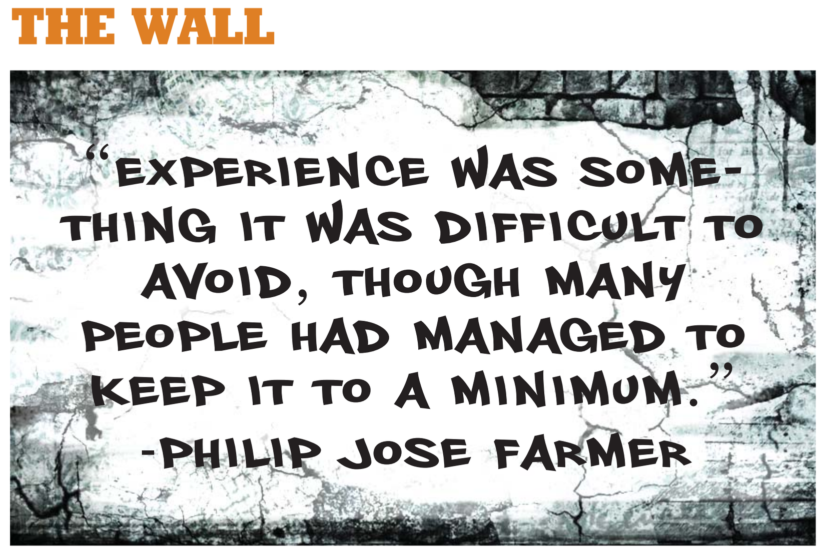

BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

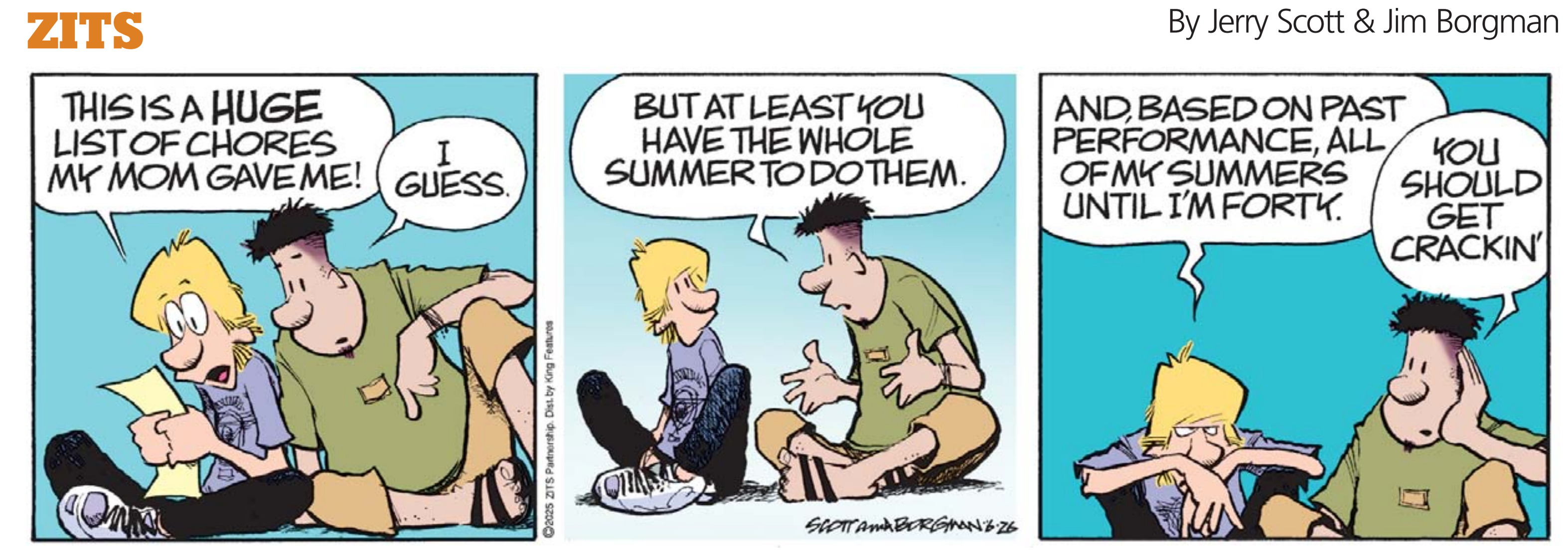

‘‘विकसित राजस्थान-खुशहाल राजस्थान’’ बनाने में जुटी है भजनलाल सरकार : पूनिया

सतीश पूनियां ने नागौर के रोल में राज. विद्यालय परिसर में बेटियों के साथ पौधारोपण किया

जयपुर/नागौर। मारवाड़, मेवाड़-वागड़ के सात जिलों के चार दिवसीय प्रवास पर भाजपा हरियाणा संगठन प्रभारी, भाजपा राजस्थान पूर्व प्रदेशाध्यक्ष डॉ. सतीश पूनियां सोमवार को डीडवाना-कुचामन और नागौर के प्रवास पर रहे, जहां पूनियां ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अभिनव पहल एक पेड़ माँ के नाम 2.0 अभियान के तहत कुचामन-डीडवाना में कार्यकर्ताओं एवं जनप्रतिनिधियों के साथ पौधारोपण किया और नागौर जिले के रोल में राजकीय विद्यालय परिसर में बेटियों के साथ एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत पौधारोपण किया। इस दौरान कार्यकर्ताओं से मुलाकात के दौरान जिले के विकास कार्यों को लेकर चर्चा कर फीडबैक भी लिया।

भाजपा राजस्थान पूर्व प्रदेशाध्यक्ष डॉ. सतीश पूनियां का कार्यकर्ताओं ने नागौर में स्वागत किया।

- **डॉ. सतीश पूनियां ने कार्यकर्ताओं से मुलाकात के दौरान जिले के विकास कार्यों को लेकर चर्चा कर फीडबैक भी लिया**
- **पूनियां ने नागौर के पूर्व भाजपा जिला अध्यक्ष रमाकांत शर्मा के निवास पर पहुंचकर उनकी माताजी दुर्गा देवी के निधन पर शोक संवेदना व्यक्त की**

पूनियां ने नागौर के पूर्व भाजपा जिला अध्यक्ष रमाकांत शर्मा के निवास पर पहुंचकर उनकी माताजी दुर्गा देवी के निधन पर शोक संवेदना व्यक्त कर परिवारजनों को ईश्वर से संबल प्रदान करने की प्रार्थना की और ढांढस बंधाया। मीडिया से बातचीत में सतीश पूनियां ने कहा कि 2018 से 2023 तक कांग्रेस की अशोक गहलोत सरकार रही। इन पांच सालों में तत्कालीन मुख्यमंत्री अशोक गहलोत अधिकांश समय तो कुर्सी बचाने में लगे रहे। कांग्रेस पार्टी के भीतर इतना विरोध था कि उप मुख्यमंत्री और प्रदेश अध्यक्ष सचिन पायलट को बर्खास्त करना पड़ा। उन 5 सालों में जो अराजकता एवं बिगड़ी कानून व्यवस्था का दंश प्रदेश ने झेला, वो विरासत भाजपा की भजनलाल शर्मा सरकार को मिली है, जो विकसित राजस्थान और खुशहाल राजस्थान बनाने में जुटी है।

पूनियां ने ब्यूरोक्रेसी के बढ़ते हस्तक्षेप को लेकर मीडिया द्वारा पूछे गये सवाल के जवाब में कहा कि ब्यूरोक्रेसी सरकार की योजनाओं के अनुसार ही कार्य कर रही है। राज्य में पंचायतीराज और स्थानीय निकाय संस्थाओं को पुनर्जीवित करना, उनको आर्थिक एवं प्रशासनिक रूप से खड़ा किया जा रहा है, जो राज्य हित में अच्छा कदम है। उन्होंने कहा कि, राज्य में पुनर्सीमांकन का काम लगभग पूरा हो चुका है, कांग्रेस शासन में जो गड़बड़ी हुई थी, उसे दुरुस्त करने में कुछ समय लगा, भाजपा सरकार में यह चुनाव व्यवस्थित तरीके से निर्धारित समय में होंगे। उन्होंने कहा कि विपक्ष में रहते हुये 2019-2023 के बीच ऐसा पहली बार हुआ कि भाजपा ने 21 जिला परिषदों पर कब्जा किया था, पंचायत समिति और जिला परिषद के अधिकतर सदस्य भाजपा के जीते थे, आजादी के बाद पहली बार राज्य में विपक्ष में रहते हुए भाजपा की पंचायतीराज चुनाव में सबसे बड़ी जीत थी, इस दौरान सत्तारूढ़ कांग्रेस पार्टी को पंचायतीराज चुनाव में करारी हार का सामना करना पड़ा और अब विकसित राजस्थान बनाने के लिए संकल्पित होकर काम कर रही भाजपा सरकार के शासन में निकाय से लेकर पंचायतीराज चुनाव में भी भाजपा बड़ी जीत हासिल करेगी, ऐसा लोगों ने मन बना लिया है।

72.50 लाख की हेरोइन जब्त, दो जने गिरफ्तार

- **एक आरोपी नरेंद्र सिंह कुछ महीने पहले हेरोइन तस्करी के आरोप में गिरफ्तार हुआ था**
- **जमानत पर छूटते ही फिर से नरेंद्र सिंह ने हेरोइन तस्करी का काम शुरू कर दिया**
- **नरेंद्र सिंह अपने मामा के लड़के बलजीत सिंह को पंजाब से हेरोइन लाने के लिए साथ रखा था**

श्रीगंगानगर, (निसं)। जवाहर नगर पुलिस ने 145 ग्राम हेरोइन के साथ दो लोगों को गिरफ्तार किया है। बरामद हेरोइन की कीमत करीब 72.50 लाख रुपए बताई गई है। आरोपियों की पहचान नरेंद्र सिंह उर्फ लवी सैनी (25 साल) पुत्र बक्शीस सिंह सैनी निवासी हाल किराएदार वार्ड नंबर 25, श्रीकरणपुर और बलजीत सिंह उर्फ समना (26) पुत्र सुखवंत सिंह निवासी 6 ओ (बी), केसरीसिंहपुर के तौर पर हुई है। खास बात यह है कि एक आरोपी नरेंद्र सिंह कुछ महीने पहले हेरोइन तस्करी के आरोप में गिरफ्तार हुआ था। जमानत पर छूटते ही फिर से तस्करी का काम शुरू कर दिया। आरोपियों को साधुवाली चेक पोस्ट पर नाकाबंदी के दौरान गिरफ्तार किया गया।

जानकारी के अनुसार पुलिस को मुखबिरों से सूचना मिली थी कि तस्कर पंजाब से हेरोइन की एक बड़ी खेप लाने की फिराक में है। इसके चलते सीमावर्ती क्षेत्रों में गश्त बढ़ाई गई। पंजाब सीमा पर चेकपोस्ट पर नाकाबंदी की गई। वाहनों की जांच के दौरान एक सफेद रंग की क्रेटा कार नंबर आरजे 13 सीसी 6998 की तलाशी के दौरान 145 ग्राम हेरोइन जब्त की गई। पुलिस सूत्रों के अनुसार आरोपियों ने हेरोइन को छिपाकर भी नहीं रखा था। तलाशी के दौरान इनकी जेब से हेरोइन बरामद हुई। एनसीबी के अनुसार आरोपियों से बरामद हेरोइन की कीमत करीब 72.50 लाख रुपए हैं। गिरफ्तार करने वाली टीम में एसआई जयवीर, कांस्टेबल विरेंद्र, मनोज शामिल थे। इस कार्रवाई में डीएसटी टीम के इंचार्ज रामविलास, कांस्टेबल हबीब खां, निर्मल बिश्नोई, पवन, प्रमोद व अश्व नी का विशेष योगदान रहा। आरोपियों के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट की विभिन्न धाराओं में केस दर्ज कर जांच सदर थाना के एसआई हंसराज को सौंपी गई है। एसआई हंसराज ने बताया कि आरोपियों का 6 अगस्त तक का पुलिस रिमांड लिया गया है। इनसे सप्लायर्स के संबंध में पूछताछ की जा रही है।

पुलिस द्वारा गिरफ्तार आरोपी नरेंद्र सिंह उर्फ लवी सैनी लंबे समय से नशे के कारोबार से जुड़ा है। पुलिस सूत्रों के अनुसार नरेंद्र सिंह पंजाब से थोक में हेरोइन लाकर श्रीगंगानगर में खुदरा बिक्री करने वालों को सप्लाई करता है। फरवरी माह में भी सदर पुलिस ने नरेंद्र सिंह को हेरोइन सहित गिरफ्तार किया था। जमानत पर छूटते ही आरोपी ने फिर से हेरोइन तस्करी का काम शुरू कर दिया। नरेंद्र सिंह के खिलाफ 2022 में भी श्रीकरणपुर थाना में एनडीपीएस एक्ट के तहत केस दर्ज हुआ था। इसके अलावा बीकानेर के बीछवाल थाने में मारपीट का मुकदमा भी दर्ज है।

उधर, बलजीत सिंह उर्फ समना रिश्ते में नरेंद्र सिंह का भाई है। नरेंद्र सिंह अपने मामा के लड़के बलजीत सिंह को पंजाब से हेरोइन लाने के लिए साथ रखा था। पुलिस सूत्रों के अनुसार बलजीत सिंह पहली बार पकड़ में आया है। प्रारंभिक पूछताछ में सामने आया है कि आरोपी पंजाब के तरणतारन से हेरोइन लेकर आए थे। इस संबंध में विस्तार से पूछताछ की जा रही है।

चार दिन से न्याय के लिए भटक रही दलित नाबालिग पीड़िता ने फांसी लगाई

- **गंभीर हालत में पीड़िता को बांगड़ जिला अस्पताल लाया गया, सीकर रैफर किया**
- **29 जुलाई की रात्रि को दौलतपुरा निवासी गीता देवी और उसकी पुत्रियों पर हमला हुआ था**
- **थाने से लेकर एसपी ऑफिस तक चक्कर काटने के बाद भी पीड़ित परिवार की नहीं हुई सुनवाई**

डीडवाना, (निसं)। जिले के दौलतपुरा गांव में एक दलित परिवार के साथ मारपीट और महिलाओं के साथ छेड़छाड़ के मामले में चार दिनों बाद भी कार्रवाई नहीं होने पर सोमवार को दलित परिवार की नाबालिग पीड़िता ने फांसी लगाकर आत्महत्या का प्रयास किया। हालांकि गनीमत रही कि परिजनों ने तुरंत ही लड़की को फंदे से उतार लिया और उसे बांगड़ जिला अस्पताल पहुंचाया, जहां से चिकित्सकों ने बालिका को सीकर रेफर कर दिया।

जानकारी के अनुसार 29 जुलाई की रात्रि को दौलतपुरा गांव में दलित परिवार के घर पर कुछ दबंगों ने घर में घुसकर परिवार के लोगों और महिलाओं के साथ मारपीट की थी। इस मामले को लेकर पीड़ित परिवार द्वारा रिपोर्ट दर्ज करवाई गई। दलित परिवार का आरोप है कि रिपोर्ट दर्ज होने के बावजूद पुलिस द्वारा आरोपितों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की जा रही है, जिससे आरोपितों के हौसले बुलंद है और लगातार धमकियां दे रहे हैं। इस मामले में कार्रवाई की मांग को लेकर पीड़ित महिला गीता देवी चार दिनों से पुलिस थाना और एसपी कार्यालय के चक्कर लगा रही थी उसके बावजूद उसकी सुनवाई नहीं हुई। इसी बीच मारपीट और छेड़छाड़ से आहत होकर दलित परिवार की एक नाबालिग लड़की ने सोमवार को सुबह फांसी लगाकर आत्महत्या का प्रयास किया। इसके बाद गंभीर अवस्था में पीड़िता को बांगड़ जिला अस्पताल लाया गया, जहां से उसे सीकर रेफर कर दिया गया।

इस मामले में दलित परिवार का आरोप है कि रिपोर्ट के बावजूद पुलिस आरोपितों पर कार्रवाई नहीं कर रही है और पीड़ित परिवार पर ही समझौता करने का दबाव बनाया जा रहा है।

पुलिस उपअधीक्षक धरम पूनिया का कहना है कि इस मामले में दो आरोपितों को गिरफ्तार किया जा चुका है। आज इसी प्रकरण में छेड़छाड़ का एक अन्य मामला भी दर्ज किया गया है। उन्होंने कहा कि मामले की जांच जारी है और किसी भी दोषी को बक्शा नहीं जाएगा।

एडवा के 13वें राज्य सम्मेलन में रईसा को कोषाध्यक्ष बनाया

बीकानेर/जयपुर। अखिल भारतीय जनवादी महिला समिति (एडवा) का तेरहवां राज्य सम्मेलन बीकानेर में संपन्न हुआ। सम्मेलन में अलवर से रईसा, अनीता, सरोज तथा निर्मला सहित प्रदेश से 203 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। सम्मेलन में रईसा को कोषाध्यक्ष चुना गया। सम्मेलन की शुरुआत प्रदेश अध्यक्ष कमला मेघवाल द्वारा झंडारोहण कर की गई। संगठन की राष्ट्रीय महासचिव मरियम ढवले ने उद्घाटन भाषण देते हुए सभी प्रतिनिधियों से महिला हिंसा, सांप्रदायिकता, पितृसत्ता एवं गैर बराबरी के खिलाफ एकजुट होकर संघर्ष करने का आव्हान किया। सम्मेलन में पिछले तीन वर्षों के कार्यों की समीक्षा की गई एवं आगामी तीन वर्षों के लिए नई कार्य योजना एवं संघर्षों रीतिनीति तैयार की गई। सम्मेलन में 31सदस्यीय राज्य कमेटी का चुनाव किया गया जिसमें डॉ. सीमा जैन को प्रदेश महासचिव, कमला मेघवाल को प्रदेश अध्यक्ष तथा रईसा को प्रदेश कोषाध्यक्ष चुना गया।

बीकानेर में अखिल भारतीय जनवादी महिला समिति (एडवा) के सम्मेलन में अलवर से रईसा, अनीता, सरोज आदि ने हिस्सा लिया।

- **अखिल भारतीय जनवादी महिला समिति (एडवा) का तेरहवां राज्य सम्मेलन बीकानेर में संपन्न**
- **सम्मेलन में अलवर से रईसा, अनीता, सरोज तथा निर्मला सहित 203 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया**

सम्मेलन में महात्मा गांधी रोजगार गारंटी योजना के सुदृढ़ क्रियान्वयन, कामकाजी महिलाओं के अधिकार, फिलिस्तीन पर हो रहे हमलों के खिलाफ एकजुटता, दलितों व अल्पसंख्यकों पर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ संघर्ष, बेरोजगारी एवं महंगाई के खिलाफ संघर्ष, नागरिक सुविधाओं के बेहतर क्रियान्वयन के लिए संघर्ष, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा स्मार्ट मीटर का विरोध, महिला हिंसा एवं सांप्रदायिकता के खिलाफ संघर्ष, बढ़ते नशे के खिलाफ संघर्ष, एकल महिलाओं के हक एवं अधिकारों के लिए संघर्ष जैसे मुद्दों पर प्रस्ताव पास किए गए। जनवादी महिला समिति राजस्थान की केंद्रीय कमेटी प्रभारी आशा शर्मा ने प्रतिनिधियों से और अधिक प्रतिबद्धता के साथ संगठन का काम करने एवं आंदोलन तेज करने का आव्हान किया। समापन सत्र में संगठन की राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केरल की स्वास्थ्य मंत्री पीके श्रीमती ने पहली बार ऐतिहासिक शहर बीकानेर आने पर खुशी जाहिर करते हुए भाजपा की जन विरोधी नीतियों पर प्रहार किया। अंत में जोशीले नारों-एडवा जिंदाबाद, महिला एकता जिंदाबाद, इंकलाब जिंदाबाद, तेरहवां राज्य सम्मेलन कामयाब के साथ सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

आकांक्षा हाट मेले का आयोजन

नागौर/जायल, (निसं)। स्थानीय उत्पादों और कारीगरों को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से वोकल फॉर लोकल अभियान के अंतर्गत सोमवार को जायल में आकांक्षा हाट मेले का शुभारंभ महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री डॉ. मंजू बाघमार व जिला कलेक्टर अरुण कुमार पुरोहित ने फीता काटकर किया।

इस अवसर पर जिला कलेक्टर पुरोहित ने आकांक्षा हाट मेले की जानकारी दी तथा स्थानीय कारीगरों और स्वयं सहायता समूहों के उत्पादों को राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाने के लिए सभी से अधिकतम सहयोग करने का आव्हान किया। उन्होंने बताया कि मेले का आयोजन 9 अगस्त तक किया जाएगा।

नगर परिषद में शादी का फर्जी पंजीयन करवाया

- **लड़की और लड़के ने अपने पते गलत बताए हैं, यहां तक कि लड़की के पिता की जगह भी फर्जी व्यक्ति पेश करके हस्ताक्षर करवाकर शादी रजिस्टर्ड की गई है**

श्रीगंगानगर, (निसं)। एक ऐसी शादी का मामला सामने आया है जिसमें लड़की और लड़के ने अपने पते गलत बताए हैं। यहां तक कि लड़की के पिता की जगह भी फर्जी व्यक्ति पेश करके हस्ताक्षर करवाकर शादी रजिस्टर्ड की गई है। यह कारनामा नगर परिषद में विवाह पंजीयन शाखा के कर्मचारी की जानकारी और मौजूदगी में किया गया है। इस संबंध में पीड़ित लड़की के पिता ने कोतवाली थाने में मुकदमा दर्ज करवाया है।

अदालत के आदेश से दर्ज किए गए मुकदमे की जांच एएसआई बेयंतसिंह को सौंपी गई है। पीड़ित एसएसबी रोड पर सिद्धु कॉलोनी निवासी 55 वर्षीय सुशील कुमार के परिवाद पर मुकदमा दर्ज हुआ है। पीड़ित ने बताया कि नगर परिषद की विवाह पंजीयन शाखा में उसकी बेटी की शादी का पंजीयन करवाया जा रहा था। इसमें दीपक कुमार निवासी इंदिरा कॉलोनी के साथ शादी का पंजीयन किया गया।

पीड़ित को सूचना मिली तो वह मौके पर पहुंचा। तब नगर परिषद की विवाह पंजीयन शाखा में प्रभारी क्लर्क राजेंद्र सेवटा शादी का पंजीयन करने की प्रकिया पूरी करवा रहा था। वहां पीड़ित की बेटी के पिता की जगह अज्ञात अधेड़ उम्र के व्यक्ति को पेश कर रखा था और पेश किए गए शपथ पत्र में भी पीड़ित के फर्जी हस्ताक्षर किए हुए थे। यहां तक कि पीड़ित की बेटी का पता भी गलत लिखा हुआ था। वहां मौके पर पुरानी आबादी हनुमान मंदिर के निकट निवासी ओमप्रकाश भार्गव ने पंडित की जगह हस्ताक्षर किए। सादुलशहर के वार्ड 20 निवासी मोहितकुमार और इंद्रा कॉलोनी की गली नंबर तीन निवासी संजू को गवाह बनाकर हस्ताक्षर करवाए गए।

भरतपुर कलेक्ट्रेट कार्यालय परिसर में छत का प्लास्टर गिरा

भरतपुर, (निसं)। भरतपुर जिला कलेक्ट्रेट कार्यालय परिसर में छत का प्लास्टर गिरने से हड़कंप मच गया। नीचे बैठे एडवोकेट एवं अन्य लोग बाल-बाल बच गए। एडीएम सिटी ने मौके पर पहुंचकर घटना स्थल का मौका मुआयना किया। भवन की जांच के लिए मौके पर पीडब्ल्यूडी के अधिकारी बुलाकर निरीक्षण कराया जा रहा है।

जिला कलेक्ट्रेट परिसर के भवनों की छत क्षतिग्रस्त है और आगे भी ऐसा हादसा देखने को मिल सकता है। एडवोकेट बृजेंद्र बिहारी शर्मा ने बताया कि जिला कलेक्ट्रेट परिसर स्थित आर आर वन कोर्ट के सामने मेरा चैंबर है। मैं और क्लाइंट बैठे हुए थे। ऊपर से छत से प्लास्टर का टुकड़ा हमारे ऊपर आकर गिरा हम और क्लाइंट बाल-बाल बच गये। उन्होंने कहा कि हमने पूर्व में उच्च अधिकारियों को जर्जर भवन के बारे में अवगत करा चुके हैं लेकिन इस और कोई ध्यान नहीं दिया गया। जर्जर भवनों को लेकर के तमाम खबरें सामने आ रही हैं और अधिकारियों के द्वारा जर्जर भवनों की लिस्ट भी मांगी गई है लेकिन खुद जिला कलेक्टर भवन के परिसर की हालत किसी से छुपी नहीं है और आए दिन हादसों की खबरें सामने आ रही है। मौके पर एडीएम सिटी राहुल सैनी ने पहुंचकर मौका मुआयना किया। उन्होंने कहा कि पीडब्ल्यूडी विभाग के अधिकारियों को बुलाया गया है। उनसे जांच कराई जाएगी, अगर यह बिल्डिंग कंडम होगी तो तुड़वाई जाएगी, नहीं तो सही मरमत कराकर ठीक कराया जाएगा। सिविल डिफेंस टीम को बुलाकर मलवे को हटाने की कार्यवाही की जा रही है। उन्होंने छत को सही कराने के निर्देश दिए हैं। साथ ही एडवोकेट और आमजन को दूसरी जगह शिफ्ट करा रहे हैं।

चाकूबाजी की वारदात करने वाले दो आरोपी गिरफ्तार : कस्बा कपासन स्थित सूफी संत हजरत दीवाना शाह के उर्स में चाकूबाजी की वारदात करने वाले मोमिन मोहल्ला निवासी मोहम्मद समीर पुत्र मोहम्मद रूस्तम अंसारी व मोहम्मद सोहेल रजा पुत्र मोहम्मद शराफत अंसारी को कपासन थाना पुलिस ने गिरफ्तार किया है।

पुलिस अधीक्षक मनीष त्रिपाठी ने बताया कि गत एक अगस्त को रात्रि के समय कपासन निवासी मोहम्मद साहिल व तोकीर दोनों उर्स मेले में कपासन दरगाह के मेला ग्राउण्ड में घूम रहे थे कि समीर, सोहिल, सरीफ उनके सामने आये और पुरानी रंजिश के कारण समीर ने तोकीर को जान से मारने की नियत से तोकीर के सीने पर दांयी तरफ और बांयी तरफ हाथ के नीचे दोनों जगह चाकू मार दिया। घटना की रिपोर्ट पर प्रकरण दर्ज कर अनुसंधान शुरू किया गया।

केमिकल से भरा टेंकर पलटा, चालक जिंदा जला

उदयपुर, (निसं)। बडगांव थाना क्षेत्र घसियार रोड़ पर अनियंत्रित टेंकर पलट गया, जिससे धमाका होने के बाद आग लग गई। हादसे में चालक की जिंदा जलने से मौके पर ही मौत हो गई। जानकारी के अनुसार सोमवार तड़के जिले के बड़गांव थाना क्षेत्र घसियार के समीप केमिकल से भरा अनियंत्रित टेंकर पलट गया। जिससे धमाका होने के बाद उसमें आग लग गई तथा चालक की मौके पर जिंदा जलने से मौत हो गई। इसकी सूचना मिलने पर पुलिस ने मौके पर पहुंच कर फायर ब्रिगेड को बुलाकर आग पर काबू किया जब तक चालक की मौत हो चुकी थी, जिसे एमबी चिकित्सालय मोर्चरी में रखवा उसकी शिनाख्त देवराज नगर बरार भीम राजसमन्द निवासी धर्मसिंह पुत्र जवानसिंह रावत के रूप में शिनाख्त कर परिजनों को सूचना दी। इस पर हेड कांस्टेबल राजेन्द्र सिंह ने पोस्टमार्टम करवाकर शव परिजनों को सौंप दिया।

सड़क टूटकर नदी में बही, बौंली व बामनवास के 40 गांवों का आवागमन बाधित

बौंली-बामनवास, (निसं)। क्षेत्र के बरनाला तहसील अंतर्गत टिगरिया-निमोद सड़क मार्ग के मध्य स्थित मौरेल नदी की सड़क पर बनी पुलिया के दोनों किनारों से सड़क टूटकर नदी में बह जाने के कारण बौंली एवं बामनवास उपखंड के करीब 40 गांव का आवागमन बाधित हो गया।

ग्रामीणों ने बताया कि सोमवार को सुबह जब पुलिया व सड़क मार्ग टूटा, तब एक बाइक सवार बह गया, जिसे ग्रामीणों ने नदी में कूदकर बड़ी मुश्किल से बचाया। ग्रामीणों ने बताया कि गत दिनों हुई अत्यधिक वर्षा के कारण नदी उफान पर है एवं पुलिया सड़क मार्ग पर करीब तीन फीट पानी बह रहा था। इस कारण गत 5 दिन से यातायात बाधित था। अभी जलस्तर थोड़ा कम पड़ा था तो पुलिया के आसपास पूरी सड़क नदी में समा गई।

मौरेल नदी पर बनी पुलिया के दोनों किनारों से सड़क टूटकर नदी में बह गई।

- **सोमवार सुबह जब पुलिया व सड़क मार्ग टूटा, तब एक बाइक सवार बह गया, जिसे ग्रामीणों ने नदी में कूदकर बचा लिया**
- **गत दिनों हुई अत्यधिक वर्षा के कारण नदी उफान पर है एवं पुलिया सड़क मार्ग पर करीब तीन फीट पानी बह रहा था**

इस कारण बौंली एवं बामनवास उपखंड मुख्यालय के करीब 40 गांवों का संपर्क टूट गया, जिसमें बौंली उपखंड के निमोद, करेल, बरियारा, टोंड, जस्टाना, पीपलदा, कोड़ियाई, गालद, कीरतपुरा, मलारना चौड़ सहित कई गांवों का संपर्क कटा हुआ है। इसी प्रकार बामनवास उपखंड के बरनाला, बाटोदा, बेरखंडी, भावड़, जीवद, सुंदरी, मीना ठीकरी, रामसिंहपुरा, टिगरिया, बिछोछ, भंवरकी, साचोली, चांदनहौली, पिपलाई, बाढ़ व मोहनपुरा का संपर्क कटा हुआ है। इस समस्या के कारण स्थानीय लोगों को करीब 25 किलोमीटर का अतिरिक्त चक्कर काटकर भाड़ौती मेगा हाइवे या लालसोट, बगड़ी होकर अपने गंतव्य तक पहुंचाना पड़ रहा है।

स्थानीय निवासियों का टूटी सड़क से पैदल निकलना भी दुश्वार हो रहा है, चार दिन अवकाश के बाद खुले विद्यालयों में छात्र-छात्राएं नहीं पहुंच पा रहे हैं एवं करीब दो दर्जन छात्र-छात्राओं को मौरेल नदी पर ही रोक कर स्थानीय नागरिकों ने सुरक्षा की दृष्टि से वापस घर लौटा दिया। स्थानीय ग्रामीणों ने सार्वजनिक निर्माण विभाग से सड़क मार्ग ठीक कराने की मांग की है।

पाकिस्तान की ओर से एक बार फिर हेरोइन तस्करी का प्रयास

खेत में मिला 522 ग्राम हेरोइन का पैकेट, ढाई करोड़ रुपए बताई जा रही है कीमत

- **पैकेट पर छोटे अक्षरों में कुछ लिखा हुआ है और इस पर मिट्टी नहीं लगी है**
- **केंद्रीय एजेंसियों के अधिकारियों ने भी मौके पर पहुंचकर जांच शुरू की, खेत में सर्च ऑपरेशन चलाया है**

श्रीगंगानगर, (निसं)। जिले के बॉर्डर इलाके में पाकिस्तान की ओर से एक बार फिर भारत में हेरोइन तस्करी का प्रयास किया गया है।

श्रीगंगानगर में इंटरनेशनल बॉर्डर के पास संगतपुरा गांव के चक 8 एच में एक खेत से हेरोइन का पैकेट बरामद हुआ है। यह स्थान पाकिस्तान बॉर्डर से मात्र एक किलोमीटर दूर है। संगतपुरा का स्वास्थ्य केंद्र इस जगह से केवल 50 मीटर की दूरी पर स्थित है। पीले रंग के पैकेट में मिली हेरोइन का वजन 522 ग्राम है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में इसकी कीमत ढाई करोड़ रुपए से अधिक आंकी गई है। पैकेट पर छोटे अक्षरों में कुछ लिखा हुआ है और इस पर मिट्टी नहीं लगी है। इससे अनुमान लगाया जा रहा है कि यह पाकिस्तान से ड्रोन के जरिए भेजा गया है। पैकेट पर लगी कुंडी भी ड्रोन से लटकाने के लिए इस्तेमाल की जाती है।

हेरोइन का यह पैकेट हरकीर्तन सिंह मान के खेत में नरमे की फसल के बीच से बरामद हुआ। जिस स्थान पर पैकेट मिला, वहां नरमे के पौधे नहीं हैं। शाम को हरकीर्तन सिंह और कुलदीप सिंह पानी की बारी के लिए खेत में गए थे। उन्होंने खेत में पड़ा पैकेट देखकर गांव में इसकी सूचना दी। शाम करीब छह बजे ग्रामीण बलजीत मान ने बीएसएफ अधिकारियों को इसकी जानकारी दी। सूचना मिलते ही बीएसएफ के अधिकारी और जवान मौके पर पहुंचे। मटीलीराठान थाना प्रभारी सुभाषचंद्र भी पुलिस टीम के साथ वहां आए। केंद्रीय एजेंसियों के अधिकारियों ने भी मौके पर पहुंचकर जांच शुरू कर दी है। पैकेट मिलने के बाद विभिन्न एजेंसियों ने खेत में सर्च ऑपरेशन चलाया। पैकेट का वजन 522 ग्राम होने के कारण माना जा रहा है कि पाकिस्तानी तस्करों ने छोटे ड्रोन का इस्तेमाल किया होगा। इसी वजह से यह बीएसएफ और अन्य एजेंसियों की नजर में नहीं आया। पैकेट पर मिट्टी न लगी होने से अनुमान है कि तस्करी का यह प्रयास हाल ही में किया गया है।

सम्मान पर्व आज

टोंक। राज्य सरकार के निर्देशानुसार बहनों का सुरक्षा-सम्मान पर्व का आयोजन आज किया जायेगा। इसी क्रम में कृषि ऑडिटोरियम टोंक में 5 अगस्त को प्रातः 11 बजे कार्यक्रम का प्रसारण एवं मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा जिले की आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं एवं सहायिकाओं से वीसी के माध्यम से संवाद कार्यक्रम होगा। जिला कलेक्टर कल्पना अग्रवाल ने कार्यक्रम को सफलतापूर्वक संपादित करने के लिये संबंधित विभागों के अधिकारियों को विभिन्न जिम्मेदारियां सौंपी है। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम के नोडल अधिकारी सीईओ एवं सहायक नोडल अधिकारी एसीईओ होंगे। कार्यक्रम की संपूर्ण तैयारियां महिला एवं बाल विकास विभाग की उपनिदेशक द्वारा संपादित की जाएगी।

5 सरगना गिरफ्तार

पावटा। महानिदेशक पुलिस जयपुर वह महानिरीक्षक पुलिस जयपुर रेंज जयपुर राहुल प्रकाश द्वारा चिन्हित गैंग जिसमें जबरदस्ती, वसूली, फायरिंग, संपति अपराध, साइबर क्राइम, आर्म्स, फरार वांछित अपराधी आदि अपराधों से जुड़े सरगनाओ के करीब 50 ठिकानों पर दबिश देकर कार्यवाही अभियान के तहत जिला पुलिस अधीक्षक कोटपूतली बहरोड देवेंद्र विश्नोई द्वारा अधिक से अधिक प्रभावी कार्यवाही करने के दिए गए निर्देशों की पालना में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कोटपूतली वैभव शर्मा के सुपरविजन व वृत्ताधिकारी वृत्त विराटनगर कार्यवाहक राजेंद्र बुरड़क के निर्देशन एवं प्रागपुरा थाना प्रभारी किरण के नेतृत्व में गठित पुलिस टीमों द्वारा कड़ी मेहनत व लगन से कार्य करते हुए प्रागपुरा थाना क्षेत्र के ठिकानों पर दबिश देते हुए फायरिंग, आर्म्स एक्ट, फरार वांछित अपराधियों एवं संपत्ति संबंधी अपराधों के प्रकरण में जमानतशुदा 5 सरगनाओ राहुल पुत्र प्रहलाद निवासी झीडागढ़ तन लाडाकाबास, रणजीत सिंह पुत्र विक्रम सिंह निवासी प्रागपुरा, राजेश पुत्र शीशराम निवासी वीर तेजाजी नगर, नरेश पुत्र प्रकाश निवासी क्यारा थाना मुंडावर, नरेंद्र पुत्र धन्नाराम निवासी वीर तेजाजी नगर को गिरफ्तार कर सफलता अर्जित की।

बजरंग दल कार्यकर्ताओं की बैठक

करौली। विहिप के, प्रचार प्रसार प्रमुख नरेंद्र सिंह टटवाई ने बताया कि बैठक में विश्व हिंदू परिषद के प्रांतीय अध्यक्ष प्यारेलाल मीणा उनके साथ मंच पर प्रांतीय सह सत्संग प्रमुख अमृत बाबा, सवाई माधोपुर विभाग के संगठन मंत्री विष्णु तथा बजरंग दल के विभाग संयोजक नरेश के द्वारा मां सरस्वती के चित्रपट पर माला एवं दीप प्रज्वलन कर पंडित राजेंद्र प्रसाद शर्मा के द्वारा मंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया। बैठक में राष्ट्रधर्म के विविध पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की गई। प्रमुख बिंदुओं में धर्म आधारित संस्कार एवं राष्ट्रप्रेम की भावना जगाने हेतु संस्कारशालाओं का संचालन, लव जिहाद, हिंदू धर्म के अनुसार विभिन्न त्यौहारों को मनाए जाने की योजना के साथ हिंदू समाज के विरुद्ध फैलाए जा रहे नकारात्मकता को रोके जाने की कार्य योजना, स्वजागरण, कर्तव्य निष्ठा, पर्यावरण संतुलन के लिए कार्य करना आदि विषयों पर विचार विमर्श किया गया।प्रांतीय अध्यक्ष मीणा ने कहा कि हमें अपनी आने वाली पीढ़ी को सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक रूप से जागरूक बनाना होगा। संस्कार शालाएं इस दिशा में एक सशक्त माध्यम बन सकती हैं।संगठन मंत्री विष्णु एवं बजरंग दल के विभाग प्रमुख नरेश ने कहा कि विघटनकारी ताकतें देश में जाति, धर्म,भाषा और क्षेत्रवाद के आधार पर फूट डालने का षड्यंत्र कर रही हैं।

वृक्षारोपण प्रगति अपडेट पोर्टल पर किया जाये : एडीएम सुमित्रा मिश्र

खैरथल में अतिरिक्त जिला कलेक्टर सुमित्रा मिश्र की अध्यक्षता में जिला सचिवालय पर साप्ताहिक समीक्षा बैठक का आयोजन किया।

- **साप्ताहिक समीक्षा बैठक में विभागवार प्रगति समीक्षा कर अधिकारियों को दिए निर्देश**

खैरथल। अतिरिक्त जिला कलेक्टर सुमित्रा मिश्र की अध्यक्षता में जिला सचिवालय पर साप्ताहिक समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। बैठक के दौरान अतिरिक्त जिला कलेक्टर मिश्र ने पिछली जनसुनवाई में आए परिवादों की समीक्षा कर सम्भावित मौसमी बीमारियों की रोकथाम, बिजली, पानी सार्वजनिक आवश्यक सेवाओं की सूचारू रूप से आपूर्ति, केंद्र की विभागीय फ्लैगशिप योजना एवं समीक्षा बैठकों की अनुपालना रिपोर्ट, सम्पर्क पोर्टल की वर्तमान स्थिति एवं प्रगति की विभागवार समीक्षा की। अतिरिक्त जिला कलेक्टर ने पिछली जनसुनवाई में आए परिवादों में संपर्क पोर्टल पर लंबित प्रकरणों का निर्धारित समय अवधि में निस्तारित करने के निर्देश दिए। उन्होंने सभी विभागों द्वारा अभी तक किए गए वृक्षारोपण की समीक्षा कर अधिकारियों को की गई प्रगति का अपडेट पोर्टल पर करने के निर्देश दिए। उन्होंने ने स्वाधीनता दिवस की तैयारी हेतु सभी अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने जिला स्तरीय कार्यक्रम को धूमधाम से मनाने हेतु अधिकारियों को अभी से तैयारी में जुटने के निर्देश दिए हैं साथ ही उन्होंने विभागीय अधिकारीयों को अपने अधीनस्थ को स्वाधीनता दिवस पर उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मानित करवाने हेतु फॉर्म भरकर 11 अगस्त को शाम 5:00 से पूर्व जमा करवाने के निर्देश दिए।

आमजन की समस्याओं का त्वरित निस्तारण करें : कलक्टर

- **जिला कलक्टर ने ली साप्ताहिक समीक्षा बैठक**

कोटपूतली। जिला कलेक्ट्रेट सभागार में सोमवार को जिला कलक्टर प्रियंका गोस्वामी की अध्यक्षता में साप्ताहिक समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में संपर्क पोर्टल, सड़कों की स्थिति, विकास कार्यों, कल्याणकारी योजनाओं व बजट घोषणाओं के क्रियान्वयन को लेकर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई।

उन्होंने सभी बजट घोषणाओं के गुणवत्तापूर्ण एवं समयबद्ध निस्तारण के निर्देश दिये। जिला कलक्टर ने संपर्क पोर्टल, सीएमओ, जनसुनवाई, जनप्रतिनिधियों से प्राप्त आमजन के लंबित परीवादां की विभागवार समीक्षा करते हुये कहा कि परिवादों का त्वरित व गुणवत्तापूर्ण समाधान सुनिश्चित करें, एवरेज डिस्पोजल टाईम में कमी लायें।

उन्होंने कहा कि यह ध्यान रखे कि समाधान केवल औपचारिक ना हो बल्कि संतुष्टिपूर्ण हो। उन्होंने मानसून के मद्देनजर संबंधित विभाग को बिजली व पेयजल की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करते हुये अपनी मशीनरी को सक्रिय रखने, जल भराव की समस्या से निपटने के लिए नगर परिषद को पुख्ता कार्यवाही करने के निर्देश दियें।

उन्होंने हरियालां राजस्थान की प्रगति पोर्टल पर अपडेट करने सहित सरकार की फ्लैगशिप व अन्य योजनाओं पर विभागवार चर्चा कर योजनाओं का लाभ नियामानुसार प्रत्येक पात्र को दिलाने के निर्देश अधिकारियों को दिये।

एडीएम ओमप्रकाश सहारण ने गत बैठक में दिये गये निर्देशों कि अनुपालना रिपोर्ट की समीक्षा करते हुये कहा कि संपर्क पोर्टल के परीवादों को प्राथमिकता से लेंवे, तुरंत निपटारा कर परिवादी को राहत पहुंचायें। बैठक में संबंधित जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

बालिकाओं का जन्मोत्सव मनाया : कोटपूतली में मुख्यमंत्री लाडो प्रोत्साहन योजना के एक वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में महिला अधिकारिता विभाग कोटपूतली ब्लॉक द्वारा सोमवार को कस्बे के डाबला रोड़ स्थित मंगलराम राजकीय विद्यालय में लाडो प्रोत्साहन योजना का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस मौके पर 01 अगस्त 2024 के बाद जन्म लेने वाली बालिकाओं का जन्मोत्सव मनाया गया। साथ ही बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ रैली निकाली गई एवं पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के विषय में विशेष जागरण बैठक आयोजित की गई।

ब्लॉक सुपरवाईजर किरण धूवा ने बताया कि 01 अगस्त 2024 को लाडो प्रोत्साहन योजना की शुरुआत की गई थी। जिसके अंतर्गत राज्य में जन्म लेने वाली प्रत्येक बालिकाओं को विभिन्न चरणों में 01 लाख 50 हजार रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की जाती हैं। इस दौरान बालिका के पालन पोषण, शिक्षण व स्वास्थ के मामले में होने वाले लिंग भेदभाव को रोकने पर जोर दिया गया। इस मौके पर अध्यापिका सोनू, विनम्रता, सुनीता, ग्राम साथीन सुमन, मधुबाला, रचना, मनीषा, कार्यकर्ता ममता देवी, सहायिका पूनम सैनी समेत बालिकायें व महिलायें मौजूद रही।

देश प्रेम का संदेश दिया

अलवर। जिला कलक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला के निर्देशन में हर घर तिरंगा अभियान के तहत आज जिले के विद्यालयों में तिरंगा यात्रा, तिरंगा शपथ सहित विभिन्न गतिविधियां आयोजित कराई गई।

इस दौरान बडी संख्या में विद्यार्थियों ने उत्साह के साथ तिरंगा झण्डा यात्रा के माध्यम से वंदे मातरम व भारत माता की जयघोष के नारों के साथ राष्ट्रीय एकता, अखण्डता एवं देश प्रेम का संदेश दिया। उन्होंने बताया कि हर घर तिरंगा अभियान के तहत प्रथम फेज में 8 अगस्त तक, द्वितीय फेज में 9 से 12 अगस्त तक एवं तृतीय फेज में 13 से 15 अगस्त तक विभिन्न गतिविधियों व कार्यक्रमों का आयोजन होगा जिसमें स्कूलों की दीवारों पर तिरंगे की चित्रकारी करवाना, तिरंगा मेला आदि कार्यक्रम जनप्रतिनिधियों, विद्यालयों, महाविद्यालयों, सामाजिक संगठनों एवं आमजन की सहभागिता से सम्पन्न कराए जाएंगे।

आकाश नेशनल टेलेंट हंट परीक्षा 2025 लॉन्च

अलवर। भिवाड़ी मे छात्रों के सपनों को कामयाबी में बदलते हुए 16 सफल साल पूरे करने पर, आकाश एजुकेशनल सर्विसेज लिमिटेड (रश्वस्त्रु) - जो टेस्ट प्रिपरेशन में देश की अठाणी संस्था है - ने अपने प्रमुख इनिशिएटिव एंथे 2025 (आकाश नेशनल टैलेंट हंट एग्ज़ाम) की शुरुआत का ऐलान किया है।

भारत के एकेडमिक कैलेंडर में हर साल का सबसे बहुप्रतीक्षित इवेंट माने जाने वालेएंथे 2025का मकसद, कक्षा 5वीं से 12वीं तक के छात्रों को चुनौतियों से लडऩे और असली प्रॉब्लम सॉल्वर बनने के लिए प्रेरित और सशक्त बनाना है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को सभी तक पहुँचाने के अपने मिशन को आगे बढ़ाते हुए, एंथे 2025 में स्टूडेंट्स को रूपये 250करोड़ तक की स्कॉलरशिप (100 प्रति.तक) दी जा रही है, जो क्लासरूम, आकाश डिजिटल और इन्विक्टस कोर्सेस पर लागू होगी।

इसके साथ ही रूपये 2.5करोड़ तक के कैश अवॉर्ड्स भी दिए जा रहे हैं, जो मेडिकल या इंजीनियरिंग में सक्सेसफुल करियर का सपना देखने वाले स्टूडेंट्स के लिए मददगार साबित होंगे। यह एग्जाम स्टूडेंट्स के लिए एईएसएल नीट,जई,स्टेट सीईटी,एनटीएसई और ओलयमपाईडस जैसे कॉम्पिटिटिव एग्जाम्स की बेस्ट कोचिंग पाने का रास्ता खोलता है, जो आक़ाश के एक्सपर्ट फैकल्टी द्वारा दी जाती है। इस प्रतिबद्धता को और मज़बूत करते हुए, आकाश अब इन्विक्टस ऐस टेस्ट लॉन्च कर रहा है - एक स्कॉलरशिप परीक्षा, जो कक्षा 8 से 12 तक के छात्रों के लिए आकाश इन्विक्टस जेईई एडवांस्ड प्रिपरेशन प्रोठााम में एडमिशन के लिए है।यह एक नेशनल-लेवल एलिजिबिलिटी-कम-स्कॉलरशिप टेस्ट है, जो 24 अगस्त, 31अगस्त और 7सितंबर2025 को आयोजित होगा।

तीन घंटे की यह परीक्षा (सुबह10 बजे से दोपहर 1 बजे तक) ऑनलाइन औ रऑफलाइन दोनों मोड में उपलब्ध होगी, जिसकी एप्लिकेशन फीस रूपये 300 है।जो छात्र बेहतरीन प्रदर्शन करेंगे,उन्हें100 प्रति. तक की स्कॉलरशिप और शानदार कैश प्राइज दिए जाएंगे। आकाश इन्विक्टस प्रोठााम देश के चुनिंदा इन्विक्टस सेंटर्स पर उपलब्ध है, जिनमें शामिल हैं: दिल्ली-एनसीआर, चेन्नई, बेंगलुरु, लखनऊ, मेरठ, प्रयागराज, देहरादून, भोपाल, इंदौर, अहमदाबाद, चंडीगढ़, रोहतक, हैदराबाद, नमक्कल, कोयंबटूर, भुवनेश्वर, रांची, त्रिची, विशाखापट्टनम, मुंबई, कोलकाता, दुर्गापुरऔरपटना।

आकाश एजुकेशनल सर्विसेज लिमिटेडके सीईओ और एमडी, दीपक मेहरोत्रा ने कहा, एंथे अब देशभर के छात्रों के लिए एक उम्मीद की पहचान बन चुका है। पिछले 16 वर्षों में हमने मेधावी छात्रों को उनके सपनों को पूरा करने का मौका दिया है, चाहे उनकी आर्थिक स्थिति या लोकेशन कुछ भी हो। आकाश में हमारा मानना है कि हर छात्र में क्रिटिकल थिंकिंग, समस्याएं हल करने और बदलाव लाने की क्षमता होती है। एंथे 2025 इस सोच को आगे बढ़ाते हुए छात्रों को सही संसाधन, सहयोग और मोटिवेशन देगा ताकि वे आगे बढ़ें और

गणेश उत्सव सामूहिक रूप से किया जाएगा : महंत

गणेश चतुर्थी उत्सव मनाने के सम्बंध में गणेश मंदिर समिति की बैठक हुई।

- **गणेश मंदिर न्यास समिति की बैठक का आयोजन**
- **लिखित सहमति के अनुसार छप्पन भोग एवं डेकोरेशन न्यास समिति**

टोंक। गणेश चतुर्थी के अवसर पर अन्नपूर्णा गणेश मंदिर में होने वाले गणेश उत्सव की तैयारियों को लेकर श्रीबालाजी अन्नपूर्णा गणेश मंदिर न्यास समिति की बैठक का आयोजन मंदिर परिसर में महंत कैलाश पुरी की अध्यक्षता में किया गया। बैठक में महंत कैलाश पुरी ने बताया कि इस बार होने वाले गणेश उत्सव का आयोजन न्यास समिति एवं आनंदम संस्था द्वारा सामूहिक रूप से किया जाएगा, दोनों पक्षों द्वारा लिखित सहमति के अनुसार छप्पन भोग एवं डेकोरेशन न्यास समिति द्वारा तथा भजन संध्या का आयोजन आनंदम संस्था द्वारा किया जाएगा। महंत ने कहा कि आगामी वर्षों में होने वाले गणेश उत्सव का आयोजन न्यास समिति द्वारा ही किया जाएगा, जिसमें आनंदम संस्था की कोई भूमिका नहीं रहेगी। न्याय समिति द्वारा भगवान श्रीगणेश को निमंत्रण बुधवार 6 अगस्त को विधि विधान से पूजा अर्चना से किया जाएगा। बैठक में न्यास समिति के पदाधिकारी आर. एन. पहाडिया, महेंद्र बैरवा, देवेंद्र वर्मा, मुकेश यादव, विजय तसेरा, श्याम सिंघल, ओम आंडरा, महेश चौहान, घासीलाल साहू, शंकर लाल यादव, राम किशन, सुनील सैनी, कालूराम, वहीं आनंदम संस्था के पदाधिकारी राजेश मुमिया, भगवानदास गुर्जर, राजाराम यादव एवं रामकिशन आदि मौजूद रहे।

खेडका की डूंगरी को हरा-भरा किया

अलवर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के निर्देशन में प्रदेश में संचालित हरियालो राजस्थान अभियान के तहत व्यापक स्तर पर पौधारोपण किया जा रहा है। राज्य सरकार द्वारा अलवर जिले को पौधारोपण के लिए दिए गए लक्ष्य में विभागों के साथ-साथ आमजन भी अपनी सहभागिता निभाकर पर्यावरण संरक्षण का बल प्रदान करने में महती भूमिका निभा रहे हैं।

जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सालुखे गौरव रवीन्द्र ने बताया कि अभियान में जिले के ग्रामीण क्षेत्रों की ग्राम पंचायतो में महिलाएं भी पौधा लगाने के लिए बढचढकर हिस्सा ले रही है तथा अपने क्षेत्र को हरा-भरा एवं पर्यावरण को स्वच्छ बनाने के लिए अपनी नैतिक जिम्मेदारी निभा रही है जिसमें उमरैण पंचायत समिति की खेडक़ा ठााम पंचायत में स्थित डूंगरी पर महिलाओं ने हरियालो राजस्थान अभियान के तहत पौधारोपण किया। विगत वर्ष भी मनरेगा की महिलाओं द्वारा खेडका पंचायत की पहाड़ी पर बड़ी संख्या में पौधरोपण किया, जिनके नियमित रख-रखाव एवं सुरक्षा के बाद काफी पौधे अब भी यहां पर जीवित स्थित में दिखाई दे रहे है और काफी बड़े हो गए हैं तथा कई पौधों ने वृक्ष का रूप भी ले लिया है जिससे खेडक़ा ग्राम पंचायत की खाली पड़ी हुई यह पहाड़ी अब.हरी-भरी नजर आने लगी है।

कथा सुनने भारी संख्या में श्रद्धालु उमड़े

राजगढ़। शिव मित्र मंडल की ओर से आयोजित भागवत कथा में सोमवार को श्री कृष्ण लीला एवं पूतना राक्षसी की कथा में भारी संख्या में श्रद्धालु उमड़े। इस अवसर पर कथा वाचक अमन भारती महाराज ने कृष्ण की बाल लीला का मनोरम वर्णन किया।

कथा वाचक एवं महंत अमन भारती महाराज ने कहा कि मनुष्य विषय विकार एवं अवगुणो का त्याग कर मंदिर में प्रार्थना करें, उसी पर ठाकुर जी की कृपा संभव है।

तीये की बैठक

अत्यन्त दुख के साथ सूचित किया जाता है कि मेरे प्रिय पुत्र **आदित्य शर्मा** का आकस्मिक निधन 02.08.2025 को हो गया है। जिसकी तीये की बैठक दिनांक 05.08.2025 को शाम 4.30 से 5.30 बजे तक हैंगिंग गॉर्डन, जयसिंह पुरा, अजमेर रोड, भांकरोटा पर होगी।

शोकाकुल- नरेन्द्र शर्मा (पिता), महेन्द्र शर्मा (चाचा), अरुण, बुद्धि प्रकाश, मोहक (भाई) एवं समस्त जैमन परिवार, जयपुर (महेश्वरा कलां)

मो.6376289050, 9887888889

नम्बर मिलाइए 9587884433

सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

बाबा महाकाल की नगर भ्रमण यात्रा निकाली

बिजयनगर। पवित्र श्रावण मास के पावन अवसर पर रविवार को गुलाबपुर स्थित देवनारायण मन्दिर से पवित्र जल के लेकर कांवड़ यात्रा बिजयनगर पहुंची ओर पवित्र जल से शिव परिवार का सहस्त्र धारा जलाभिषेक किया गया। इस अवसर पर बावा महाकाल शाही सवारी की नगर भ्रमण यात्रा गाजे-बाजे के साथ निकाली गई।बाबा महाकाल की सवारी शिव मन्दिर से प्रारंभ होकर बालाजी मंदिर कृषि मण्डी रोड, पोपली चौराहा, महवीर बाजार, बापूबाजार होती हुई मन्दिर पहुंची। बाबा महाकाल के नगर भ्रमण की सवारी को देखने के लिएश्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी।उज्जैन के कलाकारों द्वारा शहर के प्रमुख बाजारों चौराहों पर भस्म नृत्य की शानदार प्रस्तुतियां के साथ में हरियाणा कलाकारों द्वारा भगवान शिव परिवार व उज्जैन के महाकाल की आकर्षक झांकी आकर्षण का केंद्ररही और उज्जैन से बैरागी एंड पार्टी के द्वारा हेरत अगेज फायरिंग प्रदर्शन किया। बाबा महाकाल के नगर भ्रमण सवारी के दौरान उज्जैन की तर्ज पर महाकाल की भस्म की झांकी के साथ उज्जैन के कलाकारों द्वारा भस्म नृत्य की शानदार प्रस्तुति दी गई।नीलकंठ गौरी शंकर महादेव मंदिर पुजारी भरत शर्मा राजेंद्र शर्मा हितेश लोढ़ा, निलेश आगीवाल, विजय काबरा, अभिषेक मालू, सहित श्रद्धालुबाबा महाकाल की शाही सवारी नगर भ्रमणमें शामिल हुए।

एसपी ने फुलेरा व सांभर थाने का निरीक्षण किया

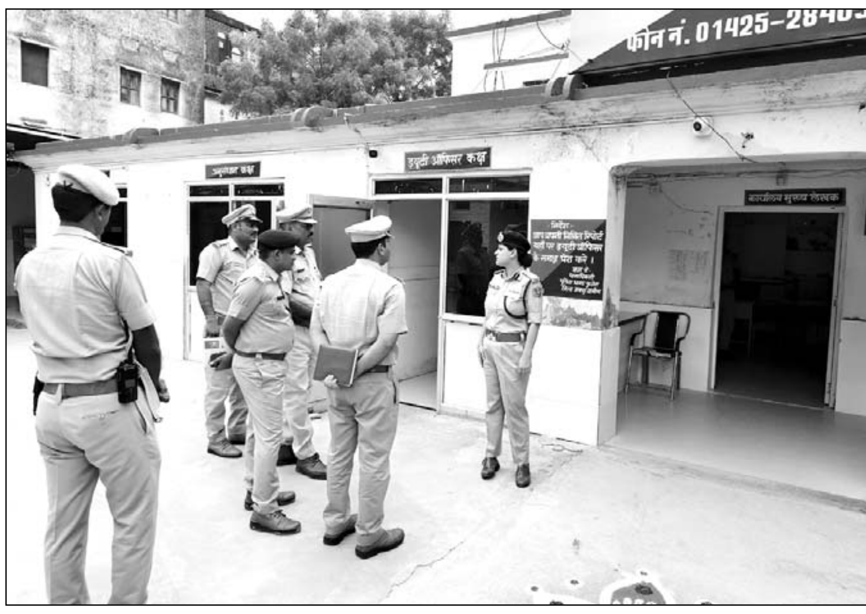

पुलिस अधीक्षक राशि डोगरा डूडी ने फुलेरा व सांभरलेक थाने का औचक निरीक्षण किया।

फुलेरा। जयपुर ग्रामीण पुलिस अधीक्षक राशि डोगरा डूडी ने गत दिवस फुलेरा व सांभरलेक थाने का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान एसपी ने थाने की विभिन्न व्यवस्थाओं का जायजा लिया। जिसमें उन्होंने मालखाना, कम्प्यूटर कक्ष, रिकॉर्ड रूम, अभिलेखों की जांच की, पुलिस कर्मियों के आवास, थाने की मैस की जांच की, और पुलिस जवानों से उनकी कार्यप्रणाली की जानकारी ली। साथ ही थानाधिकारी चन्द्रप्रकाश यादव एवं पुलिस कर्मियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। इस दौरान अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक दूदू शिवलाल बैरवा, वृताधिकारी सांभरलेक अनुपम मिश्रा मौजूद रहे। एसपी ने सांभर थाने का निरीक्षण कर लंबित प्रकरणों की स्थिति और त्वरित न्याय को लेकर अधिकारियों से चर्चा की। वहीं निरीक्षण के बाद थाना परिसर में पौधा रोपण किया गया।

प्रागपुरा थाना क्षेत्र में चोर पुलिस की पकड़ से दूर

पावटा। प्रदेश सरकार पुलिस को हर स्तर पर बेहतर बनाने की कोशिश में जुटी हुई है। बावजूद इसके प्रागपुरा थाना पुलिस अपने पुराने ढर्रे पर ही चल रही है। पुलिस की निष्क्रियता यह है कि क्षेत्र के विभिन्न गांवों में हुई चोरियों का आज तक खुलासा करना तो दूर किसी घटना का सुराग तक नहीं लगा सकी है। इससे चोरों का मन बढ़ा हुआ है। कस्बा क्षेत्र में चोरों के हौसले इस कदर बुलंद है कि क्षेत्र में इन दिनों चोरी की घटनाओं के अनेक मामले सामने आ रहे है। लेकिन पुलिस प्रशासन इन पर अंकुश लगाने में फेल साबित हो रहा है। पुलिस प्रशासन का स्लोगन है कि आमजन मे विश्वास व अपराधी में भय लेकिन धरातल पर स्थित इससे कहीं परे है। अब चोरों के मन से पुलिस प्रशासन का भय निकल चुका है। क्षेत्र में गत दिनों बावड़ी में रात चोरों ने चोरी की दो घटनाओं को अंजाम दिया जहां पर चोर इतने बेखौफ दिखे कि घर में सो रही महिला के पैरों से चांदी की पायजेब निकाल कर ले गए। वही चबूतरे वाले महाराज के निकट स्थित अनाज व्यापारी राजेश यादव के मकान व गौमती धाम राधे कृष्ण मंदिर में चोरी की वारदात को अंजाम दिया। वही पावटा में पुलिया स्थित जय शिव ऑयल मिल का सामने आया है, जहां अज्ञात चोरों ने टीन शेड को काटकर कार्यालय में रखे गल्ले के ताला तोड़कर नकदी सहित अन्य कीमती सामान पार कर लिया।

आम सूचना दिनांक 02.08.2025

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे अभिभाष्य श्री हरविंदर पाल सिंह पुत्र श्री करतार सिंह आयु 73 वर्ष जाति सिख निवासी-235, गुरु नानकपुरा, आदर्श नगर, जिला जयपुर, राजस्थान का पुत्र भगवंत सिंह, आयु 45 वर्ष किसी भी प्रकार से मेरे अभिभाष्य के कहने में नहीं है। मेरे अभिभाष्य के पुत्र को मेरे अभिभाष्य ने अपनी समस्त चल-अचल सम्पत्ति से बेदखल कर दिया है। मेरा अभिभाष्य आज घोषणा करता है कि मेरे अभिभाष्य के पुत्र से आज दिनांक के पश्चात् भविष्य में कोई भी व्यक्ति किसी भी प्रकार का संव्यवहार करता है तो उसका वह स्वयं जिम्मेदार होगा। जिसकी मेरे अभिभाष्य की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी। **गोविन्द कुमार सैनी एडवोकेट मो. 8209254206**

राजस्थान आवासन मण्डल, वृत्त-प्रथम, प्रताप नगर, जयपुर
क्रमांक- दिनांक-

जाहिर आम-सूचना

राजस्थान आवासन मण्डल की प्रताप नगर, सांगानेर योजना में आवास संख्या 64/190 (EWS), (एरिया 36.000 वर्गमीटर) प्रताप नगर, सांगानेर का आवंटन श्री राजेन्द्र अग्रवाल पुत्र श्री बजरंग लाल को किया जाकर आवंटन पत्र क्रमांक 890 दिनांक 30.04.1992 को जारी किया गया। श्रीमती राधा देवी खींची पत्नी श्री गोपाल प्रसाद खींची के पक्ष में उक्त आवास का नियमितिकरण पत्र क्रमांक 1967/10552 दिनांक 16.03.2018 के द्वारा किया गया। श्रीमती राधा देवी खींची की मृत्यु दिनांक 14.05.2021 को हो जाने के कारण इनके पति श्री गोपाल सिंह खींची पुत्र स्व. श्री नारायण सिंह द्वारा घोषणा पत्र के आधार पर उक्त आवास को स्वयं के नाम हस्तान्तरण करने हेतु आवेदन किया गया है। अतः उक्त आवास के हस्तान्तरण बाबत किसी व्यक्ति/पक्षकार को कोई आपत्ति हो तो अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में 7 दिवस में अपनी आपत्ति प्रस्तुत करें अन्यथा यह मानते हुए की मण्डल रिकॉर्ड में नाम दर्ज करने में किसी को कोई आपत्ति नहीं है, श्री गोपाल सिंह खींची पुत्र स्व. श्री नारायण सिंह का नाम मण्डल रिकॉर्ड में दर्ज कर दिया जावेगा।
सम्पदा प्रबन्धक, वृत्त प्रथम, राजस्थान आवासन मण्डल, जयपुर

राजस्थान राज्य सहकारी आवासन संघ लि., जयपुर
5वीं व 6वीं मंजिल नेहरू सहकार भवन, 22 गोदाम सर्किल, जयपुर
Phone: 0141-2741805 Email: rsehfjaipur@yahoo.com
क्रमांक-114/25 दिनांक- 01.08.2025

आम सूचना संघ की आवासीय योजना कमला नेहरू नगर, अजमेर रोड, जयपुर का भवन संख्या 1-घ-9, श्री प्रेमप्रकाश परनामी को आवंटित किया गया था, जिसे जरिये इकरारनामा श्रीमती पदमा देवी शाह पत्नि श्री हरकचन्द शाह द्वारा क्रय किये जाने पर संघ द्वारा आदेश क्रमांक 8353/89 दिनांक 29.03.1989 द्वारा श्रीमती शाह के नाम ट्रांसफर कर कन्वेन्स डीड एवं परप्यूचल लीज जारी कर रजिस्ट्री करवा दी गई थी। अब इनके पुत्र श्री प्रदीप शाह एवं श्री प्रवीण कुमार शाह द्वारा उनके माता-पिता श्रीमती पदमा देवी शाह एवं श्री हरकचन्द शाह के मृत्यु प्रमाण पत्र एवं आवश्यक दस्तावेज प्रस्तुत कर उनके नाम संयुक्त रूप उक्त भवन ट्रांसफर करने हेतु आवेदन किया गया है। जिस किसी को उक्त भवन के हस्तांतरण पर आपत्ति हो, तो संघ कार्यालय में 15 दिवस में प्रमाण सहित प्रस्तुत करें, अन्यथा भवन सं. 1-घ-9, कमला नेहरू नगर, अजमेर रोड, जयपुर को संयुक्त रूप से श्री प्रदीप शाह एवं श्री प्रवीण कुमार शाह के नाम हस्तान्तरण कर दिया जावेगा।
(योगेश शर्मा) प्रबन्ध निदेशक
राजस्थान राज्य सहकारी आवासन संघ लि., जयपुर

कार्यालय उप आवासन आयुक्त वृत्त प्रथम
राजस्थान आवासन मण्डल वृत्त-प्रथम
क्रमांक 5880 **आम जाहिर सूचना** दिनांक 29.07.2025

राजस्थान आवासन मण्डल की प्रताप नगर योजना में आवास / फ्लेट संख्या 50/26 मध्यम आय वर्ग ब (एरिया 162.00 वर्गमीटर) का आवंटन श्रीमती नन्दी भाकुनी (टाक) पत्नी श्री सीताराम टाक को किया गया था। जिसका आवंटन पत्र क्रमांक 1041 दिनांक 20.06.1996 को जारी किया गया था। उक्त आवास का भौतिक कब्जा दिनांक 25.06.1997 को सम्भलाया गया। श्रीमती नन्दी भाकुनी (टाक) की मृत्यु दिनांक 07.05.2015 को हो जाने के कारण उनकी पुत्री सुश्री इरा टाक पुत्री स्व. श्री सीताराम टाक द्वारा आवासन मण्डल मे अपना नाम मण्डल रिकॉर्ड में दर्ज कराने बाबत आवेदन पत्र प्रस्तुत किया हैं। अतः उक्त आवास का हस्तान्तरण बाबत किसी व्यक्ति / पक्षकार को कोई आपती हो तो अधोहस्ताक्षर कर्ता के कार्यालय में 7 दिवस में अपनी आपति प्रस्तुत करें अन्यथा यह मानते हुए की मण्डल रिकॉर्ड में नाम दर्ज करने में किसी को कोई आपति नही हैं, सुश्री इरा टाक पुत्री स्व. श्री सीताराम टाक का नाम मण्डल रिकॉर्ड में दर्ज कर दिया जावेगा।
संपदा प्रबंधक, वृत्त प्रथम, राज. आ. मण्डल, जयपुर

नाम परिवर्तन

मैं, गोकिदी लक्ष्मीमम्मा Mother of No.15714982F लांस नायक ओमकारम गोकिदी, निवासी वीपीओ-बारूवा, तह. सोमपेटा, जिला श्रीकाकुलम (आन्ध्र प्रदेश) में रहती हूँ। मेरे बेटे के सेवा दस्तावेज में मेरा नाम लक्ष्मी है जन्मतिथि 08.04.1960 गलत दर्ज है। मेरा सही नाम गोकिदी लक्ष्मीमम्मा, जन्मतिथि 01.01.1971 है। शपथ पत्र संख्या 0011209299 दिनांक-01.08.2025

मैंने अपना नाम संजय शर्मा से बदलकर संजय नारायण पुत्र श्री सत्यनारायण शर्मा रख लिया है। भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना जावें। पता-46, गोनेर रोड, राजीव विहार कॉलोनी, बाबाजी गेट, लूनियावास, जयपुर।

मैं संदीप शर्मा पुत्र सत्यनारायण शर्मा निवासी-46, गोनेर रोड, राजीव विहार कॉलोनी, बाबाजी गेट, लूनियावास, जयपुर। मेरी माताजी की Insurence पॉलिसी में मेरी D.O.B 01.01.1990 एवं पिताजी का नाम राजकुमार शर्मा गलत दर्ज है। जबकि मेरी D.O.B. 09.08.1987 एवं पिताजी का सही नाम सत्यनारायण शर्मा है।

मैं शारदा पत्नी आर्मी नं 15223346M रैंक नायक, विरेन्द्र सिंह निवासी 04 तुरक्या, मंदसौर, मध्यप्रदेश-458556 ने भविष्य में सभी उद्देश्यों से अपना नाम बदलकर शारदा बाई रख लिया है।

I, Rajesh Vashisth S/o Krishan Kumar Solemnly Declare that I have Changed my Name from Rajesh Vashisth/Rajesh to Rajesh Kumar R/o Flat No. T-2, Plot No. 37, Prem Sagar Riksha, Sanganer, Jagatpura, Jaipur, Rajasthan 302029. For all Future Purposes.

कार्यालय कृषि उपज मण्डी समिति नदबई जिला भरतपुर (राज0)
क्रमांक :- राजकाज 16949450 दिनांक :- 02/08/2025

ई-बोली आमंत्रण सूचना संख्या-02/2025-26

इच्छुक बोलीदाताओं से चौकीदारी व्यवस्था ठेका ,कम्प्यूटर मय प्रषिक्षित कार्मिक ठेका, सफाई व्यवस्था ठेका हेतु ई-तकनीकी निविदा दिनांक 18.08.2025 सांय 6.00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। ई-तकनीकी निविदा के सबंध में अन्य विवरण राजस्थान राज्य की उपापन पोर्टल https://eproc.rajasthan.gov.in, https://sppp.rajasthan.gov.in पर और विभागीय वेबसाईट www.agriculture.rajasthan.gov.in/dam पर देखे जा सकते है।

UBN No. : DAM2526SLOB00582, DAM2526SSOB00581 & 00583

सचिव
कृषि उपज मण्डी समिति, नदबई
राज.संवाद/सी/25/7480

कार्यालय नगर पालिका दूदू, जिला जयपुर
क्रमांक-न.पा.दु./2025-26/268 दिनांक 01.08.2025

लोक सूचना

श्री ओमप्रकाश पुत्र घासी राम उम्र 68 वर्ष, जाति जाट, निवासी 24/151 स्वर्ण पथ, मान सरोवर जयपुर (राज.) श्री सुरेश कुमार चौधरी पुत्र श्री सुखदेव नारायण चौधरी उम्र 61 वर्ष, जाति जाट 73/214 शिप्रा पथ, टैगोर अस्पताल के पास मानसरोवर जयपुर (राज.) ने नगर पालिका दूदू में नीचे उल्लिखित भूमि का कृषि भूमि से अकृषि प्रयोजन हेतु पत्रावली दर्ज कराई है जिसके अनुसार विवरण निम्न प्रकार हैं।

तहसील दूदू, जिला जयपुर (राज.)	ग्राम दूदू, पटवार हल्का दूदू ए	खसरा नम्बर 9023/6436	रकबा 0.3479 हक्टेयर

इसलिए इसके द्वारा समस्त संबंधित व्यक्तियों को सूचित किया जाता है 90-क प्रयोजनों के लिए भूमि के उपयोग हेतु अनुज्ञा प्रदान करने और अभिधृति अधिकारों के निर्वापन पर कोई आक्षेप है तो वह इस नोटिस के प्रकाशन के 7 दिन के अन्दर मयाद दस्तावेजों सहित लिखित में आपत्ति कार्य दिवस के दौरान कार्यालय समय में अधोहस्ताक्षरकर्ता को प्रस्तुत करावें। बाद मयाद गुजरने आपत्ति मान्य नहीं होगी। यह सूचना मेरे हस्ताक्षर और मुहर के अधीन आज आज दिनांक.... को जारी की गयी।

अधिशाषी अधिकारी
नगर पालिका दूदू, जिला जयपुर

प्ररूप-10 (नियम 6 (7) देखिए)

प्राधिकृत अधिकारी कार्यालय नगरपालिका मण्डल, देवली (टोंक) राज.
क्रमांक-न.पा.दे./कृषि भूमि/2025-26/ दिनांक-

लोक सूचना

श्रीमती गीता देवी पत्नी श्री छितर लाल तेली एवं श्री संतोष कुमार पुत्र श्री छीतर लाल निवासी तेली मोहल्ला, देवली, तह. देवली जिला टोंक ने इस कार्यालय में नीचे उल्लिखित भूमि का गैर-कृषिक प्रयोजन के उपयोग हेतु ऐसी भूमि के अपने अभिधृति अधिकारों के निर्वापन के लिए आवेदन प्रस्तुत किया है, अर्थात-

जिले सहित तहसील का नाम	राजस्व ग्राम का नाम	खसरा सं.	रकबा/क्षेत्र (वर्गमीटर में)	मास्टर प्लान में दर्शित भू-उपयोग	भू-उपयोग का प्रकार
तह. देवली जिला टोंक	देवली गांव	4305	0.1700 है.	मास्टर प्लान में आवासीय	आवासीय से आवासीय

इसलिए इसके द्वारा समस्त संबंधित व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि यदि किसी व्यक्ति को राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 90-क और राजस्थान अभिधृति अधिनियम, 1955 की धारा 63 के अधीन पूर्वोक्त प्रयोजनों के लिए भूमि के उपयोग हेतु अनुज्ञा प्रदान करने और अभिधृति अधिकारों के निर्वापन पर कोई आक्षेप है तो वह इस नोटिस के प्रकाशन के 7 दिन के भीतर-भीतर किसी कार्य दिवस पर कार्यालय समय के दौरान अधोहस्ताक्षर के समक्ष समर्थक दस्तावेजों के साथ आक्षेप प्रस्तुत कर सकेगा।
उपर्युक्त नियत समय के भीतर-भीतर किसी आक्षेप के अभाव में यह समझा जायेगा कि किसी को आक्षेप नहीं है और तदनुसार मामले का निपटारा किया जायेगा।
यह सूचना मेरे हस्ताक्षर और मुहर के अधीन आज ...08.2025 को जारी की गयी।

अधिशाषी अधिकारी, नगर पालिका देवली

संक्षिप्त

श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन

कोटपूतली। कस्बे के निकटवर्ती ग्राम बनेठी स्थित प्राचीन धर्मशाला में शनिवार से सात दिवसीय श्रीमद् भागवत कथा का शुभारम्भ हुआ। इससे पूर्व सैकडों महिलाओं द्वारा भव्य कलश यात्रा निकाली गई। कलश यात्रा गांव के मुख्य मार्गो से भ्रमण करती हुई वापस कथा स्थल पहुंची। इसके बाद आचार्य शिवनन्दन भारद्वाज वृंदावन ने विधि-विधान से पूजा अर्चना कर कथा का प्रारम्भ किया। आचार्य शिवनन्दन भारद्वाज ने भागवत कथा करने के प्रतिफल के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि कथा करने और सुनने मात्र से ही मनुष्य के पापों का नाश होता है। भारद्वाज ने बताया कि जन्म-जन्मांतर और युग-युगांतर में जब पुण्य का उदय होता है, तब ऐसा अनुष्ठान होता है।कथा सुनने के लिए आसपास के अलावा दूर दराज से भी भक्त आए। भागवत को समझना भगवान को समझने के बराबर होता है। प्रभु से बढ़कर कोई अन्य सुख और संपदा नहीं है। भागवत कथा श्रवण करने वालों का सदैव कल्याण होता है। लेकिन आज का मानव भगवान की भक्ति को छोडकर विषय वस्तु को भोगने में लगा हुआ है। इस मौके पर बडी संख्या में ग्रामीण मौजुद रहे। इस कथा की तैयारी पहले से ही की जा रही थी।

जलाभिषेक किया

दूदू । सावन माह के अंतिम सोमवार को क्षेत्र के विभिन्न शिवालयों में भक्त जनों द्वारा जलाभिषेक कर पूजा अर्चना की गई इस दिन गैजी स्थित शैलेश्वर महादेव पूर्व जिला कलेक्टर निवास स्थित गंगेश्वर महादेव दूदू बाग स्थित चमत्कार ईश्वर महादेव मुख्य चौराहे पर स्थित शिवालय में भक्तजनों द्वारा पूजा अर्चना कर क्षेत्र की खुशहाली की कामना की गई । इस दौरान में सुबह से ही तैयारी की जा रही थी। भक्तों का आना जारी हो गया था। इस दौरान शिवालयों में झांकियां भी सजाई गई सुखी तलाई स्थित भूतेश्वर महादेव मंदिर में भजन कीर्तन कार्यक्रम का आयोजन किया जाकर झांकी सजाई गई महा आरती के बाद प्रसाद वितरण किया गया ।

राष्ट्रीय राजमार्ग पर सभी अवैध कट बंद होंगें, सरुण्ड थाना क्षेत्र से शुरू हुई कार्यवाही

सरूण्ड थाना प्रभारी ने कोटपूतली के राष्ट्रीय राजमार्ग पर अवैध कट बंद करवाया।

कोटपूतली। भारत में सड़कों का एक विशाल नेटवर्क है, जिसमें से एक बड़ा हिस्सा राष्ट्रीय राजमार्गों का हैं। जहां हर साल चिंताजनक रूप से सड़क दुर्घटनायें होती हैं। दरअसल जब दुनिया में सबसे ज्यादा सड़क दुर्घटनाएं और उनके कारण होने वाली मौतों और गंभीर चोटों की बात आती है तो भारत अग्रणी देशों में से एक है।

■ दुर्घटनाओं को रोकने के लिये उठाया जा रहा कदम

भले ही यातायात नियमों का उल्लंघन घातक दुर्घटनाओं का एक प्रमुख कारण है। जिले के नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया जेईएन सतीश कुमार ने बताया कि नेशनल हाईवे पर हरियाणा बॉर्डर से लेकर अलवर तिराहा 155 किलोमीटर लंबे क्षेत्र में ऐसे 150 अनऑथराईज्ड कट हैं। कट बंद करने की कार्यवाही सोमवार से सरुण्ड थाना क्षेत्र से शुरू कर दी गई हैं। इस मौके पर सरूण्ड थाना अधिकारी बाबूलाल मीणा मय जाप्ता मौजूद रहें। उल्लेखनीय है कि इन अवैध कट्स का उपयोग लोग रोड क्रॉस करने के लिये कर रहे थे। इन कट्स से बाईक, कार, व अन्य वाहन निकालते थे। जिसके चलते यातायात प्रभावित होता था एवं गलत दिशा से क्रॉस करने पर यातायात में बाधा उत्पन्न होती थी।

सम्मान समारोह आज

खैरथल। सरकार के बहनों का सुरक्षा सम्मान पर्व अभियान के तहत खैरथल जिला मुख्यालय पर पीएम श्री जवाहर नवोदय विद्यालय में मंगलवार सुबह 11 बजे जिला प्रशासन की ओर से जिला स्तरीय आंगनबाडी बहन सम्मान दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा।

जिला कलेक्टर किशोर ने बताया कि कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं से वीसी के माध्यम से संवाद कर उन्हें संबोधित करेंगे। जिला स्तरीय कार्यक्रम के सफल आयोजन को लेकर संबंधित विभागीय अधिकारियों को कार्य आवंटित करते हुए समुचित इंतजाम यथासमय सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। अतिरिक्त जिला कलेक्टर भिवाड़ी सुमित्रा मिश्र को नोडल अधिकारी, उपखंड अधिकारी किशनगढ़ बास मनीष कुमार जाटव को सहायक नोडल अधिकारी नियुक्त किया।

सार-समाचार

'योजनाओं से आम जन को लाभान्वित करें'

दूदू । पंचायत समिति वीसी सभागार में उपखंड अधिकारी रमेश कुमार ने ब्लॉक स्तरीय विभिन्न विभागों के अधिकारियों की बैठक लेकर केंद्र व राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं से आम जन को लाभान्वित करने के निर्देश दिए कुमार ने कहा कि संबंधित विभाग के अधिकारी अपनी-अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन कर आम जन को राहत प्रदान करें सरकारी योजनाओं से किसी परिवार को वंचित नहीं रखा जावे यह हर कर्मचारी अधिकारी का दायित्व है उपखंड अधिकारी द्वारा आयोजित बैठकों में अधिकारी को उपस्थित होना अनिवार्य होगा साथ ही विभागीय योजनाओं से जो भी सूचनाएं मांगी जावे तत्काल भेजनी होगी इसमें कोई कोताही नहीं बरती जाए इसी दिन आगामी 15 अगस्त को आयोजित होने वाले उपखंड स्तरीय स्वतंत्रता दिवस एवं तिरंगा कार्यक्रम की तैयारीयों चर्चा की गई विभिन्न व्यवस्थाओं को लेकर जिम्मेदारियां के तहत नगर पालिका प्रशासन को समारोह स्थल की व्यवस्था पुलिस प्रशासन को शांति व्यवस्था सोपी गई सांस्कृतिक कार्यक्रम की व्यवस्था शिक्षा विभाग मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी सुरक्षा शर्मा प्राचार्य रवि दायमा सविता साभरिया को सोपी गई बैठक में तहसीलदार मदनलाल परमार एवं अन्य सभी विभागीय अधिकारी मौजूद रहे ।

आवेदन करने की अंतिम तिथि 13 अगस्त

कोटपूतली। नवोदय विघालय में आवेदन करने की अंतिम तिथि 13 अगस्त हैं। पीएमश्री नवोदय विद्यालय पावटा के प्राचार्य ने बताया कि विद्यालय में सत्र 2026-27 हेतु कक्षा 06 के लिये ऑनलाइन आवेदन की प्रक्रिया की अंतिम तिथि नवोदय विद्यालय समिति मुख्यालय नोएडा के आदेशानुसार बढ़ाकर 13 अगस्त कर दी गई हैं। कोटपूतली-बहरोड जिले के साथ जयपुर जिले के सभी विद्यालयों में कक्षा 05 में अध्ययनरत विद्यार्थियों को भी कोटपूतली-बहरोड जिले में ही आवेदन करना हैं। उन्होंने कहा कि जयपुर जिले के सभी संस्था प्रधान एवं समस्त नागरिकों को विशेष रुप से सूचित किया जाता हैं कि अपने बच्चों का आवेदन करते समय ध्यान रखें कि जिला कोटपूतली-बहरोड का चयन कर नवोदय विद्यालय के लिये आवेदन करें।

अनुष्ठान में पंहुचे जिलाध्यक्ष

टोंक। भाजपा जिलाध्यक्ष चंद्रवीर सिंह चौहान ने देवली विधानसभा क्षेत्र स्थित धुआंकला में आयोजित मां बगलामुखी अनुष्ठान में शिरक्त कर धन्ना भगत पीठाधीश्वर बजरंग देवाचार्य का आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष चौहान ने कहा कि साधु-संत हमारे समाज के गौरव हैं, संत-महात्माओं के सान्निध्य से जीवन को दिशा मिलती है। साधु-संत व्यक्ति और समाज के पथ प्रदर्शक होते हैं, देश व राष्ट्र निर्माण में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण होती हैं। इस अवसर पर हरियालो राजस्थान अभियान के तहत एक पेड़ मां के नाम पौधारोपण किया। इस दौरान उपाध्यक्ष शैलेंद्र चौधरी, प्रवक्ता रत्तीराम पहाड़िया, पार्षद मनीष सिसोदिया, चरण सिंह चौधरी, कमलेश यादव सहित अन्य कार्यकर्ता मौजूद रहे।

''हर घर तिंरगा अभियान'' 15 तक

कोटपूतली। राज्य सरकार के निर्देशानुसार ''हर घर तिंरगा अभियान'' स्वाधीनता दिवस की वर्षगांठ के अवसर पर इस वर्ष 02 से 15 अगस्त तक आयोजित किया जा रहा हैं। जिला कलक्टर प्रियंका गोस्वामी ने आदेश जारी कर उक्त अभियान के सफल क्रियान्वयन हेतु ग्रामीण क्षेत्र में एसीईओ महेंद्र सैनी एवं शहरी क्षेत्र में नगरपरिषद आयुक्त धर्मपाल जाट को नोडल अधिकारी नियुक्त किया हैं।

अभियान में 133 आरोपी गिरफ्तार

टोंक। जिला पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में चलाये गये वांछित अपराधियों की गिरफ्तारी एवं एरिया डॉमिनेन्स के संबंध में एक दिवसीय विशेष अभियान के तहत अति. पुलिस अधीक्षक बृजेन्द्र सिंह भाटी व अति. पुलिस अधीक्षक मालपुरा, मोटाराम बेनिवाल के नेतृत्व एवं वृताधिकारियों के सुपरविजन में थानाधिकारीयों द्वारा विशेष टीमें ने विभिन्न स्थानों पर दबिश और धरपकड की कार्यवाही करे हुए 200 लीटर अवैध शराब जप्त तथा 2800 लीटर स्प्रीट वास नष्ट की गई है। अभियान के दौरान जुआं खेलते हुए आरोपियों से 9770 रूपये नगद राशि जप्त कर 16 व्यक्ति गिरफ्तार किये गये तथा अभियान में विभिन्न प्रकरणो में 133 आरोपी गिरफ्तार किये गये है। यह अभियान अभी और जारी रखा जायेगा। इस अभियान के बाद बदमाशों में खलबनी बनी हुई है। अभियान के दौरान सामन्य प्रकरणों में वांछित 37 व जघन्य अपराधों में वांछित 24 तथा बीएनएसएस में 16 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया हैं।

कला मंडल की बैठक, बौली में रामलीला का मंचन 21 सितंबर से

बौंली- बामनवास में श्री राम कला मंडल सभा भवन बैठक सदस्यों एवं पदाधिकारी की मौजूदगी में हुई।

बौंली- बामनवास । शिव बगीची रामलीला मैदान के श्री राम कला मंडल सभा भवन बौंली नगर में श्री राम कला मंडल के सभी सदस्यों एवं पदाधिकारी की एक बैठक आयोजित की गई। बैठक में 21 सितंबर को शिव बगीची रामलीला मैदान में रामलीला का मंचन प्रारंभ करने का निर्णय लिया। मंडल प्रवक्ता प्रेमराज सैनी ने बताया कि

■ रामलीला मंचन का रिहर्सल पूर्व अभ्यास 10 अगस्त से प्रारंभ होगा, जिसमें सभी सदस्यों की उपस्थिति अनिवार्य है।

बैठक मंडल अध्यक्ष दिनेशपुरी की अध्यक्षता में आयोजित की गई, जिसमें श्रद्धा ओम त्रिवेदी, वरिष्ठ सदस्य कोषाध्यक्ष गोपाल शर्मा, सूबेदार मोहन सिंह राव, अधिवक्ता राघवेश शर्मा, जिला शिक्षा अधिकारी योगेश शर्मा, गिर्राज बुदेंला, बबलू सैनी, आशुतोष पाठक एवं नरेंद्र दाधीच सहित अन्य सदस्य गण उपस्थित थे। इस दौरान सर्वसम्मति से सभी सदस्यों एवं पदाधिकारी ने पूर्व अध्यक्ष को इस वर्ष अपना कार्यकाल पूरा करने का सुझाव दिया, एवं सभी सदस्यों ने आपसी सहमति से 21 सितंबर को शिव बगीची रामलीला मैदान में रामलीला का मंचन प्रारंभ करने का निर्णय लिया। रामलीला मंचन का रिहर्सल पूर्व अभ्यास 10 अगस्त से प्रारंभ होगा, जिसमें सभी सदस्यों की उपस्थिति अनिवार्य है।

खैरथल-तिजारा जिले में 15 अगस्त तक होगा 'हर घर तिरंगा अभियान'

खैरथल। जिला कलेक्टर किशोर कुमार के निर्देशानुसार स्वतंत्रता दिवस की वर्षगांठ के अवसर पर जिले में 5 अगस्त से 15 अगस्त 2025 तक 'हर घर तिरंगा अभियान' का आयोजन किया जाएगा। यह अभियान तीन चरणों में चलेगा, जिसमें जनप्रतिनिधियों, विद्यालयों, महाविद्यालयों, सामाजिक संगठनों और आमजन की सहभागिता सुनिश्चित की जाएगी। जिला कलेक्टर ने कार्यक्रम के सफल संचालन हेतु सहायक निदेशक पर्यटन विभाग को अभियान का नोडल अधिकारी नियुक्त किया। अभियान के तहत जिले में विभिन्न सांस्कृतिक एवं जनसहभागिता वाले कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। 5 अगस्त को तिरंगा राखी

■ तीन चरणों में चलेगा अभियान, सहायक निदेशक पर्यटन विभाग को अभियान का नोडल अधिकारी नियुक्त किया

कार्यक्रम का आयोजन होगा, जिसमें जनप्रतिनिधियों, सैनिकों और पुलिसकर्मियों को राखी बांधी जाएगी। 6 अगस्त को जिले के समस्त विद्यालयों में स्कूलों की दीवारों पर तिरंगे की चित्रकारी की जाएगी। 7 अगस्त को तिरंगा रंगोली कार्यक्रम आयोजित होगा, जिसमें विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं सार्वजनिक स्थानों पर रंगोलियां बनाई जाएंगी तथा प्रसिद्ध एवं स्थानीय कलाकारों द्वारा तिरंगा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होगा। 8 अगस्त को तिरंगा राखी बनाने की कार्यशालाएँ और प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाएंगी । इसके उपरांत 11 अगस्त तक तिरंगा महोत्सव के तहत स्वयं सहायता समूहों द्वारा तिरंगा थीम पर आधारित स्थानीय उत्पादों की प्रदर्शनी और बिक्री की जाएगी और तिरंगा बाइक रैली निकाली जाएगी। इस दौरान शहरी एवं ठामीण क्षेत्रों में तिरंगा सजावट, तिरंगा वस्तुओं की बिक्री और बच्चों व युवाओं की व्यापक भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी। 13 अगस्त को जिले के सरकारी भवनों, शैक्षिणक संस्थानों, कार्यालयों, बांधों और पुलों पर ध्वजारोहण होगा। 9 से 14 अगस्त तक जिले में तिरंगा सेल्फी पॉइंट बनाए जाएंगे और फोटो को निर्धारित वेबसाइट पर अपलोड किया जाएगा। 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस समारोह में चयनित व्यक्तियों को सम्मानित किया जाएगा। इसके सफल आयोजन को लेकर जिला प्रशासन ने सभी संबंधित विभागों, पंचायतों और शैक्षिणक संस्थानों से सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं, ताकि जिले में हर घर तिरंगा अभियान को सफलतापूर्वक संपन्न कराया जा सके।

भामाशाह का सम्मान

पावटा। फतेहपुरा खुर्द ठाम पंचायत में स्थित राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय रूपपुरा में भामाशाह सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान संस्था प्रधान जय प्रकाश वर्मा ने आगुंतक मेहमानों का साफा माला पहनाकर स्वागत किया इस अवसर पर एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक शाखा पावटा एवं कृष्ण सिंह शेखावत निवासी फतेहपुरा खुर्द की तरफ से विद्यालय में अध्यनरत विद्यार्थियों को स्कूल बेग का वितरण किया गया। शाखा प्रबंधक देवेंद्र सक्सेना ने विद्यार्थियों को प्रेरणादायक बातें बताई तथा मार्गदर्शन प्रदान किया। इस अवसर पर बनवारी लाल तथा विद्यालय स्टाफ लालचंद मीणा, शमीम बानो, अंशु कुमारी, सरोज देवी, प्रिया यादव तथा आंगनबाड़ी स्टाफ सरोज यादव एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

गोरख धंधा शब्द पर प्रतिबंध लगाने की मांग

कोटपूतली। नाथ समाज के लोगों ने ''गोरख धंधा'' शब्द पर प्रतिबंध लगाने की मांग को लेकर सोमवार को जिला कलेक्ट्रेट कार्यालय पर प्रदर्शन कर प्रदेश के मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा के नाम जिला कलक्टर प्रियंका गोस्वामी को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में बताया कि गुरु गोरख नाथ एक महान योगी थे और ''गोरख धंधा'' शब्द उनकी साधनाओं की जटिलता और रहस्यमयता को दर्शाता हैं। यह शब्द उन कार्यों या स्थितियों को संदर्भित करता हैं जो आसानी से समझ में नहीं आते या जो आध्यात्मिक और योग से जुड़ी हुई हैं। लेकिन दुर्भाग्यवश आज चाहे राजनेता हो, जनप्रतिनिधि हो या फिर अन्य कोई भी इस रहस्यमई

■ नाथ समाज के लोगों ने जिला कलेक्टर को सौंपा ज्ञापन

''गोरख धंधा'' शब्द का उपयोग अक्सर अनैतिक, नकारात्मक, मिलावट, धोखाधड़ी, छल-कपट, चोरी-छिपे भ्रष्ट कामों या किसी भी तरह के बुरे कामों के लिये करता है जो अनुचित ही नहीं घोर निंदनीय है। ''गोरख धंधा'' शब्द का इस प्रकार गलत व अनैतिक कार्यो के लिये इस्तेमाल कर गुरु गोरख नाथ के अनुयायियों व नाथ सम्प्रदाय का अपमान व तिरस्कार करते हैं। इन लोगों के इस कृत्य से नाथ सम्प्रदाय में भारी आक्रोश है। इसके विरोध में समय-समय पर विरोध प्रदर्शन एवं ज्ञापन भी दिये गये तथा ''गोरख धंधा'' शब्द के अनैतिक कार्यों के लिये इस्तेमाल पर रोक लगाने का आग्रह भी किया गया। लेकिन राजस्थान में अभी तक ना तो रोक ही लग सकी और ना ही इस और ध्यान दिया गया। जबकि हरियाणा सरकार ने वर्ष 2021 में ''गोरख धंधा'' शब्द के इस्तेमाल पर प्रतिबंध लगा दिया था, क्योंकि इसका इस्तेमाल आम तौर पर अनैतिक प्रथाओं का वर्णन करने के लिये किया जाता था।

15 अगस्त की बाजारों में सजावट शुरु

अलवर। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी स्वतंत्रता गौरव उत्सव समिति के तत्वाधान में 15 अगस्त की शाम 7:00 बजे शहीद स्मारक अलवर में रंगारंग देशभक्ति थीम पर कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इसी क्रम में कार्यक्रम का आमंत्रण अलवर सांसद व केन्द्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव को समिति सदस्यों द्वारा कार्यक्रम में उपस्थित होने के लिए निमन्त्रण दिया। इस दौरान समिति की तरफ से अजीत सोनी व ललित मिश्रा ने बताया कि अलवर सहित देश भर में समिति के आव्हान पर देश भर में आयोजित किया जाता है।

समिति अध्यक्ष गौरीशंकर ने बताया कि गत 9 वर्षों से अलवर जिले में सहित देश भर में 15 अगस्त की शाम दीप उत्सव कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है , जिसका उद्देश्य देश की आजादी में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले स्वतंत्रता सेनानी अमर शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि व देश की बार्डर पर खड़े भारतीय सेना के जवानों का मनोबल बढाना है। समिति सदस्य गौरव शर्मा ने बताया कि देश के विभिन्न जगहों में भी समिति की अपील पर आजादी की शाम दीपोत्सव कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। उन्होंने बताया कि शहर के प्रमुख गणमान्य लोग समिति में शामिल हैं। जिनके द्वारा सामूहिक रूप से कार्यक्रम को लेकर लगभग एक महीना पहले से तैयारी प्रारंभ कर दी जाती है । जिसके तहत देश के शीर्षस्थ पदों पर बैठे लोगों को पत्राचार और ईमेल के माध्यम से कार्यक्रम से जुडने की अपील की जाती है, इसके अतिरिक्त अलवर सहित राजस्थान के प्रमुख लोगों को भी समिति के द्वारा निवेदन किया जाता है ,जिसमें प्रमुख राजनीतिक दलों के नेता सांसद विधायक उद्योगपति व अन्य प्रतिष्ठित लोग शामिल होते हैं।

उन्होंने बताया कि समिति के लिए द्वारा कार्यक्रम स्थल अलवर शहीद स्मारक को भव्य तरीके से सजाया जाएगा वहीं शहर के प्रमुख बाजारों में तिरंगे व गुब्बारों से सजावट की जा रही है। 15 अगस्त की शाम 6:00 बजे से कार्यक्रम प्रारंभ होगा,

इस दिन पुलिस बैंड के द्वारा भव्य देशभक्ति दोनों की प्रस्तुति दी जाएगी, व आर्केस्ट्रा के द्वारा देशभक्ति रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाएगा । इसके अतिरिक्त कई अन्य निजी संस्थाओं द्वारा बच्चों के लिए विभिन्न उपहार प्रदान किए जाएंगे, साथ ही कार्यक्रम स्थल पर सेना की विशेष टुकड़ी उपस्थित रहेगी । जिनके साथ रक्षाबंधन पर्व मनाया जाएगा। शाम 7:00 बजे कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों द्वाराशहीद स्मारक पर हजारों दीपकों से श्रद्धांजलि अर्पण की जाएगी। इस दौरान शहर की अनेकों निजी संस्थाओं द्वारा शहीदों के सम्मान में कार्यक्रम स्थल तक तिरंगा रैली का मार्च भी किया जाएगा। कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए समिति संरक्षक सदस्य डॉ वी के अग्रवाल के नेतृत्व में सुभाष अठावाल, मुकेश विजय,संजय बवेजा, प्रकाश चंद्र गुप्ता, संदीप गुप्ता,मक्खन सिंह गुर्जर मानवेंद्र सिंह उर्फ मोनू, सत्य प्रकाश शर्मा ,मनीष शर्मा, मोहित पंडित, मनोज अठावाल, मुकेश विजय, मनोज कुमार गुप्ता, प्रदीप पंचोली, विजय खंडेलवाल , दिनेश शर्मा निरंतर कार्य कर रहे हैं।

कांग्रेस संगठनात्मक ढांचे को मजबूती प्रदान करने का आह्वान

सांभर में कार्यकर्ताओं की सभा को संबोधित करते विधायक विद्याधर चौधरी।

सांभरझील,(,निसं)। यहां भूतेश्वर बगीची के सामने स्थित गार्डन पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं की एक अहम बैठक का आयोजन हुआ। बेठक का मूल उद्देश्य एक दूसरे के प्रति गिला शिकवा दूर करन, लंबे समय से व्याप्त कथित दूरी को कम करना, आगामी नगरपालिका चुनाव को ध्यान में रखते हुए संगठनत्मक ढांचे को मजबूती प्रदान करना, कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारी तय करना आदि को लेकर क्षेत्रीय विधायक विद्याधर सिंह चौधरी की मौजूदगी में सभा हुई। सर्वप्रथम सभी वरिष्ठ कार्यकर्ताओं ने चौधरी का माल्यार्पण व साफा बांधकर उनका राजस्थानी परंपरा के अनुसार जोरदार अभिनंदन किया। रोली और चावल का तिलक किया गया।

■ वरिष्ठ कार्यकर्ताओं ने चौधरी का माल्यार्पण व साफा बांधकर जोरदार अभिनंदन किया।

इस अवसर पर विद्याधर सिंह चौधरी ने कहा कि मेरे स्वर्गीय पिताजी जो कि सांसद और फुलेरा विधानसभा क्षेत्र के विधायक भी रहे हैं उनके अनुभव के आधार पर बता रहा हूं और मेरा भी मानना है कि मनमुटाव से नहीं बल्कि मेल मिलाप से ही पार्टी मजबूत होगी तो कांठोस का हाथ मजबूत होगा और मेरे को मजबूती जब ही मिल सकती है जब मेरा प्रत्येक कार्यकर्ता समर्पण की भावना के साथ अपने कार्य को अंजाम देगा। यद्यिप सभा में दो-तीन कार्यकर्ताओं ने संगठन में बदलाव के मामले को लेकर अपने मन का गुबार निकाला लेकिन विधायक की नसीहत और पार्टी गाइडलाइन के अनुसार काम करने की सलाह पर सभी ने संगठन में अपनी आस्था को फिर से पुनर्स्थापित करते हुए विधायक को एक स्वर में एक साथ मिलकर काम करने का भरोसा दिलाया। विधायक चौधरी ने सभी कार्यकर्ताओं का उनका हार्दिक अभिनंदन करने के लिए तहे दिल से शुक्रिया कर उन्हें पुनः पार्टी की एकजुटता बनाए रखने पर जोर देते हुए अपनी अपनी जिम्मेदारी निभाने की नेक सलाह भी दी।

शारीरिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों को लेकर जिम्मेदारी सौंपी

फुलेरा । नगर पालिका सभागार में सोमवार प्रातः 11:30 बजे अधिशाषी अधिकारी सूर्यकांत शर्मा की अध्यक्षता में आगामी स्वतंत्रता दिवस समारोह की तैयारियों को लेकर एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में क्षेत्र की राजकीय एवं निजी विद्यालयों के संचालकों व प्रतिनिधियों के साथ विस्तृत चर्चा की गई। अधिशाषी अधिकारी सूर्यकांत शर्मा ने बताया कि स्वतंत्रता दिवस समारोह को भव्य व गरिमामय बनाने के लिए शारीरिक व्यायाम, पी.टी., परेड तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की तैयारी सुनिश्चित की जाएगी। इन कार्यक्रमों की जिम्मेदारी विभिन्न विद्यालय के प्रतिनिधियों को सौंपी गई। शारीरिक व्यायाम व पी.टी. परेड का अभ्यास 6 अगस्त से स्कूल खेल मैदान में प्रारम्भ होगा। वहीं निजी शिक्षण संस्थाओं के सामूहिक सांस्कृतिक कार्यक्रम की तैयारी पालिका सभागार में करवाई जाएगी। बैठक में उपस्थित सभी विद्यालय प्रतिनिधियों को समारोह के दौरान समयबद्धता और अनुशासन का पालन करने हेतु निर्देशित किया गया। सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में देशभक्ति गीत, नृत्य, तथा नाटक आदि का समावेश करने पर भी चर्चा हुई। बैठक में पालिका कर्मी नरेन्द कुमार, राकेश कुमार, ऋषि बोयत, बालिका विद्यालय की प्राचार्या नविता कुमारी वर्मा, मुकेश सोनी, रमेश कुमार सरावता, दिलीप सुरोलिया, शैलेन्द्र शर्मा, विनोद कुमार प्रजापति, सुनील वर्मा, योगेन्द्र गहलोत, राकेश शर्मा, महेश तारवान, संतोष बिजारणियां, बंशीधर वर्मा आदि मौजूद रहे।

पिकनिक मनाने गये युवक का शव गहरे पानी में मिला

युवक के शव को टीम ने गहरे पानी से निकाला।

■ नाथ समाज के लोगों ने जिला कलेक्टर को सौंपा ज्ञापन

टोंक। बरोनी थाना क्षेत्र स्थित बनास नदी में डूबे मध्यप्रदेश के युवक का शव सोमवार को एसडीआरएफ टीम ने गहरे पानी से निकाला। रविवार को मध्यप्रदेश, गिन्नौर निवासी अजय पुत्र मुकेश वाल्मीकी उम्र 20 साल जो रविवार को जयपुर-कोटा नेशनल हाईवे-52 के पास स्थित वैष्णो देवी मंदिर के पीछे बह रही बनास नदी में डूब गया, जिसे सूचना पर पंहुची एसडीआरएफ टीम ने तलाश प्रारम्भ कर सोमवार सुबह नदी के गहरे पानी में उसका शव बाहर निकाला और पुलिस को सुपुर्द कर दिया। बरोनी थाना प्रभारी बृजेंद्र सिंह ने बताया युवक अजय जयपुर में साथियाके साथ सफाई का कार्य करता था, जो अपने 3 से 4 दोस्तों के साथ रविवार को बाइक से पिकनिक मनाने बनास नदी में आया था। जो बनास नदी में नहाते हुए गहरे पानी में चला गया और सन्तुलन बिगडने से पानी में डूब गया। बाद में सूचना पर पंहुची पुलिस ने मौके पर सिविल डिफेंस व एसडीआरएफ टीम को बुलाया। जहां टीम ने तलाश प्रारम्भ कर रविवार को देर तक तलाश की लेकिन युवक का कोई भी पता नही लगा, जिसे सोमवार को सुबह 7 बजे गहरे पानी में तलाश करने पर शव मिला, जिसे टीम ने पुलिस को सुपुर्द कर दिया।

चोटिल तेज गेंदबाज क्रिस वोक्स कंधे की चोट के बावजूद ओवल टेस्ट के आखिरी दिन बल्लेबाजी के लिए उपलब्ध हैं।
- जो रूट

इंग्लैंड के ऑलराउंडर, क्रिस वोक्स के बारे में बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी ▶ **सूर्यकुमार यादव**

भारतीय टी-20 टीम के कप्तान सूर्यकुमार यादव सर्जरी के बाद एशिया कप से पहले पूरी तरह फिट होने के लिए इस समय राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) में है। सूर्यकुमार यादव ने हाल ही में पुनर्वास और फिटनेस आकलन के लिए बेंगलुरु स्थित भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) के सेंटर में रिपोर्ट की थी। पूरी तरह फिट न होने के कारण उन्हें पश्चिम क्षेत्र के चयनकर्ताओं ने दलीप ट्रॉफी के लिए 15 सदस्यीय टीम से बाहर रखा। ऐसा माना जा रहा है कि सूर्यकुमार ने उन्हें सूचित कर दिया था कि उन्होंने सीओई जांच करा ली है।

क्या आप जानते हैं ?... टेस्ट में रनों के लिहाज से भारत की सबसे कम अंतर से जीत, पहली बार विदेशी सीरीज में जीता पांचवां मैच।

भारत ने इंग्लैंड को छह रनों से हराकर बनाये कई रिकॉर्ड

सिराज का पंजा, भारत ने 2-2 से बराबर की सीरीज

लंदन, 4 अगस्त। भारत ने सोमवार को पांचवें टेस्ट मैच में इंग्लैंड को छह रनों से हराकर कई रिकार्ड बनाये। ओवल में यह छह रनों की टेस्ट में भारत की सबसे छोटी जीत है। इससे पहले भारत ने 2004 में मुंबई में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 107 रनों का बचाव करते हुए 13 रन से मैच जीता था। यह छह रन की हार इंग्लैंड की टेस्ट में तीसरी संयुक्त सबसे छोटी हार भी है। पांचवां विकेट गिरने के बाद इंग्लैंड का स्कोर 332 रन था । इससे पहले केवल एक बार ऐसा हुआ है कि किसी टीम ने पहले पांच साझेदारियों में इतने रन बनाए हों और फिर भी हार गई हो। 1977 में इंग्लैंड 463 रन के लक्ष्य में 346/5 पर था, लेकिन 45 रन से हार गया।

मोहम्मद सिराज और प्रसिद्ध कृष्णा टेस्ट में दोनों पारियों में चार या उससे अधिक विकेट लेने वाली भारत की दूसरी जोड़ी बने। इससे पहले 1969 में दिल्ली में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ बिशन सिंह बेदी और एरापल्ली प्रसन्ना ने यह उपब्धिक हासिल थी। ओवल में सिराज और प्रसिद्ध का प्रदर्शन किसी टीम के लिए दोनों पारियों में दो गेंदबाजो के चार-चार विकेट लेने का 15वां उदाहरण है। पिछली बार इंग्लैंड के लिए 2012-13 में मुंबई में मोंटी पनेसर और ग्रेम स्वान ने ऐसा किया था। भारतीय कप्तान शुभमन गिल को पूरी सीरीज में उनकी शानदार बल्लेबाजी के लिए 'प्लेयर ऑफ द सीरीज' और मोहम्मद सिराज को आखिरी मैच में नौ विकेट लेने के लिए 'प्लेयर ऑफ द मैच' नवाजा गया। इस सीरीज में मोहम्मद सिराज ने इंग्लैंड के खिलाफ 23 विकेट लिए जो कि टेस्ट सीरीज में इंग्लैंड में किसी भारतीय गेंदबाज के लिए संयुक्त रूप से सर्वाधिक हैं। उन्होंने जसप्रीत बुमराह की 2021-22 की 23 विकेटों की बराबरी की। भारत की ओर से मोहम्मद सिराज ने 30.1 ओवर में 104 रन देकर पांच विकेट लिये। जबकि प्रसिद्ध कृष्णा ने 27 ओवर में 126 रन देकर चार विकेट झटके। आकाश दीप ने एक बल्लेबाज को आउट किया। जो रूट और हैरी ब्रूक के बीच चौथी पारी हार के बावजूद यह 195 रनों की साझेदारी, दूसरी सबसे बड़ी साझेदारी रही। इससे बड़ी साझेदारी 204 रनों की थी, केएल राहुल और ऋषभ पंत के बीच, 2018 में ओवल में ही हुई थी। रूट और ब्रूक ऐसे सातवें बल्लेबाजी जोड़ी बने जिन्होंने चौथी पारी में शतक लगाए और फिर भी हार का सामना किया। इससे पहले ऐसा आखिरी बार राहुल और पंत ने 2018 में किया था।

यह लगातार चौथी टेस्ट सीरीज हैं जिसमें इंग्लैंड भारत के खिलाफ सीरीज नहीं जीत पाया। आखिरी बार उन्होंने भारत को 2018 में 4-1 से हराया था। भारत के खिलाफ इंग्लैंड की सबसे लंबी बिना सीरीज जीत की लकीर 1996 से 2011 के बीच पांच सीरीज की रही है। विदेशी धरती पर किसी टेस्ट सीरीज के पांचवें या छठे मैच में भारत का जीत-हार का रिकॉर्ड 1-10 का है। ओवल में छह रन की जीत से पहले भारत ने ऐसे 17 में से 10 मैच हारे थे, जबकि सात ड्रॉ रहे। घरेलू मैदान पर कुल 27 मैचों में भारत का ऐसे टेस्ट में रिकॉर्ड 7-4 है।

सुबह मैं कर सकता हूं कि स्क्रीन शॉट का वॉलपेपर लगाया : सिराज

लंदन, 4 अगस्त। भारत के तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज ने कहा कि सुबह उठने के बाद मैंने सोचा कि मैं कर सकता हूं, मैंने गूगल से एक स्क्रीनशॉट लिया और उसे वॉलपेपर लगाया। इंग्लैड पर छह रनों की रोमांचकारी जारी के बाद मोहम्मद सिराज ने संवाददाता सम्मेलन में कहा कि हर किसी ने कड़ी मेहनत की और हम अंत तक मिलकर लड़े। मेरी एक ही योजना थी कि मैं निरंतरता के साथ सही लेंथ हिट करते रहूं। प्लेयर ऑफ द मैच सिराज ने कहा कि सुबह उठने के बाद मैंने सोचा कि मैं कर सकता हूं, मैंने गूगल से एक स्क्रीनशॉट लिया और उसे वॉलपेपर लगाया। ब्रूक का विकेट गेम चेंजिंग मोमेंट था, अगर मैंने वो कैच ले लिया होता तो मैच शायद इस स्थिति में पहुंचता नहीं है। ब्रूक ने बेहतरीन पारी खेली। लॉर्ड्स में आउट होने दिल तोड़ने जैसा पल था, जडेजा भाई ने मुझे यही कहा था कि मैं खेलते रहूं और अपने पिता के बारे में सोचते रहूं कि उन्होंने यहां तक मुझे पहुंचाने के लिए कितनी मेहनत की थी।

हमें पता था कि इंग्लैंड के खेमे में दबाव है : गिल

लंदन, 4 अगस्त। भारतीय टीम के कप्तान शुभमन गिल ने कहा कि हमें पता था कि इंग्लैंड के खेमे में दबाव है और हम इसी सोच के साथ मैदान में आये कि उन पर दबाव बनाये रखना है। मैच के बाद संवाददाता सम्मेलन में शुभमन गिल ने कहा इस सीरीज में दोनों टीमों ने बढ़िया प्रदर्शन किया हर मैच अंतिम दिन तक पहुंचा जो कि दोनों टीमों के प्रदर्शन के बारे में बताता है। प्लेयर ऑफ द सीरीज से सम्मानित गिल ने कहा कि सिराज और प्रसिद्ध जैसे गेंदबाज़ जब गेंदबाजी कर रहे होते हैं तो बतौर कप्तान अधिक चिंता करने की जरूरत नहीं होती। दोनों गेंदबाज जानते हैं कि गेंद को कैसे हरकर कराना है। हमें पता था कि इंग्लैंड के खेमे में दबाव है और हम इसी सोच के साथ आए थे कि उनके ऊपर से दबाव कम नहीं होने देना है। उन्होंने कहा कि इस प्रदर्शन से मैं बेहद खुश हूं और इस सीरीज से पहले मैंने बेहद मेहनत की थी।

किन सुरक्षा मानकों पर सीटिंग अरेंजमेंट खरा उतरने पर अनुमति दी गई ?

जयपुर, 4 अगस्त। सवाई मानसिंह स्टेडियम के साउथ ब्लॉक में 400 सीटों की क्षमता बढ़ाने को लेकर चले निर्माण कार्य को लेकर बीसीसीआई वेन्यू ऑपरेशन टीम , राजस्थान रॉयल्स के राजीव खन्ना और खेल विभाग के खेल सचिव नीरज के. पवन ने पूरे स्टेडियम का दौरा किया था ओर 13 अप्रैल को होने वाले जयपुर के पहले मैच की तैयारियों का जायजा लिया था। नीरज पवन के अनुसार निर्माण कार्य युद्धस्तर पर अपनी मंज़िल की ओर बढ़ा ओर दिन रात काम करवाया गया था। एमएनआईटी के द्वारा सुरक्षा मानकों को नज़र अंदाज़ नही किया गया। अगर कोई दुर्घटना हो भी जाती है तो जिसको ये काम सौंपा गया है वो जिम्मेदार होगा। अगर साउथ ब्लॉक में सीटिंग अरेंगमेंट में आखिरी पल में भी किसी की जान का जोखिम नज़र आया तो सीटिंग की अनुमति नही दी जाएगी।

यह है साउथ पवेलियन का मामला

इंडियन प्रीमियर लीग के मुकाबले के दौरान राजस्थान रॉयल्स ने सवाई मानसिंह स्टेडियम के रिनोवेशन के लिए 9 करोड़ 85 लाख खर्च किए थे। इसमें लगभग 2 से 3 करोड़ रुपए का खर्चा साउथ ब्लॉक को फिर से तैयार करने के लिए किया गया था। 11 अप्रैल को ये पूरा हुआ था। रिनोवेशन के लिए जो राशि राजस्थान रॉयल्स ने खर्च की थी। खेल परिषद द्वारा उसका भुगतान राजस्थान रॉयल्स को किया जा चुका है। लेकिन स्टेडियम में साउथ ब्लॉक पहली बारिश ही नहीं झेल पाया है। जिससे सरकार के करोड़ों रुपए बर्बाद हो गए है। ग्राउंड फ्लोर पर बने हॉल और दोनों ड्रेसिंग रूम में डक्टिंग के माध्यम से पानी फर्श पर भर रहा है। फर्स्ट फ्लोर पर बने हॉल की फॉल सीलिंग गिर चुकी है। उस पर लगी सभी लाइट्स लटक गई है। वुडन फ्लोरिंग भी पूरी तरह से खराब हो चुकी है। शेन वॉर्न गैलरी पर कैमरा पर्सन के लिए बने लोहे के स्ट्रक्चर पर पानी निकासी की कोई व्यवस्था नहीं है। शेन वॉर्न गैलरी का ड्रेनेज सही नहीं होने के कारण पानी का निकास व्यवस्थित नहीं है।

खेलमंत्री के एसएमएस स्टेडियम का नक्शा बदलकर नया स्वरूप दिये जाने पर पानी फिरता नजर आ रहा है

जयपुर, 4 अगस्त। खेल मंत्री राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने कहा था कि जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में दर्शकों के बैठने के लिए अलग अलग ब्लॉक में सीटिंग व्यवस्था को बढ़ाया जाएगा। क्रिकेट देखने के साथ साथ दर्शकों को बेहतर सुविधाएं मिल सके इसके लिए आने वाले वर्षों में सीटिंग कैपेसिटी डबल करने का प्रयास करेंगे। सवाई मानसिंह स्टेडियम के साउथ पवेलियन को रिनोवेट किया है। लगभग साढ़े 12 करोड़ रुपए की लागत से यह काम किया गया है। इससे वहां एक हजार लोगों के बैठने की सिटिंग कैपेसिटी भी डेवलप की गई है। जो काफी शानदार है। दो दशक पुरानी घास को भी बदल कर नई घास लगाई जाएगी। नाइट मैच के लिए भी अभी जोलाइट लगी है उसमें नई लाइट ओर लगाकर स्टेडियम को जगमग किया जाएगा। इसके साथ ही क्रिकेटर्स के लिए जो भी अत्याधुनिक सुविधाएं होनी चाहिए जिससे इंडियन प्रीमियर लीग के अगले साल होने वाले मुकाबलों से पहले स्टेडियम का एक नया स्वरूप निकलकर सामने आएगा।

अब काम की लीपापोती कर रही है राजस्थान रॉयल्स

जयपुर, 4 अगस्त। शेन वॉर्न गैलेरी में बनाए गए नए दर्शक स्टैंड में सीढ़ियों पर वाटर प्रूफिंग का कार्य अब करवाया जा रहा है जिससे बारिश का पानी पूरी बिल्डिंग में नीचे तक नहीं आ पाए जिससे पूरी बिल्डिंग को नुकसान ना हो। लेकिन साउथ पवेलियन की दीवारें अपनी बर्बादी की कहानी खुद तस्वीरों से बयां करती नजर आ रही है। ईंटों की चुनाई करके उसे वैसे ही छोड़ दिया गया है और तो और उसी ईंटों की दीवार पर लोहे की बड़ी एंगल को बिल्डिंग का वजन सहने के लिए बिना प्लास्टर किए ही लीपापोती कर दी गई। लोहे की प्लेट लगाकर छत डाल दी गई उसके नीचे कोई प्लास्टर नहीं किया गया। एसीसी के ब्लॉक लगा कर साउथ पवेलियन की दीवारें खड़ी कर दी गई थीं लेकिन पूरे साउथ पवेलियन की दीवारों पर प्लास्टर नहीं किया गया था जो साफ तौर पर दिखाई देती हैं। सिर्फ लकड़ी या प्लास्टिक के बोर्ड लगा कर चालू काम कर आईपीएल मैचों का आयोजन करवा दिया गया। ये तो गनीमत रही कि उस वक्त ऐसी बरसात नहीं हुई जैसी अभी हो रही है नहीं तो कोई भी हादसा हो सकता था। साउथ पवेलियन के काम को किस सुरक्षा प्रणाली ओर किस सुरक्षा मानकों के अनुसार एमएनआईटी द्वारा एनओसी दी गई। आने वाले समय में जयपुर में डोमेस्टिक टूर्नामेंट के अलावा प्राइवेट टूर्नामेंट आयोजित किये जाएंगे अगर ऐसी स्थिति में किसी टूर्नामेंट का आयोजन होता है तो खिलाड़ियों ओर उनके साथ आए मेहमानों, दर्शकों की जान मुश्किल में आ सकती है। कोई भी दुर्घटना साउथ पवेलियन में कभी भी होने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता। सिर्फ दुबारा से फोर्सिलिंग नए लगा कर साउथ पवेलियन की दीवारों की कमी को छुपाया नहीं जा सकता। अगर अभी भी इस साउथ पवेलियन के काम को सीरियसली नहीं लिया गया तो कभी भी किसी होने वाले हादसों से बचा नहीं जा सकता। राजस्थान रॉयल्स प्रबंधन द्वारा इस पूरे मामले में किस तरह की लापरवाही की जा रही है उनके खिलाफ सख्त से सख्त एक्शन लिया जाना चाहिए।

पैरा एथलीट सुनील कुमार साहू ने उपमुख्यमंत्री से की भेंट

पैरालंपिक की तैयारी को मिला समर्थन

जयपुर, 4 अगसत। आज जनसुनवाई के दौरान प्रदेश की उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी से देश के होनहार पैरा एथलीट सुनील कुमार साहू ने मुलाकात की। उन्होंने हाल ही में 7वीं इंडियन ओपन पैरा एथलेटिक्स इंटरनेशनल चैंपियनशिप में लॉन्ग जंप में सिल्वर मेडल जीतकर देश और प्रदेश का नाम रोशन किया है। सुनील कुमार साहू अब तक राष्ट्रीय स्तर पर 18 मेडल जीत चुके हैं, जिनमें 11 स्वर्ण पदक शामिल हैं। पिछले तीन वर्षों में छह बार राष्ट्रीय स्तर पर पदक जीतने वाले इस युवा एथलीट ने अब पैरा ओलंपिक की तैयारी शुरू कर दी है। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने उनकी उपलब्धियों पर उन्हें साधुवाद दिया और कहा कि, सुनील जैसे प्रतिबद्ध और प्रेरणादायक खिलाड़ी हमारे देश की असली शक्ति हैं। राज्य सरकार उनकी पैरालंपिक यात्रा में हर संभव सहयोग देगी। सुनील ने उपमुख्यमंत्री को अपनी यात्रा, संघर्ष और भविष्य की योजनाओं से अवगत कराया। उपमुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि उनकी प्रशिक्षण, सुविधाओं और आवश्यक संसाधनों के लिए हर स्तर पर सहायता सुनिश्चित की जाए। सुनील की यह उपलब्धि न केवल राजस्थान बल्कि पूरे भारत के लिए गर्व की बात है।

जिला एथलेटिक प्रतियोगिता 13 व 14 को एसएमएस स्टेडियम में

जयपुर, 4 अगस्त। जिला जूनियर एथलेटिक प्रतियोगिता 13 व 14 अगस्त 2025 को होना निश्चित हुआ है। प्रतियोगिता लड़के एवं लड़कियों के वर्ग में संपन्न होगी। प्रतियोगिता 14, 16,18,20 वर्ष के आयु वर्ग के लड़के व लड़कियों में संपन्न होगी। इच्छुक प्रतियोगी आयोजन सचिव अशोक धाकड़ को मोबाइल नंबर 9694504397 पर अपनी प्रविष्टि दे देवें। चयनित एथलीट राज्य एथलेटिक्स प्रतियोगिता में जो की 27 से 28 अगस्त 2025 को लड़कों की एवं 29 व 30 अगस्त को लड़कियों की प्रतियोगिता बीकानेर में संपन्न होगी उसमें भाग लेंगे। प्रतियोगिता सुबह 13 को एसएमएस स्टेडियम जयपुर के एथलेटिक ट्रैक पर सुबह 7 बजे चालू होगी।

एचसीएल इंडिया टूर स्क्वैश : महिला वर्ग में भारत की 8 खिलाड़ी अंतिम 16 में

भारत के अयान, आर्यवीर, ओम और संदेश पुरुष वर्ग के प्री-क्वार्टर में पहुंचे

जयपुर, 4 अगस्त। भारत के अयान वजीरअली, आर्यवीर दीवान, ओम सेमवाल और संदेश पीआर ने सोमवार को यहां सवाई मानसिंह स्टेडियम कोर्ट्स पर शुरू हुए एचसीएल इंडिया टूर स्क्वैश टूर्नामेंट के पहले दिन अपने मुकाबले जीत पुरुष वर्ग के प्री क्वार्टर फाइनल में प्रवेश कर लिया। महिला वर्ग में भी भारतीय खिलाड़ियों ने पहले राउण्ड में जीत दर्ज करते हुए अंतिम 16 के राउण्ड में जगह बना ली।

भारत के अयान वजीर अली ने पहले दौर के मुकाबले में इंडिया के ही मोहित भट्ट को 11-7, 11-6, 9-11, 6-2 (रिटायर) से पराजित किया। पुरुष वर्ग के अन्य मुकाबलों में आर्यवीर दीवान ने यूसुफ एलशेरिफ (मिस्त्र) को 12-21, 8-11, 11-9, 11-9 से और संदेश रवि कुमार ने मलेशिया के ताय जुन कुआन को 11-6, 11-6, 13-11 से पराजित किया। भारत के ओम सेमवाल को मिस्त्र के मारवान तमीर के खिलाफ वाकओवर मिल गया। भारत के राहुल बैथा को मिस्त्र के सैफ रेफाय के खिलाफ 7-11, 6-11, 11-8, 1-6 (रिटायर) हार का सामना करना पड़ा।

महिला वर्ग में भी भारत की 8 खिलाड़ियों ने अपने पहले दौर के मुकाबले जीत अंतिम 16 के ड्रॉ में जगह बना ली। पहले दौर के मुकाबले में 6-1 के स्कोर पर सानवी बतर के रिटायर होने पर महक तलाती को प्री क्वार्टर में जगह मिल गई। पहले राउण्ड से अन्य मैचों में सुनीता पटेल ने राजस्थान की छवि सारण को 11-9, 11-5, 8-11, 11-4 से, पूजा आरती रघु ने आराधना कस्तूरी राज को 11-2, 11-5, 11-3 से, ईशा श्रीवास्तव ने कोरिया की यूजिन शिन को 11-6, 11-4, 11-4 से, रथिका एस सीलन ने सान्या वत्स को 7-11, 12-10, 7-11, 11-3, 16-14 से, अनिका दुबे ने तनिष्का जैन को 11-9, 7-11, 11-8, 10-12, 16-14 से, उन्नित त्रिपाठी ने मिस्त्र की मोना तमेर को 11-8, 11-5, 1-11, 11-5 से हरा प्री क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया।

स्क्वैश रैकेट फेडरेशन ऑफ इंडिया की उपाध्यक्ष सुरभि मिश्रा के अनुसार पुरुष और महिला दोनों वर्गों में 32-32 के ड्रॉ में टॉप-8 रैंकिंग प्लेयर्स को पहले दौर में बाय के साथ सीधे प्री क्वार्टर फाइनल में जगह मिल गई।

दिलीप सिंह करेंगे म्यांमार में भारतीय महिला अंडर-20 टीम के प्रतिनिधि मंडल की अगुवाई

जयपुर, 4 अगस्त। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ ने राजस्थान फुटबॉल संघ के सचिव दिलीप सिंह शेखावत को आगामी एशियाई फुटबॉल चैंपियनशिप अंडर-20 - महिला एशिया कप 2026 क्वालीफायर के लिए भारत की अंडर-20 टीम का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रतिनिधिमंडल का प्रमुख नियुक्त किया है। यह टूर्नामेंट 4 से 11 अगस्त 2025 तक म्यांमार के यंगून में आयोजित होगा।

राजस्थान फुटबाल संघ के पदाधिकारी ओर जयपुर जिला फुटबॉल संचालन समिति के सदस्य अब्दुल जब्बार, हितेश शर्मा, मनोज शर्मा, डॉ दिलीप सिंह चुंडावत और सेबी फिलिप्स ने राजस्थान फुटबाल संघ के सचिव दिलीप सिंह शेखावत को अंतर्राष्ट्रीय पटल पर मिली इस विशेष जिम्मेदारी को सफलतापूर्वक निभाने के लिए शुभकामनाएं प्रेषित की है। संचालन समिति के वरिष्ठ सदस्य अब्दुल जब्बार ने बताया कि इतिहास में पहली बार राजस्थान फुटबाल संघ के किसी पदाधिकारी को एशिया कप के प्रतिनिधिमंडल के प्रमुख की जिम्मेदारी मिली है और इसका श्रेय राजस्थान फुटबाल संघ के द्वारा विगत कुछ वर्षों में सफलतापूर्वक अखिल भारतीय फुटबाल महासंघ के कार्यक्रमों को आयोजित करने के कारण बने विश्वास और राजस्थान फुटबाल संघ के सचिव दिलीप सिंह शेखावत की कुशल प्रशासनिक कौशल के कारण संभव हो पाया है। भारतीय टीम को ग्रुप डी में रखा गया है जिसका सामना 6 अगस्त को इंडोनेशिया, 8 अगस्त को तुर्कमेनिस्तान और 10 अगस्त को मेजबान म्यांमार से होगा।

मैं अपनी टीम के प्रदर्शन से खुश हूं : स्टोक्स

लंदन, 4 अगस्त। इंग्लैंड टीम के कप्तान बेन स्टोक्स ने कहा कि मैं अपनी टीम के प्रदर्शन से खुश हूं। भारत के छह रन से मैच जीतने पर बेन स्टोक्स ने कहा कि गेम ना खेल पाना कठिन है। दोनों ही टीमों ने इस सीरीज में अच्छा प्रदर्शन किया और अपनी पूरी ऊर्जा के साथ खेला। इस सीरीज का हिस्सा रहना गर्व का हिस्सा रहा और मैं अपनी टीम के प्रदर्शन से खुश हूं। (वोक्स को बल्लेबाजी के लिए भेजने पर) यह दर्शाता है कि इन खिलाड़ियों के लिए देश के लिए खेलना कितना मायने रखता है। उन्होंने कहा कि इंग्लैंड और भारत की सीरीज हमेशा एक बड़ी सीरीज होती है और कई बार भावनाएं खुलकर सामने आ जाती हैं। हर कोई अपने देश का प्रतिनिधित्व करने आता है। जब आप मैच की शुरुआत में एक गेंदबाज कम हो जाते हैं तो अन्य गेंदबाजो के ऊपर अतिरिक्त जिम्मेदारी आ जाती है।

गिल भारतीय टेस्ट टीम को नई ऊंचाईयों पर ले जाएंगे : के.एल. राहुल

लंदन, 4 अगस्त। भारतीय टीम के सीनियर बल्लेबाज केएल राहुल ने कप्तान शुभमन गिल की तारीफ करते हुए कहा है कि शुभमन अद्भुत रहे हैं। उन्होंने वाकई आगे बढ़कर नेतृत्व किया है। उन्होंने खिलाड़ियों के साथ वाकई कड़ी मेहनत की है। वह रणनीतिक रूप से वाकई अच्छे रहे हैं। उन्होंने जो भी बदलाव किए हैं, उनसे हमें हमेशा किसी न किसी तरह विकेट मिले हैं। वह आगे भी निखरेंगे। वह एक लीडर के रूप में बने रहेंगे और इस भारतीय टेस्ट टीम को नई ऊंचाइयों पर ले जाएंगे। टेस्ट क्रिकेट और सीरीज ड्रॉ पर प्रसारक से बातचीत करते हुए राहुल ने कहा, यह (टेस्ट क्रिकेट) मेरे लिए बहुत मायने रखता है। मैंने कुछ समय तक क्रिकेट खेला है।

अमित असावा बीसीसीआई के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस द्वारा शिक्षण संकाय के रूप में नामित

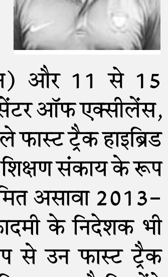

जयपुर, 4 अगस्त। राजस्थान के एकमात्र बीसीसीआई-मान्यता प्राप्त लेवल 3 कोच अमित असावा को भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस द्वारा 4 से 7 अगस्त 2025 (ऑनलाइन) और 11 से 15 अगस्त (ऑन-साइट) तक सेंटर ऑफ एक्सीलेंस, बैंगलोर में आयोजित होने वाले फास्ट ट्रैक हाइब्रिड लेवल 2 कोच कोर्स के लिए शिक्षण संकाय के रूप में नियुक्त किया गया है। अमित असावा 2013-14 के दौरान आरसीए अकादमी के निदेशक भी रहे हैं। यह कोर्स विशेष रूप से उन फास्ट ट्रैक क्रिकेटरों के लिए डिज़ाइन किया गया है जिन्होंने 75 से अधिक प्रथम श्रेणी मैच खेले हैं। कुछ नाम हैं - प्रशांत चोपड़ा (एचपीसीए), शेल्डन जैक्सन (सौराष्ट्र), बी. अपराजित (टीएनसीए), अंकित राजपूत (यूपीसीए), विजय शंकर (टीएनसीए), अशोक मेनारिया (आरसीए), सुश्री पूनम यादव (आरएसपीबी) इस पाठ्यक्रम में भाग लेंगे।

आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक व टीम आज करेगी निर्माणधीन चौंप स्टेडियम का दौरा

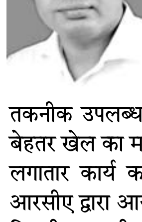

जयपुर, 4 अगस्त। राजस्थान क्रिकेट संघ के नवगठित आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक डी डी कुमावत अपनी टीम के साथ कल दिनांक 5 अगस्त को जयपुर के चौंप में निर्माणाधीन आरसीए के अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम का दौरा करेगी। आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक डी डी कुमावत व उनकी टीम चौंप में निर्माणाधीन आरसीए के अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम के अभी तक के निर्माण का निरीक्षण व समीक्षा करेगी।

आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक डी डी कुमावतने कहा की जब से एडहॉक कमेटी का गठन हुआ है उनका व सभी सदस्यों का पूरा प्रयास रहा है की राज्य के युवा खिलाडियों के लिए हर स्तर पर उचित खेल का वातावरण व सहायता उपलब्ध कराई जाये जिससे उन्हें आगामी घरेलू क्रिकेट सत्र में न केवल खेलने का मौका मिले साथ ही उन्हें उच्च स्तरीय विकेट , मैदान व प्रशिक्षित मैच ऑफिशल्स उपलब्ध हो सके।

संयोजक के अनुसार राज्य के मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा के विजन राज्य में खेल व खिलाडियों के उच्चस्तरीय विकास की राह से न केवल सभी अवरोधों को दूर करना साथ जी युवा खिलाडियों को सभी संभव विकसित तकनीक उपलब्ध कराने के साथ राज्य में बेहतर खेल का माहौल बने की कड़ी में हम लगातार कार्य कर रहे हैं। उनके अनुसार आरसीए द्वारा आयोजित किये जाने वाले 2 दिवसीय आरसीए एम्पायर व स्कोरर (पुरुष व महिला) फ्रेशर सेमिनार हेतु बीसीसीआई पैनल के अंपायर व स्कोरर को फैकल्टी बनाया गया है जिससे इस सेमिनार में भाग लेने वाले राज्य के सभी अंपायर व स्कोरर को न केवल उनके द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त होगा साथ ही उनके अनुभव का फायदा भी मिलेगा।

आ्रसीए अंपायर व स्कोरर रिफ्रेशर सेमीनार का उद्घाटन आज

आज सुबह 10 :30 बजे होटल क्लार्क आमेर में किया जायेगा। उद्घाटन समारोह के दौरान आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक डी डी कुमावत व सदस्य मौजूद रहेंगे। आरसीए अंपायर व स्कोरर रिफ्रेशर सेमिनार हेतु बीसीसीआई अंपायर फैकल्टी -अनिल चौधरी, तपन शर्मा, गजानंद वशिष्ठ, राजीव गोदारा, कमलेश शर्मा। स्कोरर फेकल्टी :- मनोज भटनागर, ओ पी शर्मा, दीपक शर्मा, तपेश कौशिक। संयोजक के अनुसार आरसीए द्वारा आयोजित होने वाले अंपायर व स्कोरर फ्रेशर सेमिनार से मैच ऑफिशियल को न केवल लाभ मिलेगा साथ ही उन्हें खेल के दौरान आने वाली सभी परिस्थितियों में किस प्रकार धैर्य, संयम व एकाग्रचित होकर क्या निर्णय लेना से जिस से खेल व खिलाडी का भविष्य उज्जवल हो व खेल को किसी भी प्रकार से कोई हानि न पहुंचे उस निर्णय को लेने में आसानी होगी।

मुख्यमंत्री भजनलाल ने सवाई माधोपुर, करौली, धौलपुर जिलों का हवाई सर्वेक्षण किया

उन्होंने चकचैनपुरा, मण्डरायल व बिश्नोदा में अतिवृष्टि प्रभावित लोगों से संवाद किया

जयपुर, 4 अगस्त। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को सवाई माधोपुर, करौली और धौलपुर जिलों में जलभराव व अतिवृष्टि प्रभावित क्षेत्रों का हवाई सर्वेक्षण कर स्थिति का जायजा लिया। उन्होंने सवाई माधोपुर जिले के चकचैनपुरा, करौली जिले के मण्डरायल एवं धौलपुर जिले के बिश्नोदा में प्रभावित लोगों से संवाद कर उनकी समस्याएं सुनीं तथा संबंधित अधिकारियों को आपदा राहत कार्य मुस्तैदी से करने के निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने सवाई माधोपुर जिले के भारी बारिश से प्रभावित गांवों का हवाई सर्वेक्षण कर अतिवृष्टि से हुए जलभराव और नुकसान का जायजा लिया।

मुख्यमंत्री ने भारी बारिश एवं जलभराव से प्रभावित लोगों से संवाद करते हुए कहा कि जिला कलेक्टर, स्थानीय जनप्रतिनिधियों एवं प्रशासनिक अधिकारियों से नियमित रूप से बैठक कर फीडबैक लिया जा रहा है। शर्मा ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि स्कूल, आंगनबाड़ी, अस्पताल और सड़कों की मरम्मत के कार्य प्राथमिकता से पूरे करवाए जाएं। फसल खराबे की भरपाई हेतु गिरदावरी की कार्यवाही शीघ्र पूरी की जाए।

■ **मुख्यमंत्री ने कहा कि बाढ़ की स्थिति से निपटने के लिए एसडीआरएफ की दो टीमें राजाखेड़ा तथा एक-एक टीम धौलपुर व सरमथुरा उपखंड क्षेत्रों में तैनात की गई हैं।**

उल्लेखनीय है कि प्रदेश के अतिवृष्टि एवं जलभराव वाले क्षेत्रों में सिविल डिफेंस एवं आपदा राहत बलों की टीमें निरंतर कार्य कर रही हैं। धौलपुर जिले में बाढ़ की स्थिति से निपटने के लिए एवं राहत बचाव कार्य हेतु एसडीआरएफ की 2 टीमें राजाखेड़ा एवं 1-1 टीम धौलपुर व सरमथुरा उपखण्ड क्षेत्रों में तैनात की गई हैं। एनडीआरएफ की एक टीम धौलपुर मुख्यालय पर तैनात है। सेना का एक दल भी राहत और बचाव कार्यों के लिए धौलपुर बुलाया जा चुका है। इन क्षेत्रों के प्रभावित गांवों में से 2700 से अधिक लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को सवाई माधोपुर, करौली और धौलपुर जिलों में जलभराव व अतिवृष्टि प्रभावित क्षेत्रों का हवाई दौरा कर स्थिति का जायजा लिया।

इस दौरान आपदा प्रबंधन, सहायता एवं नागरिक सुरक्षा मंत्री डॉ. किरोड़ी लाल मीणा, सहकारिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) गौतम कुमार दक, गृह राज्य मंत्री जवाहर सिंह बेढ़म, विधायक जितेन्द्र गोठवाल, दर्शन सिंह गुर्जर, हंसराज मीणा, जसवंत सिंह गुर्जर मौजूद थे।

राज्यसभा ने शिबू सोरेन को श्रद्धांजलि दी

नयी दिल्ली, 04 अगस्त। राज्यसभा ने सोमवार को अपने मौजूदा सदस्य और झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन के निधन पर शोक व्यक्त किया और उन्हें श्रद्धांजलि देने के बाद सदन की कार्यवाही दिन भर के लिए स्थगित कर दी गयी।

उप सभापति हरिवंश ने सदस्यों को बताया कि उन्हें बड़े दुख के साथ सदस्यों को यह सूचित करना पड़ रहा है कि सदन के मौजूदा सदस्य शिबू सोरेन का आज निधन हो गया। उन्होंने कहा कि सोरेन जाने-माने सामाजिक तथा विशिष्ट आदिवासी नेता थे। आम लोगों में उन्हें दिशोम गुरूजी के नाम से जाना जाता था। उपसभापति ने कहा कि सोरेन ने अलग झारखंड राज्य के गठन से संबंधित आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी और तीन बार राज्य के मुख्यमंत्री रहे।

■ **श्रद्धांजलि के बाद सदन की कार्यवाही दिन भर के लिए स्थगित कर दी गई।**

उन्होंने कहा कि सोरेन के निधन से देश ने एक अनुभवी सांसद और आदिवासी अधिकारों के पैरोकार को खो दिया।

विपक्षी दलों के हंगामे के कारण नहीं चली लोकसभा

स्पीकर ओम बिड़ला ने पहले दो बजे तक और फिर दिन भर के लिए लोकसभा स्थगित की

नयी दिल्ली, 04 अगस्त। लोकसभा में सोमवार को बिहार में मतदाता सूची विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) प्रक्रिया वापस लेने की मांग को लेकर विपक्षी दलों के हंगामे के कारण सदन की कार्यवाही दिनभर के लिए स्थगित कर दी गयी।

एक बार स्थगन के बाद दो बजे सभापति जगदंबिका पाल ने सदन की कार्यवाही जैसे शुरु की विपक्षी सदस्य नारेबाजी करते हुए सदन के बींचोबीच आ गये। सदस्यों ने एसआईआर वापस लेने को लेकर नारे लगाते रहे। सभापति ने शोरशराबे के बीच ही जरूरी कागजात सभा पटल पर रखवाये और सदस्यों से अपने स्थान पर जाने का आग्रह किया।

इससे पहले अध्यक्ष ओम बिड़ला ने पूर्वाह्न 11 बजे जैसे ही प्रश्नकाल शुरू कराया, विपक्षी दलों के सदस्य शोरगुल करते हुए सदन के बीचों-बीच आ गये। कुछ सदस्य तख्तियां भी लिए हुए थे, जिन पर एसआईआर के विरोध में नारे लिखे थे।शोरशराबे के बीच ही बिड़ला ने प्रश्न पूछने के लिए एक सदस्य का नाम पुकारा और केन्द्रीय श्रम एवं रोजगार मंत्री ने उसका जवाब भी दिया। इस दौरान सदस्य हंगामा करते रहे। बिरला ने शोरशराबा कर रहे सदस्यों से अपने-अपने स्थानों पर जाने और कार्यवाही चलने देने का आग्रह किया। बिड़ला ने कहा कि वह फिर सदस्यों से आग्रह करते हैं कि वे अपने-अपने स्थानों पर जायें और सदन की कार्यवाही चलने दें। पर विपक्षी सांसद हंगामा करते रहे। इस पर अध्यक्ष ने सदन की कार्यवाही अपराह्न दो बजे तक और फिर दिनभर के लिए स्थगित कर दी।

■ **विपक्षी सांसद बिहार में मतदाता सूचियों के पुनरीक्षण पर हंगामा कर रहे थे। स्पीकर ने उनसे बार-बार आग्रह किया, सदन में नियमानुसार काम होने दें, पर विपक्षी सांसदों ने उनकी एक नहीं सुनी।**

झारखंड के पूर्व ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मिलकर अपनी संवेदनाएं व्यक्त कीं।

प्रधानमंत्री ने सोरेन के पुत्र और झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से मिलने के बाद, सोशल मीडिया पोस्ट में कहा कि दुख की इस घड़ी में सोरेन के परिजनों से मिलकर उनके प्रति संवेदना व्यक्त की।

मोदी ने पोस्ट में लिखा, झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। दुख की इस घड़ी में हेमंत जी, कल्पना जी और सोरेन के प्रशंसकों के प्रति मेरी संवेदनाएं। उनका पूरा जीवन जनजातीय समाज के कल्याण के लिए समर्पित रहा। इसके लिए वे सदैव याद किये जायेंगे।

■ **प्रधानमंत्री मोदी ने गंगाराम अस्पताल जाकर शिबु सोरेन को श्रद्धांजलि दी और आदिवासी समाज के हित में उनके द्वारा किए गए कार्यों को याद किया।**

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे तथा पार्टी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने भी सोमवार को यहां गंगा राम अस्पताल जाकर झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन के पार्थिव शरीर पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी।

'ओम बिड़ला के ओ.एस.डी...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

गई जानकारी पर विचार करते हुए और रिकॉर्ड का अवलोकन करने के उपरांत, यह निर्देश दिया जाता है कि याचिकाकर्ताओं के खिलाफ कोई भी दंडात्मक कार्रवाई, जिसमें गिरफ्तारी भी शामिल है, तब तक नहीं की जाएगी, जब तक वे चल रही जांच में पूर्ण सहयोग और भागीदारी सुनिश्चित करते हैं। यदि किसी प्रकार की कार्रवाई की आवश्यकता हो, तो उसके लिए पूर्व अनुमति इस न्यायालय से प्राप्त की जाए।''

न्यायालय ने यह भी कहा कि ''मामले की प्रकृति को देखते हुए, जिसमें एक ओर मानव तस्करी जैसे जघन्य अपराधों और दूसरी ओर अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम, 1989 के तहत आरोप शामिल हैं तथा अजमेर, पाली, कोटा और बूंदी में दर्ज कई एफआईआर और शिकायतों के मद्देनज़र, जांच को समग्र, निष्पक्ष, पारदर्शी और त्वरित ढंग से किया जाए। यह जाँच दिनेश एम.एन. की निगरानी और निर्देश में की जाएगी।

अदालत ने यह भी निर्देश दिया कि संबंधित ज़ीरो एफआईआर को उपयुक्त क्षेत्राधिकार वाले पुलिस थाने को स्थानांतरित कर पुन: कानून के अनुसार दर्ज किया जाए। इस बीच, याचिकाकर्ता ने प्रधानमंत्री कार्यालय को एक पत्र लिखा है, जिसमें बताया गया है कि कैसे उसके खिलाफ कई मामले दर्ज किए गए हैं और उसे धमकाया तथा प्रताड़ित किया जा रहा है।

■ **अदालत ने मामले की संवेदनशीलता को देखते हुए, मामले की विस्तृत कानूनी जाँच करने को कहा है और कहा है कि इस मामले की जाँच से जुड़ी प्रगति की रिपोर्ट राजस्थान पुलिस के डी.जी.पी. के साथ साझा की जाए। अदालत ने कहा, इस मामले की विस्तृत जाँच की रिपोर्ट आठ सप्ताह की भीतर अदालत में पेश की जाए।**

इस संवाददाता ने राजीव दत्ता से संपर्क कर इस पर प्रतिक्रिया और उनका पक्ष जानना चाहा तो उन्होंने संक्षिप्त रूप में कहा कि ''मामला विचाराधीन है।''

अमित शाह ने सदन की आंतरिक सुरक्षा पर हाई लेवल मीटिंग की

नई दिल्ली, 04 अगस्त। संसद भवन में सोमवार को गृह मंत्री अमित शाह ने आंतरिक सुरक्षा को लेकर हाई लेवल बैठक की। इस दौरान राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) अजित डोभाल, इंटेलिजेंस ब्यूरो (आईबी) डायरेक्टर तपन कुमार डेका, गृह सचिव गोविंद मोहन मौजूद रहे। इससे पहले संसद भवन में विदेश मंत्री एस जयशंकर ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की। वहीं, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा, केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल और केंद्रीय मंत्री किरण रिजिजू के साथ बैठक की। दिल्ली में ये बैठकें जम्मू-कश्मीर से आर्टिकल 370 हटने के 6 साल पूरे होने से एक दिन पहले हुई हैं।

■ **राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल, इन्टेलीजेंस ब्यूरो डायरेक्टर तपन कुमार डेका तथा ग्रह सचिव गोविन्द मोहन बैठक में शामिल थे।**

ममता बनर्जी ने अपने भतीजे को लोकसभा में पार्टी का नेता बनाया

कोलकाता/दिल्ली, 04 अगस्त। तृणमूल कांग्रेस ने संसद के मानसून सत्र के बीच बड़ा राजनीतिक कदम उठाते हुए पिछली तीन लोकसभा से पार्टी के सदन के नेता रहे सुदीप बंद्योपाध्याय को हटाकर पार्टी प्रमुख ममता बनर्जी के भतीजे अभिषेक बनर्जी को पार्टी का नया नेता नियुक्त किया है।

पार्टी ने इसके साथ ही लोकसभा में अपने मुख्य सचेतक कल्याण बनर्जी को भी हटा दिया है और उनकी जगह वरिष्ठ सांसद काकोली घोष दस्तीदार को पार्टी का नया मुख्य सचेतक नियुक्त किया है।

इस नियुक्ति के साथ ही पार्टी की तेज तर्रार नेता बनर्जी ने तत्काल मुख्य सचेतक पद से इस्तीफा दे दिया है।

■ **कल्याण बनर्जी को हटाकर काकोली घोष दस्तीदार को मुख्य सचेतक नियुक्त किया।**

तृणमूल कांग्रेस ने यह निर्णय पार्टी नेता ममता बनर्जी की अध्यक्षता में पार्टी के सांसदों की वर्चुअल बैठक के बाद लिया है। मानसून सत्र के कारण पार्टी के ज्यादातर सदस्य इस समय दिल्ली में मौजूद हैं इसलिए ममता बनर्जी को वर्चुअल बैठक लेनी पड़ी।

कुपवाड़ा में आतंकवादी ठिकाना पकड़ा गया

श्रीनगर , 04 अगस्त। सुरक्षा बलों ने सोमवार को जम्मू कश्मीर के कुपवाड़ा जिले में एक गुफा के अंदर आतंकवादी ठिकाने का भंडाफोड़ किया और 12 चीनी ग्रेनेड समेत, हथियारों तथा गोला-बारुद का बड़ा जखीरा बरामद किया। आधिकारिक प्रवक्ता के मुताबिक, कुपवाड़ा के कलारूस इलाके में सेना और पुलिस के तीन दिनों तक चले संयुक्त अभियान के बाद इस ठिकाने का भंडाफोड़ हुआ। अभियान में सुरक्षा बलों ने एक पथरीली गुफा का पता लगाया और वहां से 12 चीनी ग्रेनेड, गोला-बारुद से लैस चीनी पिस्तौल, केनवुड रेडियो सेट, उर्दू आईईडी मैनुअल और छड़ें बरामद कीं। उन्होंने बताया कि खुफिया जानकारी के अनुसार, आतंकवादियों को उनके पाकिस्तानी आकाओं ने आने वाले दिनों में पुलिस और अन्य सुरक्षा बलों को निशाना बनाने के लिए इनका इस्तेमाल करने का निर्देश दिया था।

'अभिव्यक्ति की ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कोई ठोस आधार है क्या? एक सच्चा भारतीय ऐसा नहीं कहेगा। जब सीमा पर तनाव है, तब क्या इस तरह के बयान दिए जाने चाहिए? आपके पास अनुच्छेद 19(1)(ए) के तहत अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है, इसका मतलब यह नहीं कि आप कुछ भी कह सकते हैं।'' राहुल गांधी की ओर से पेश हुए वरिष्ठ अधिवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी ने तर्क दिया कि ''इस तरह की टिप्पणी को लेकर किसी तीसरे पक्ष द्वारा मानहानि का मुकदमा नहीं दायर किया जा सकता। इस प्रकार का मानहानि का आरोप लगाकर किसी को परेशान नहीं किया जाना चाहिये। हाईकोर्ट का कहना है कि शिकायतकर्ता 'अपमानित तो हुए हैं, लेकिन प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित नहीं थे', जो कि कानूनी दृष्टि से सही नहीं है।'' सुप्रीम कोर्ट ने कार्यवाही पर स्टे देते हुये, राज्य सरकार को नोटिस जारी कर दिया। मामले की अगली सुनवाई तीन सप्ताह बाद होगी।

'रुस से तेल ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

घोषणा की है। इस संबंध में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा हस्ताक्षिरत आदेश में भारत पर 25 प्रतिशत अतिरिक्त आयात शुल्क लगाया गया है। साथ ही ट्रंप ने घोषणा की थी कि रूस से तेल खरीदने के लिए दंड के रूप में भारत पर और शुल्क लगाये जायेंगे, हालाँकि उक्त आदेश में इस संबंध में कुछ भी स्पष्ट नहीं किया गया था।

स्कूल इमारतों ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

हालातों को लेकर स्वप्रेरणा से प्रसंज्ञान लेते हुए संबंधित अधिकारियों से जवाब तलब किया था। हाईकोर्ट की खंडपीठ ने दोनों स्वप्रेरित प्रसंज्ञान पर जनहित याचिका के तौर पर एक साथ सुनवाई करना तय किया है।

ट्रंप की टैरिफ धमकी के जवाब...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कूटनीतिक, आर्थिक और अन्य, ताकि यूक्रेन में चल रहे युद्ध को समाप्त कर शांति लाई जा सके।''

पिछले हफ्ते ट्रंप ने पत्रकारों से कहा था कि उन्होंने ''सुना'' है कि भारत अब रूसी तेल नहीं खरीदेगा और इसे ''एक अच्छा कदम'' बताया। ब्लूमबर्ग ने रिपोर्ट किया था कि रिफाइनरियों को गैर-रूसी तेल खरीदने की योजना तैयार करने को कहा गया है, हालांकि एक सूत्र ने इसे केवल ''परिस्थिति आधारित योजना'' बताया।

''न्यूयॉर्क टाइम्स'' ने शनिवार को रिपोर्ट किया कि भारत, रूसी कच्चा तेल खरीदता रहेगा, भले ही ट्रंप प्रशासन प्रतिबंधों की धमकी दे। रिपोर्ट में दो वरिष्ठ भारतीय अधिकारियों के हवाले से यह बात कही गई, जिनके नाम उजागर नहीं किए गए।

ब्लूमबर्ग द्वारा संपर्क करने पर भारत के पैट्रोलियम मंत्रालय के प्रवक्ता ने ब्लूमबर्ग के सवाल पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।

भारत की रिफाइनरियों को यूरोपीय संघ और अमेरिका, दोनों ने निशाना बनाया है क्योंकि वे यूक्रेन युद्ध के दौरान मॉस्को को समर्थन देने के रूप में रूसी तेल खरीद रही हैं।

भारत अब रूसी समुद्री कच्चे तेल का दुनिया का सबसे बड़ा खरीदार बन गया है, जो पहले लगभग शून्य था और अब कुल आयात का लगभग एक-तिहाई है।

हालांकि चीन रूस का प्रमुख आर्थिक और कूटनीतिक साझेदार है, लेकिन ट्रंप के लिए दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था पर दबाव बनाना कठिन है, क्योंकि चीन के पास दुर्लभ-भूमि मैग्नेट्स हैं, जो अमेरिका की उच्च तकनीक वाली वस्तुओं के निर्माण आवश्यक हैं। अमेरिका और चीन ने हाल के महीनों में आपसी संबंधों को स्थिर करने के लिए वार्ताएं की हैं, हालांकि दोनों देशों ने इस साल की शुरुआत में एक-दूसरे की वस्तुओं पर 100 प्रतिशत से अधिक टैरिफ लगाए थे।

कश्मीर को फिर से राज्य ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कंवलजीत सिंह ढिल्लों ने सोशल मीडिया पर चिंता जताते हुए कहा, ''कश्मीर में शांति बहुत सी जानों की कीमत पर आई है। किसी भी फैसले में जल्दबाज़ी नहीं होनी चाहिये। सब कुछ ठीक होने दें।'' उनकी सोशल मीडिया पोस्ट को रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह भी फॉलो करते हैं। भू-राजनीतिक विश्लेषक आरती टिक्कू सिंह ने इन अटकलों पर चिन्ता जताई है कि कश्मीर और जम्मू, दो अलग-अलग राज्य बनाये जा सकते हैं। उन्होंने एक सोशल मीडिया पोस्ट में कहा, ''ऐसा कोई भी कदम विनाशकारी हो सकता है।'' इसके साथ ही, एक अन्य चर्चा यह भी है कि राज्य का दर्जा बहाल होने के बाद फिर से चुनाव कराए जा सकते हैं, क्योंकि पिछले चुनाव उस समय हुये थे जब यह क्षेत्र केन्द्र शासित था। खुद मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने जून में कहा था कि अगर राज्य का दर्जा मिलने के बाद विधानसभा भंग कर फिर से चुनाव कराए जाएं, तो उन्हें कोई आपत्ति नहीं होगी।

क्या बिहार चुनाव के ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

वरिष्ठ राजनीतिक विश्लेषक ने कहा, ''स्पष्ट है कि वे खुद को एक ऐसे क्षेत्रीय नेता के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं, जो जमीनी हकीकत पर ध्यान देता है और दिल्ली की बात को आंख मूंदकर नहीं मानता।''

आंध्र प्रदेश के किसान और मत्स्य समुदाय पहले ही बढ़ती लागत, निर्यात में रुकावटें और अनिश्चित जलवायु जैसी चुनौतियों से जूझ रहे हैं। ऐसे में अमेरिका की टैरिफ वृद्धि ने उनकी परेशानी और बढ़ा दी है। नायडू की त्वरित प्रतिक्रिया न केवल किसानों के हितों की रक्षा के लिए है, बल्कि खुद को एक क्रियाशील और संवेदनशील प्रशासक के रूप में प्रस्तुत करने की रणनीति भी है।

हालांकि नायडू और मोदी के बीच अभी तक कोई सीधे टकराव की स्थिति नहीं बनी है, लेकिन मुख्य मुद्दों पर बढ़ता मतभेद आने वाले दिनों में एन.डी.ए. के अंदर रिश्तों को और जटिल बना सकता है, खासकर ऐसे समय, जब 2025 की राजनीतिक गतिविधियाँ तेजी से आगे बढ़ रही हैं।

एक तरफ जहाँ बिहार चुनाव 2026 के आम चुनाव से पहले राष्ट्रीय स्तर पर गठबंधनों की दिशा तय कर सकते हैं, वहीं, अब सबकी निगाहें चंद्रबाबू नायडू पर हैं, जो एनडीए के सबसे अनुभवी और रणनीतिक नेताओं में से एक माने जाते हैं। देखना यह है कि वे अंततः किस दिशा में कदम बढ़ाते हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने भूपेश बघेल को हाईकोर्ट जाने को कहा

नयी दिल्ली, 04 अगस्त। उच्चतम न्यायालय ने 2160 करोड़ रुपए के कथित शराब घोटाला समेत, अन्य मामलों से जुड़े धन शोधन के आरोपों में घिरे छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और उनके बेटे चैतन्य बघेल को सोमवार को कोई राहत न देते हुए उनकी याचिका पर सुनवाई करने से इनकार कर दिया।

न्यायमूर्ति सूर्य कांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की पीठ ने पिता-पुत्र से कहा कि वे इस मामले में पहले उच्च न्यायालय या निचली अदालत के समक्ष राहत की गुहार लगा सकते हैं।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक:- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालय:-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय:-कुंम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालय:-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालय:-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय: एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908